माहनामा

(हिन्दी-माहनामा)

फ़ैज़ाने मदीना

अगस्त सिने 2021 ईसवी | Trial Edition-5

FAIZAN E MADINA

फ़रमाने अमीरे एहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ **:**

राहे ख़ुदा में दिया हुवा माल न कभी लुट सकता है, न घट सकता है, बल्कि येह हमेशा के लिए मेह़फ़ूज़ हो जाता है।

- करबला का पैग़ाम मुसलमानाने आ़लम के नाम 15
- दूसरों के वक़्त की क़द्र कीजिए 21
- वत़न से मह़ब्बत के तक़ाज़े 27
- ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की सादगी 39

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine

FAIZAN E MADINA (HINDI)

अगस्त सिने 2021 ईसवी | ट्रायल एडिशन-5

ब फ़ैज़ाने नज़र: सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम: आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ज़ेरे सरपरस्ती: शैख़े तरीक़त, अमीरे एहले सुन्नत हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دامت برکاتہم العالیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे एहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

मुनाजात / नात — 3

कुरआनो हदीस: हक़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का त़रीक़ा (क़िस्त़ 02) — 4

क़ाबिले रश्क दो चीज़ें — 7

नवाफ़िल व तिलावत की कसरत करने वाले बुज़ुर्गाने दीन — 9

फ़ैज़ाने अमीरे एहले सुन्नत: ईसाले सवाब का इन्कार करना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात — 11

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत: क्या हर अज़ान का जवाब देना लाज़िम है ? मअ़ दीगर सवालात — 13

मज़ामीन: करबला का पैग़ाम — 15

ईसाले सवाब — 16

बे साया मेह़बूब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم — 18

दूसरों के वक़्त की क़द्र कीजिए — 21

रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم का समझाने का अन्दाज़ — 23

तबसेरे — 25

वत़न से मह़ब्बत के तक़ाज़े — 27

इस्मे गिरामी "नबिय्युत्तौबह" और 17 इल्मी निकात — 29

फ़रिश्ते दुआ़ ए मग़्फ़िरत करते हैं — 32

ताजिरों के लिए

अह़कामे तिजारत — 33

पेशों के एतेबार से निस्बतें — 35

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

हज़रते फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की सादगी — 39

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए — 41

मुतफ़र्रिक़ (Mix): फूल क्यूं बनाते हैं ? — 43

ताज़ियत व इयादत — 44

मोजिज़ात और इन की अक़्साम — 46

बच्चों का माहनामा फ़ैज़ाने मदीना — 48

अच्छे आम (Mango) ख़राब कैसे हुवे ? — 49

बच्चों को सफ़ाई का आ़दी बनाइए — 51

इस्लामी बहनों का माहनामा फ़ैज़ाने मदीना: सादाते किराम की मह़ब्बत व ख़ैर ख़्वाही — 53

हज़रते उम्मे अ़तिय्या बिन्ते हारिस رضی اللہ عنہا — 54

शरई अह़काम की मन्नत का हुक्म — 55

बरसात के पानी से बीमारियों का इलाज

हज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार फ़रमाया : जब तुम में से कोई शख़्स शिफ़ा चाहे तो कुरआने अ़ज़ीम की कोई आयत रिकाबी में लिखे और बारिश के पानी से धोए और अपनी औ़रत से उस के मेहर में से एक दिरहम उस की खुशी से ले, उस का शहद ख़रीद कर पिए कि बेशक शिफ़ा है।

(مواہب لدنیہ، 3/48، فتاوی رضویہ، 23/155)

एक त़बीब का केहना है : मैं ने कई मरीज़ों को मुख़्तलिफ़ अमराज़ में शहद और बारिश का पानी दिया है इसे दीगर नुस्ख़ों से बढ़ कर नफ़्अ़ बख़्श पाया है।

(नेकी की दावत, स. 279)

बारिश के पानी से गुर्दों के अमराज़ का इलाज

गुर्दों की बीमारी के सबब पेशाब थोड़ा थोड़ा आता हो या **पेशाब में जलन** और **चुभन** होती हो और कोई दवा कारगर न होती हो तो बारिश के पानी पर बा वुज़ू हर बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ सूरए اَلَمْ نَشْرَحْ ग्यारह(11) बार पढ़ कर दम कर दीजिए और दिन में चार बार (सुब्ह़ नाश्ते से पेहले, ज़ोहर के वक़्त, अ़स्र के बाद और सोते वक़्त) तीन तीन घूंट वोह पानी पिएं। हर बार पीने से पेहले सात बार **दुरूदे इब्राहीम** पढ़ लीजिए। اِنْ شَآءَ اللہ गुर्दे की बीमारी और पेशाब की जलन वग़ैरा दूर हो जाएगी।

(बीमार आ़बिद, स. 32)

कमज़ोरी दूर करने का नुस्ख़ा

दो चम्मच चीनी (बेहतर है कि ब्राउन शूगर) और एक चम्मच सफ़ेद नमक, आधे किलो (लीटर) पानी में डाल कर उबाल लीजिए, ठन्डा हो जाने के बाद एक ग्लास पी लीजिए। जिस्म में होने वाली पानी की कमी और कमज़ोरी اِنْ شَآءَ اللہ दूर हो जाएगी। मरीज़ों की कमज़ोरी दूर करने के लिए भी येह पानी मुफ़ीद है। (मगर शूगर और हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ डॉक्टर के मश्वरे के मुताबिक़ अ़मल करें) (गर्मी से ह़िफ़ाज़त के मदनी फूल, स. 9)

नोट : हर इलाज अपने त़बीब के मश्वरे से कीजिए।

शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत का अ़ज़ीम रिसाला 40 रूह़ानी इलाज और तिब्बी इलाज आज ही मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **है :** मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिए नूर होगा । (فردوس الاخبار، 1/422، حدیث:3149)

मज़ारे मुबारक ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رضی اللہ عنہ

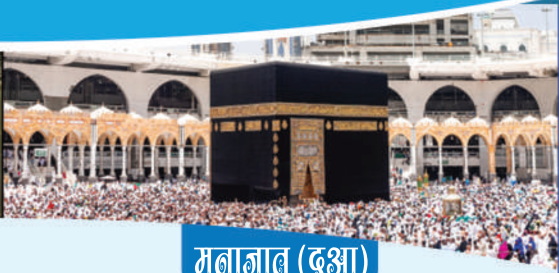

मनक़बत

शुजाअ़त नाज़ करती है जलालत नाज़ करती है
वोह सुल्ताने ज़मां हैं उन पे शौकत नाज़ करती है

शहे ख़ूबां पे हर ख़ूबी ओ ख़स्लत नाज़ करती है
करीम ऐसे हैं वोह उन पर करामत नाज़ करती है

जहाने हुस्न में भी कुछ निराली शान है उन की
नबी के गुल पे गुलज़ारों की ज़ीनत नाज़ करती है

शहनशाहे शहीदां हो अनोखी शान वाले हो
ह़ुसैन इब्ने अ़ली तुम पर शहादत नाज़ करती है

बिठा कर शानए अक़्दस पे कर दी शान दो बाली
नबी के लाडलों पर हर फ़ज़ीलत नाज़ करती है

निगाहे नाज़ से नक़्शा बदल देते हैं आ़लम का
अदा ए सरवरे ख़ूबां पे नुदरत नाज़ करती है

*ख़ुदा के फ़ज़्ल से **"अख़्तर"** मैं उन का नाम लेवा हूं*
मैं हूं क़िस्मत पे नाज़ां मुझ पे क़िस्मत नाज़ करती है

अज़ : ताजुश्शरीआ़ मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
सफ़ीनए बख़्शिश, स. 73

मुनाजात (दुआ़)

या ख़ुदा मेरी मग़फ़िरत फ़रमा
बाग़े फ़िरदौस मरह़मत फ़रमा

दीने इस्लाम पर मुझे या रब
इस्तेक़ामत तू मरह़मत फ़रमा

*तू गुनाहों को कर मुआ़फ़ **अल्लाह** !*
मेरी मक़्बूल माज़िरत फ़रमा

मुस्त़फ़ा का वसीला तौबा पर
तू इनायत मुदावमत फ़रमा

मौत ईमां पे दे मदीने में
और मह़मूद आ़क़िबत फ़रमा

मुश्किलों में मेरे ख़ुदा मेरी
हर क़दम पर मुआ़वनत फ़रमा

*हो न **"अ़त्तार"** ह़श्र में रुस्वा*
बे ह़िसाब इस की मग़फ़िरत फ़रमा

अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ
वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) स. 75

★ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी ★

फ़िरदौस : जन्नत । **मुदावमत :** हमेशगी, इस्तेक़ामत । **मेह़मूद :** क़ाबिले तारीफ़, अच्छी । **मुआ़वनत :** ह़िमायत, इमदाद । **शुजाअ़त :** बहादुरी । **जलालत :** बुज़ुर्गी, अ़ज़्मत । **नाज़ करना :** फ़ख़्र करना । **शौकत :** क़ुव्वत, शान । **शहे ख़ूबां, सरवरे ख़ूबां :** ह़सीनों के सरदार । **गुल :** फूल । **शानए अक़्दस :** मुबारक कन्धा । **दो बाली :** दुगनी (Double) । **आ़लम :** दुन्या । **नुदरत :** उ़म्दगी, कमयाबी ।

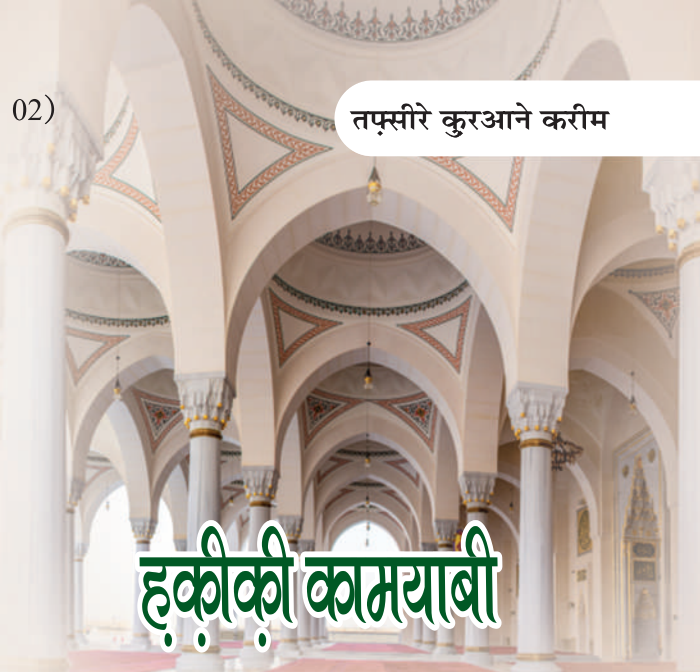

हक़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का त़रीक़ा

मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त़्त़ारी

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी) . . . . (क़िस्त़ : 02)

अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

﴿قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَۙ(۱) الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَۙ(۲) وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَۙ(۳) وَ الَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَۙ(۴) وَ الَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَۙ(۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ईमान वाले कामयाब हो गए, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ करने वाले हैं और वोह जो फ़ुज़ूल बात से मुंह फेरने वाले हैं और वोह जो ज़कात देने का काम करने वाले हैं और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (پ18، المؤمنون:1تا5)

तफ़्सीर : एहले ईमान फ़लाह़ पाने वाले हैं जिन के औसाफ़ में से एक वस्फ़ येह है कि वोह ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ अदा करते हैं।

ख़ुशूअ़ की दो क़िस्में हैं :

1 ज़ाहिरी ख़ुशूअ़ 2 बात़िनी ख़ुशूअ़

1 ज़ाहिरी ख़ुशूअ़ येह है कि दौराने नमाज़ नज़र सजदे की जगह से आगे न बढ़े, आंख के किनारे से दाएं बाएं न देखे, ह़त्ताकि आस्मान की त़रफ़ भी नज़र न उठाए, कोई बेकार काम न करे, जैसे बदन खुजाते रेहना या उंगलियां चटख़ाना वग़ैरा, बल्कि तमाम आज़ा साकिन रहें। इस के इलावा भी कसीर उमूर ज़ाहिरी ख़ुशूअ़ में दाख़िल हैं जो फ़िक़ह की किताबों में नमाज़ की सुन्नतों, आदाब और मकरूहात के उ़नवान से बयान किए जाते हैं।

2 बात़िनी ख़ुशूअ़ का माना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की शानो अ़ज़मत पेशे नज़र हो, ख़ुदा की बारगाह में ह़ाज़री का तसव्वुर हो, दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो, सिर्फ़ नमाज़ में दिल लगा हो।

ख़ुशूअ़ के दीनी और दुन्यावी एतेबार से बे शुमार फ़वाइद हैं।

दीनी लेह़ाज़ से येह फ़ाइदा है कि नमाज़ क़ाइम करने के हुक्म पर पूरी त़रह़ अ़मल होता है, रूह़ानी बरकतें मिलती हैं, नमाज़ क़बूल होती है, ख़ुशूअ़ वाली नमाज़ बुराइयों से रोकती है, गुनाहों की मुआ़फ़ी, दरजात की बुलन्दी और मारेफ़ते इलाही के ह़ुसूल का ज़रीआ़ बनती है, **ख़ुशूअ़** नमाज़ी को आ़बेदीन व सालेह़ीन के गिरोह में दाख़िल कर देता है। ऐसी नमाज़ की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस मुसलमान शख़्स पर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आ जाए और वोह उस नमाज़ का वुज़ू अच्छी त़रह़ करे फिर नमाज़ में अच्छी त़रह़ ख़ुशूअ़ और रुकूअ़ करे तो वोह नमाज़ उस के साबेक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है जब तक वोह कोई कबीरा गुनाह न करे और येह सिलसिला हमेशा जारी रहेगा। (مسلم، ص116، حدیث:543)

उम्मत की अफ़्ज़ल तरीन हस्तियों यानी सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इस ह़वाले से अ़मल मुलाह़ज़ा फ़रमाएं, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان नमाज़ पढ़ते तो वोह अपनी नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह रेहते, अपनी नज़रें सजदा करने की जगह पर रखते थे और उन्हें येह यक़ीन होता था कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें देख रहा है और वोह दाएं-बाएं तवज्जोह नहीं करते थे।

(در منثور، المؤمنون، تحت الآیۃ:2، 6/84)

इसी तरह एक अन्सारी सहाबी का वाक़िआ तो मशहूर है कि रात के वक़्त लश्करे इस्लाम के लिए पेहरा दे रहे थे और जागने की ख़ातिर नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी, मुशरिक आया और फ़ौरन ताड़ गया कि येह मुहाफ़िज़ और निगेहबान हैं, चुनान्चे उस ने तीन तीर मारे और तीनों तीर नमाज़ में मसरूफ़ अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म में पैवस्त हो गए लेकिन वोह इसी हालत में रुकूअ़ और सजदा करते रहे। (ابو داؤد، 1/99، حدیث:198 ملخصاً)

ख़ुशूअ़ के दुन्यावी फ़वाइद !

(1) ख़ुशूअ़ से मुराक़बे का फ़ाइदा मिलता है, जिस पर दुन्या में बड़ी रीसर्च (Research) हो रही है। (2) ज़ेहनी इन्तेशार और दबाव से नजात मिलती है। (3) ज़ेहनी सुकून हासिल होता है। (4) आसाबी तनाव कम होता है। (5) पुर सुकून नींद आती है। (6) हार्ट बीट (Heart Beat) यानी दिल की धड़कन और ब्लड प्रेशर (Blood Pressure) कन्ट्रोल में रेहता है। (7) तबीअ़त में ताज़गी पैदा होती है। (8) सोचने समझने की सलाहियत में इज़ाफ़ा होता है कि मुसलसल काम और ज़ेहनी दबाव सोचने की सलाहियत को मुतास्सिर (Disturb) करते हैं।

﴿وَالَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴾ **तर्जमा :** और वोह जो फ़ुज़ूल बात से मुंह फेरने वाले हैं।

इस आयते करीमा में मौजूद कलेमा **"लग़व"** की तफ़्सीर में अ़ल्लामा सावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं कि लग़व से मुराद हर ना पसन्दीदा या मुबाह क़ौलो फ़ेल है जिस का मुसलमान को दुन्या ओ आख़ेरत में कोई फ़ाइदा न हो, जैसे मज़ाक़-मस्ख़री, बेहूदा गुफ़्तगू, खेल-कूद, फ़ुज़ूल कामों में वक़्त ज़ाएअ़ करना, शेहवात पूरी करने में ही लगे रेहना वग़ैरहा वोह तमाम काम जिन से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया है। (صاوی، المؤمنون، تحت الآیۃ:3، 4/1356)

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से येह है कि वोह **लायानी** (फ़ालतू-बेकार) चीज़ छोड़ दे।

(ترمذی، 4/142، حدیث:2324)

फ़ुज़ूलियात तीन तरह की होती हैं, जिन का तअ़ल्लुक़ **ज़बान, अ़मल** और **दिल** से होता है और कामयाब साहिबे ईमान हर तरह की फ़ुज़ूलियात से बचता है।

1 ज़बान से मुतअ़ल्लिक़ा फ़ुज़ूलियात !

आज के ज़माने में ज़बान की फ़ुज़ूलियात बहुत ही बढ़ चुकी हैं। दिन रात, दुन्या जहान की बातें, सूई से ले कर हाथी तक और घर से ले कर आ़लमी मुआ़मलात तक पर बे मक़्सद व बे फ़ाइदा गुफ़्तगू लोगों की ज़बानों पर जारी है, इस तरह की अक्सर बातें फ़ुज़ूलियात ही में दाख़िल हैं। इन फ़ुज़ूलियात को सब से ज़्यादा बढ़ावा, अख़्बार, टी वी, सोश्यल मीडिया और हर ईंट के नीचे से बरामद होने वाले तजज़िया निगारों ने दिया है। फ़ुज़ूलियात की आ़दत पड़ जाए तो ज़बान की एहतियात (सावधानी) ख़त्म हो जाती है और ग़ीबत तो ऐसों के लिए गोया मामूलाते ज़िन्दगी में शामिल हो जाती है, हालांकि ग़ीबत कबीरा गुनाह है और ग़ीबत करने वाले की नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं, नीज़ लोगों की नज़र में उस की इ़ज़्ज़त भी ख़त्म हो जाती है कि दूसरों के सामने इन की ग़ीबत करेगा। यूंही फ़ुज़ूलियात के आ़दी से कोई बईद नहीं कि ज़बान की मामूली सी जुम्बिश से अपना ठिकाना जहन्नम बना ले या अपने आमाल बरबाद कर बैठे, जैसाकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक एक बन्दा अपनी ज़बान से एक बुरा कलेमा निकालता है और वोह इस की हक़ीक़त नहीं जानता तो **अल्लाह** पाक इस की बिना पर उस के लिए क़ियामत तक अपनी नाराज़ी लिख देता है। (ترمذی، 4/143، حدیث:2326 ملخصاً)

सहीह मुस्लिम में है कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बन्दा **अल्लाह** पाक की नाख़ुशी की बात बोलता है और इस (नाराज़ी) की तरफ़ ध्यान नहीं धरता यानी उस के ज़ेहन में येह बात नहीं होती कि **अल्लाह** पाक उस से इतना नाराज़ होगा कि इस कलिमे की वज्ह से बन्दा जहन्नम की इतनी गेहराई में गिरता है जो मशरिक़ो मग़रिब के फ़ासिले से भी ज़्यादा है।

(مسلم، ص 1219، حدیث:7482)

बुज़ुर्गाने दीन फ़ुज़ूल और बे मक़्सद गुफ़्तगू से बहुत इजतेनाब करते थे, चुनान्चे हज़रते हस्सान बिन अबी सिनान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में मरवी है कि आप एक बालाख़ाने के पास से गुज़रे तो उस के मालिक से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह बालाख़ाना बनाए तुम्हें कितना अ़र्सा

गुज़रा है ? येह सवाल करने के बाद सख़्त नदामत (शर्मिंदगी) हुई और नफ़्स को मुख़ातब करते हुवे यूं फ़रमाया : ऐ मग़रूर नफ़्स ! तू **फ़ुज़ूल** और **लायानी** (बेकार) सवालात में क़ीमती तरीन वक़्त को ज़ाएअ़ करता है ? फिर इस फ़ुज़ूल सवाल के कफ़्फ़ारे में आप ने एक साल (के) रोज़े रखे। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 65)

2 अ़मल से मुतअ़ल्लिक़ा फ़ुज़ूलियात !

(1) टी वी के दुन्यावी प्रोग्राम देखना (2) एक ख़बर दस बार सुनना (3) एक मौज़ूअ़ पर कई चेनल्ज़ के प्रोग्राम सुनना (4) सियासत (राजनीति) पर ला ह़ासिल (फ़ालतू) गुफ़्तगू (5) क्रिकेट मेचिज़ (Matches) देखना (6) फ़ेसबुक, ट्वीटर, इन्टरनेट सरफ़िंग (Internet Surfing) और सोश्यल एप्ज़ (Social Apps) के इस्तेमाल में त़वील (लम्बा) वक़्त गुज़ारना। आप मुन्सिफ़ाना अन्दाज़ में ख़ुद से सवाल करें कि क्या इन तमाम मसरूफ़ियात का आप की ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ है ? अक्सर का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। अगर कोई शख़्स चार घन्टे रोज़ाना इन **"ला ह़ासिल कामों"** पर ख़र्च करे तो साल के 1460 घन्टे ज़ाएअ़ करेगा और अगर इतने घन्टे ख़ुदा की रिज़ा या दुन्या की कामयाबी के लिए लगाए होते तो कहां से कहां पहुंच सकता है।

इन्ही चार घन्टों के आदाद व शुमार के एतेबार से चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा करें। (1) अगर आप एक घन्टे में बीस रक्अ़त नमाज़ पढ़ते तो चार घन्टों के एतेबार से एक साल में 29200 रक्अ़तें पढ़ लेते। (2) अगर एक घन्टे में एक हज़ार मरतबा दुरूद पढ़ते तो चार घन्टों के लेहाज़ से साल भर में चौदह लाख साठ हज़ार मरतबा (14,60,000) दुरूद शरीफ़ पढ़ पाते। (3) एक घन्टे में शरीअ़त के दो मस्अले सीखते तो चार घन्टे सीखने से साल में तीन हज़ार के क़रीब शरई मसाइल सीख लेते।

येह सारा ह़िसाब एक साल में चार घन्टे के लेहाज़ से है और अगर दस बीस तीस साल का ह़िसाब लगाएं तो नतीजा ख़ुद ही निकाल लें। अल ग़रज़ येह बात समझ लीजिए कि वक़्त को तीन त़रह़ से इस्तेमाल किया जा सकता है। (1) फ़ुज़ूल (2) कम फ़ाइदेमन्द (3) ज़्यादा फ़ाइदेमन्द। हर ज़ी शुऊर येह समझता है कि इन तीन त़रह़ के इस्तेमाल में से सब से बेहतर वोह इस्तेमाल है कि जिस के ज़रीए़ इन्सान ज़्यादा फ़वाइद ह़ासिल कर सके।

3 दिल का बेकार और फ़ुज़ूल इस्तेमाल !

दिल और ज़ेहन का फ़ुज़ूल इस्तेमाल येह है कि (1) ख़याली पुलाव पकाते रेहना, (2) दूसरों की तरक़्क़ी पर अपना दिल जलाते रेहना और हर वक़्त अपनी नाकामियों पर कुढ़ना, (3) दिल में गुनाह के मन्सूबे तैयार करना, (4) सिर्फ़ मन्सूबे बनाना और काम कुछ न करना जैसे एक शख़्स खाना बनाने के सौ त़रीक़े (Recipes) सीख ले और खाना एक भी न बनाए।

दिल और ज़ेहन के फ़ुज़ूल इस्तेमाल के नुक़्सानात !

(1) फ़ुज़ूल सोचों से ज़ेहन की मुफ़ीद और मुस्बत सोचने की सलाहि़यत कम हो जाती है। (2) फ़ुज़ूल सोचों की वज्ह से बे हिम्मती और काम चोरी की आ़दत पड़ जाती है। (3) ज़ेहनी सलाहि़यतें पूरी त़रह़ इस्तेमाल नहीं हो पाएंगी, जिस के नतीजे में मन्फ़ी सोच वाला शख़्स अपनी कामयाबी की बजाए दूसरों की नाकामी का सोचता रहेगा।

अल ग़रज़ **दुन्या ओ आख़ेरत में कामयाब वोही है जो फ़ुज़ूलियात से किनाराकशी कर के मुफ़ीद कामों में ख़ुद को मसरूफ़ कर ले। अल्लाह** तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (बक़िया तफ़्सीलात तीसरे हिस्से में)

तलफ़्फ़ुज़ (उच्चार) दुरुस्त कीजिए !

ग़लत तलफ़्फ़ुज़	सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़
तह़फुज़ / तह़फुज़ात	तह़फ़्फ़ुज़ / तह़फ़्फ़ुज़ात
ह़मायत	ह़िमायत
तर्यान्वे / तिरा-नवे	तिरान-वे
ख़ासह	ख़ास्सह
ख़रच	ख़र्च

(उर्दू लुग़त, जिल्द 5, 8)

मौलाना मुहम्मद नासिर जमाल अत्तारी मदनी

क़ाबिले रश्क दो चीज़ें

प्यारे आख़री नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا حَسَدَ اِلَّا فِی اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَسُلِّطَ عَلٰى هَلَكَتِهٖ فِی الْحَقِّ، وَ رَجُلٌ آتَاهُ اللّٰهُ الْحِكْمَةَ فَهُوَ يَقْضِی بِهَا وَيُعَلِّمُهَا यानी सिर्फ़ दो ख़ूबियों (के ह़ामिल) पर ह़सद (जाइज़) है : 1 वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** करीम ने माल अ़ता फ़रमाया और उसे राहे ह़क़ में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दी गई हो 2 वोह शख़्स पर जिसे **अल्लाह** पाक ने इ़ल्म दिया हो, पस वोह उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसले करता हो और उसे (दूसरों को) सिखाता हो ।[1] मज़्कूरा ह़दीसे पाक में दो नेमतों की तमन्ना को पसन्दीदा क़रार दिया गया है और **माली सदक़े** और **इ़ल्म की फ़ज़ीलत** बयान की गई है ।[2] बज़ाहिर इस ह़दीस से ऐसा मालूम होता है कि इन दो चीज़ों में ह़सद जाइज़ है जबकि ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं, ह़सद तो हर ह़ाल में बुरा और गुनाह है बल्कि यहां ह़सद से मुराद ग़िब्त़ा यानी रश्क है ।

अच्छी चीज़ों में रश्क करना जाइज़ बल्कि मोमिन की ख़ूबी है क्यूंकि इस का मत़लब है कि किसी के पास कोई नेमत देख कर उस के ह़ुसूल की तमन्ना करना और दूसरे से उस के ज़ाइल होने की ख़्वाहिश न करना । दुन्या की चीज़ें **अल्लाह** पाक की नाराज़ी का ज़रीआ़ बन जाती हैं लेहाज़ा वोह तो रश्क के क़ाबिल ही नहीं अलबत्ता राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाने वाला माल और इ़ल्मो ह़िक्मत **अल्लाह** पाक की ख़ुशनूदी का ज़रीआ़ हैं ।

ह़दीसे पाक में दो ख़ूबियां बयान की गई हैं :

1 **अल्लाह** पाक किसी को माल अ़त़ा फ़रमाए येह उस का फ़ज़्ल है, और उसे अपनी राह में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे येह उस का दूसरा फ़ज़्ल है । राहे ह़क़ में ख़र्च करने से मुराद हर उस काम में ख़र्च करना है जो शरीअ़ते मुत़हहरा के ख़िलाफ़ न हो । लेहाज़ा अगर कोई शख़्स वहां माल ख़र्च करे जहां ख़र्च नहीं करना चाहिए तो उस पर रश्क नहीं कर सकते और न ही वोह किसी फ़ज़ीलत का ह़क़दार है ।[3]

2 दूसरा वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** पाक ने इ़ल्मो ह़िक्मत से नवाज़ा वोह इस ह़िक्मत की रौशनी में फ़ैसले करता और उसे दूसरों तक पहुंचाता है, यहां ह़िक्मत से क़ुरआने पाक मुराद है या फिर हर वोह शै जो जहालत दूर करे और बुरे कामों से रोके ।[4]

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन दो ख़ूबियों पर तबसेरा करते हुवे फ़रमाते हैं : देख लीजिए कि मालदार सख़ी और आ़लिमे दीन की

ज़िन्दगी के सिवा किसी अमीर, वज़ीर या बादशाह की ज़िन्दगी को भी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ाबिले रश्क नहीं फ़रमाया है । लेहाज़ा पता चला कि उ़लमा ए दीन की मुक़द्दस ज़िन्दगी सारी दुन्या के लिए क़ाबिले रश्क है और जब उ़लमा ए किराम की ज़िन्दगी क़ाबिले रश्क ज़िन्दगी है तो फिर उ़लमा ए किराम के लिए एह़सासे कमतरी का कोई सवाल ही नहीं है । उ़लमा ए ह़क़ बिला शुबा ख़ुदा की ज़मीन पर चमकते हुवे चराग़े हिदायत हैं । ख़ुदावन्दे करीम ने उन को अपने ''ख़ैरे अ़ज़ीम'' के साथ नवाज़ा है इसी लिए ज़मीन पर दरिन्दे, चरिन्दे, परिन्दे, च्यूंटियां अपने बिलों में मछलियां दरियाओं में उन के लिए दुआ़ ए रेह़मत को अपना वज़ीफ़ा बनाए हुवे हैं । फ़रिश्तों की मुक़द्दस जमाअ़त उन शाइक़ीने इल्मे दीन की रिज़ाजोई के लिए अपने पर बिछा देती है । سبحان اللہ سبحان اللہ जब ख़ालिक़े काइनात का फ़ज़्लो करम और काइनाते आ़लम की दुआ़एं, मलाइका के बिछे हुवे पर, उ़लमा ए दीन का एज़ाज़ बढ़ा रहे हैं तो अगर चन्द मुर्दार क़िस्म के दुन्यादार लोग उ़लमा ए रब्बानिय्यीन को ह़क़ारत की नज़र से देखें तो उस का क्या ग़म है ! जो लोग आज उ़लमा ए किराम को ह़क़ारत की नज़र से देख रहे हैं येह वोही लोग हैं जिन्हों ने **अल्लाह** के मुक़द्दस रसूलों के फ़रमानों से मुंह मोड़ लिया है और दुन्या की दौलत पर मग़रूर हो कर और **अल्लाह** के नेक बन्दों की तेह़क़ीर व तज़्लील कर के अपनी आख़ेरत को ख़राब कर रहे हैं ।

उ़लमा ए ह़क़ को लाज़िम है कि उन मग़रूर व बद ख़िसाल जुहूह़ाल (यानी बदतरीन जाहिलों) की ईज़ा रसानियों पर सब्र करें और हरगिज़ हरगिज़ दिल शिकस्ता हो कर एलाए कलिमतुल ह़क़ (कलिमए ह़क़ बुलन्द करने) के मन्सबे जलील से अलग न हों । ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह हुक्म दिया है कि

﴿ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ۝۱۹۹ ﴾

यानी ऐ मेह़बूब ! आप लोगों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दें और नेकी का हुक्म देते रहें और जाहिलों से एराज़ करते रहें ।[5]

मज़्कूरा हदीस के तह़त चन्द फ़वाइद व मसाइल मुलाह़ज़ा कीजिए : ❶ ह़सद के ख़याल का अ़मली त़ौर पर इज़्हार ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।[6] ❷ फ़राइज़ो वाजिबात पर रश्क करना वाजिब, मुस्तह़ब कामों में रश्क करना मुस्तह़ब और मुबाह़ कामों में रश्क करना मुबाह़ है ।[7] ❸ किसी नेमत वाले से जलना और उस की नेमत का ज़वाल और अपने लिए ह़ुसूल चाहना ह़सद है । ह़सद बहुत बुरी सिफ़त है जबकि **अल्लाह** पाक की अ़त़ाकर्दा नेमतों पर रश्क करना एक अच्छी सिफ़त है लेकिन येह रश्क भी आला चीज़ों में होना चाहिए ❹ **अल्लाह** पाक की राह में ख़र्च करना और इल्मे दीन सीख कर इस की रौशनी में फ़ैसले करना और इस की नश्रो इशाअ़त करना बहुत बड़ी नेकी है । ❺ याद रखिए ! इस ह़दीसे पाक में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हरगिज़ ह़सद करने की इजाज़त नहीं दी और न ही यहां ह़सद का मज़्मूम माना मुराद है बल्कि यहां ह़सद से मुराद ग़िब्त़ा है लेहाज़ा ह़दीसे रसूल को समझने के लिए शारेह़ीने ह़दीस को पढ़ना ज़रूरी है वरना गुमराह हो जाने और भटक जाने का ख़त़रा है ।

मालदारों को चाहिए कि दीने इस्लाम की इशाअ़त, एहलो अ़याल की ख़िदमत, ह़ज व उ़मरह जैसी अ़ज़ीम इबादत और इन जैसे दीगर नेक कामों में **अल्लाह** पाक की दी हुई दौलत ख़र्च करें यूंही एहले इल्म को चाहिए कि वोह नूरे इल्म फैलाने में आगे आगे रहें ताकि इन दोनों त़बक़ों को देखने वाले तरग़ीब पाएं और अ़मली ज़िन्दगी में इन दोनों ख़ूबियों को पाने की ख़ूब कोशिश करें । जिन लोगों के पास राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के लिए बहुत ज़्यादा दौलत नहीं तो वोह राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले दौलत मन्दों को रश्क भरी नज़रों से देख कर येह ज़ेहन बनाने की कोशिश करें कि ''बारगाहे इलाही में इख़्लास देखा जाता है, अगर्चे मेरे पास राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के लिए दौलत के अम्बार तो नहीं हैं लेकिन मैं अपनी इस थोड़ी सी रक़म में बहुत सारा इख़्लास शामिल कर के राहे ख़ुदा में दे दूं तो रेह़मते ख़ुदावन्दी से उम्मीद है कि वोह मुझे बे ह़िसाब अज्रो सवाब से नवाज़ेगा ।'' इसी त़रह़ एहले इल्म को रश्क भरी नज़रों से देखने वाले येह ज़ेहन बनाएं कि ''इल्मी तरक़्क़ी के लिए मुसलसल कोशिश ज़रूरी है लेहाज़ा इल्म में इज़ाफ़े के लिए मुझे भी ख़ूब कोशिश करनी चाहिए ।''

---

(1)بخاری،1/43،حدیث:73(2)نزہۃ القاری،1/428،اللامع الصبیح،1/380، تحت الحدیث:73(3)ضیاء الساری،2/225(4)ضیاء الساری،2/225(5)منتخب حدیثیں،ص106(6)حدیقہ ندیہ،1/601(7)احیاء العلوم،3/236ماخوذاً۔

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी)

(तीसरी और आख़री क़िस्त)

नवाफ़िल व तिलावत की कसरत करने वाले बुज़ुर्गाने दीन

मौलाना मुहम्मद अ़दनान चिश्ती अ़त्तारी मदनी

रातों को जाग कर **अल्लाह** करीम की इबादत करना, तिलावते कुरआन करना, दिन और रात में नवाफ़िल कसरत से पढ़ना अस्लाफ़े किराम बुज़ुर्गाने दीन का शबो रोज़ का मामूल रहा है, आइए चन्द बुज़ुर्गाने दीन के मामूलात मुलाहज़ा कीजिए :

ब कसरत तिलावते कुरआन करने वाले बुज़ुर्ग

1 अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस, ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पूरा रमज़ानुल मुबारक दिन में एक कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते और तरावीह़ के बाद नवाफ़िल में हर तीन रात में एक कुरआन ख़त्म फ़रमाते ।[1]

2 शैखुस्सूफ़िया ह़ज़रते इमाम अबू बक्र मुह़म्मद बिन अ़ली कत्तानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **अल्लाह** पाक के ऐसे वली थे कि आप ने त़वाफ़ के दौरान 12 हज़ार कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाए ।[2]

3 शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम अबू बक्र बिन अ़य्याश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी ज़िन्दगी के 40 साल यूं गुज़ारे कि हर रात और दिन में एक कुरआने करीम ख़त्म किया करते थे ।[3]

4 ह़ज़रते साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना एक बार ख़त्मे कुरआने पाक फ़रमाते थे । आप हमेशा दिन को रोज़ा रखते और सारी रात क़ियाम (इबादत) करते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तहिय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते । तेह़दीसे नेमत के तौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून (Piller) के पास कुरआने पाक का ख़त्म किया और बारगाहे इलाही में गिर्या ओ ज़ारी की है । नमाज़ और तिलावते कुरआन से आप को ख़ुसूसी मह़ब्बत थी, आप पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है । मन्क़ूल है : जब भी लोग आप के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से तिलावते कुरआन की आवाज़ आ रही होती ।[4]

5 फ़न्ने ताबीर के मश्हूर इमाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बहन ह़ज़रते सैयदतुना ह़फ़्सा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہا का शुमार ताबेई ख़वातीन में होता है, आप 30 साल तक अपनी इबादत गाह से बग़ैर किसी ज़रूरत के बाहर न आईं, हर रात आधा कुरआन पढ़ लिया करती थीं नीज़ ईदैन और अय्यामे तशरीक़ के इलावा पूरे साल के रोज़े रखतीं, आप की बांदी से एक बार पूछा गया कि तुम अपनी मालिका को कैसा पाती हो ? उस ने जवाब दिया : वोह बहुत नेक औ़रत हैं अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी उन से कोई ग़लती हो भी जाए तो वोह सारी रात नमाज़ पढ़ती रेहती हैं और रोती रेहती हैं । आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہا रात में चराग़ रौशन कर के इबादत के लिए खड़ी हो जातीं, कई बार ऐसा भी होता कि चराग़ बुझ जाने के बा वुजूद भी सुब्ह़ तक आप का घर रौशन रेहता ।[5]

6 ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन ख़ुफ़ैफ़ शीराज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (वफ़ात : 371 हिजरी) फ़रमाते हैं : मैं अपने इब्तेदाई दौर में बसा अवक़ात एक ही रक्अ़त में 10 हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ता था और कभी एक रक्अ़त में पूरा कुरआने पाक पढ़ लिया करता था और बाज़ अवक़ात सुब्ह़ से अ़स्र तक एक हज़ार रक्आ़त नवाफ़िल पढ़ता था ।[6]

7 ह़ज़रते अ़ल्लामा ज़िया मक़्दिसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ुत़बे ज़माना ह़ज़रते इमाम अबू उ़मर मुह़म्मद बिन अह़मद मक़्दिसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुजाहदे का तज़्केरा करते हुवे फ़रमाते हैं : आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब भी कोई दुआ़ सुनते उसे याद कर लेते और वोह दुआ़ मांगते, जिस नमाज़ का ज़िक्र सुनते उसे अदा कर लेते, जो ह़दीस शरीफ़ सुनते उस पर अ़मल करते । उ़म्र रसीदा होने के बा वुजूद लोगों को शबे बराअत में एक सौ रक्अ़त बा जमाअ़त

पढ़ाया करते थे। पूरी जमाअ़त में सब से ज़्यादा फ़रहत व ताज़गी आप पर होती थी, जवानी की उ़म्र से ही कभी रात का क़ियाम तर्क न किया, मैं ने उन के साथ कई जंगों में शिर्कत की हम में से बाज़ ने येह इरादा किया कि कोई एक आदमी जाग कर पेहरा दे और बाक़ी सो जाएं तो शैख़ अबू उ़मर رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाने लगे कि तुम सो जाओ और खुद नमाज़ अदा करने लगे, सारी रात नमाज़ पढ़ते रहे। ह़ज़रते अह़मद बिन यूनुस मक़्दिसी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : सफ़र में आप का मामूल था कि रातों को नमाज़ अदा करते और हम सफ़रों की जानो माल की ह़िफ़ाज़त करते थे। आप के बेटे अ़ब्दुल्लाह का बयान है कि आप रोज़ाना रात को नमाज़ में कुरआने पाक की एक मन्ज़िल तरतील से तिलावत फ़रमाते। दिन में रोज़ाना ज़ोहर से अ़स्र के दौरान एक मन्ज़िल तिलावत फ़रमाते।(7) आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना दिन रात में बहत्तर(72) रक्अ़ात नवाफ़िल अदा किया करते थे।(8)

इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़

सिह़ाह़ सित्ता के जलीलुल क़द्र रावी शैखुल इस्लाम ह़ज़रते सुलैमान बिन त़िरखान तैमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बेटे अपने वालिद के बारे में बताते हैं : मेरे वालिदे गिरामी का मामूल था कि चालीस साल तक एक दिन रोज़ा रखते एक दिन इफ़्त़ार करते (रोज़ा छोड़ते) और (सारी रात जाग कर) इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा करते थे।(9)

ह़ज़रते रक़बा बिन मस्क़ला رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में **अल्लाह** पाक का दीदार किया तो **अल्लाह** करीम को येह इरशाद फ़रमाते सुना : मैं सुलैमान तैमी की आराम गाह को ज़रूर इ़ज़्ज़त बख़्शूंगा, इस ने 40 साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी है।(10)

ह़ज़रते सुलैमान बिन त़िरखान رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सारी सारी रात नमाज़ पढ़ते थे और सुब्ह़ की नमाज़ इशा के वुज़ू से अदा फ़रमाते। आप और आप का बेटा मोतमिर सारी रात मुख़्तलिफ़ मसाजिद में फिरते रेहते थे, कभी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ते और कभी उस मस्जिद में, ह़त्ताकि इन्हें सुब्ह़ हो जाती।(11)

ह़ज़रते इमाम अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : वोह बुज़ुर्गाने दीन जिन के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर है कि वोह रात भर इ़बादत में मसरूफ़ रेहते और 30 या 40 साल तक इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा करते रहे, कहा जाता है कि इन की तादाद सिर्फ़ ताबेईने उ़ज़्ज़ाम में से तक़रीबन 40 है।

फिर आप ने मक्कए पाक, मदीना शरीफ़, यमन, शाम, कूफ़ा, उ़बाद, ईरान और बसरा के उन औलिया के नाम भी गिनवाए जो 30 या 40 साल तक इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा करते रहे हैं।(12)

नक़्क़ाद मोह़द्दिस ह़ज़रते इमाम ज़हबी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : صَلَّى عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زَيْدٍ الصُّبْحَ بِوُضُوْءِ الْعَتَمَةِ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً यानी ह़ज़रते अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने चालीस साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई।(13)

करोड़ों ह़नफ़ियों के इमाम ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तीस साल मुसलसल रोज़े रखे। तीस साल तक एक रक्अ़त में कुरआने पाक ख़त्म करते रहे। चालीस (बल्कि 45) साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की, जिस मक़ाम पर आप की वफ़ात हुई वहां आप ने सात हज़ार कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाए थे।(14)

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद हरवी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने चालीस साल तक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत की, इस मुद्दत में आप इशा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते थे और आप का मामूल था कि जब बे वुज़ू होते थे तो उसी वक़्त वुज़ू कर के दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ते।(15)

ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब, ह़ज़रते अ़म्र बिन उ़बैद, ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अस्वद जैसे जलीलुल क़द्र बुज़ुर्गाने दीन के बारे में भी इस त़रह़ के अक़्वाल मिलते हैं कि उन्हों ने इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई।

अल्लाह करीम इन नुफ़ूसे कुदसिया पर अपनी बे शुमार रेह़मत फ़रमाए और इन के सदक़े हमें भी फ़राइज़ो नवाफ़िल पर इस्तेक़ामत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) ارشاد الساری، 1/64 (2) سیر اعلام النبلا، 11/469 (3) سیر اعلام النبلا، 7/686
(4) حلیۃ الاولیاء، 2/364 تا 366 ملتقطاً و ملخصًا (5) صفۃ الصفوہ، جزء 4، 2/21، 22
(6) رسالہ قشیریہ، ص82 (7) تاریخ الاسلام للذہبی، 43/267 (8) تاریخ الاسلام للذہبی، 43/268 (9) سیر اعلام النبلاء، 6/398 (10) سیر اعلام النبلاء، 6/197، جامع الاصول فی احادیث الرسول، 13/150، رقم: 1117 (11) تہذیب الکمال، 12/8
(12) قوت القلوب، 1/83 (13) سیر اعلام النبلاء، 7/178، حفظ العمر لابن الجوزی، ص51 (14) خیرات الحسان، ص50 (15) بہجۃ الاسرار، ص164۔

मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

शैखे़ त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत, बानी ए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किए जाने वाले सवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, इन में से 8 सवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किए जा रहे हैं :

1 आ़शूरे के इलावा मोह़र्रमुल ह़राम के रोज़ों के फ़ज़ाइल

सवाल : क्या 9 और 10 मोह़र्रमुल ह़राम के रोज़ों के इलावा भी मोह़र्रमुल ह़राम के रोज़ों के फ़ज़ाइल हैं ?

जवाब : मोह़र्रमुल ह़राम शरीफ़ के रोज़ों के तअ़ल्लुक़ से दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم पेशे ख़िदमत हैं :

(1) रमज़ान के बाद मोह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बाद अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल यानी रात के नवाफ़िल हैं। (مسلم، ص456، حدیث:2755)

(2) मोह़र्रम के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (معجم صغیر، 2/71)

(मदनी मुज़ाकरा, यकुम मोह़र्रमुल ह़राम 1441 हिजरी)

2 क्या मोह़र्रम में मछली खा सकते हैं ?

सवाल : मोह़र्रम शरीफ़ का चांद नज़र आने के बाद मछली पका कर खा सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! मछली, मुर्ग़ी, गोश्त और जो भी ह़लाल चीज़ है सब खा सकते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मोह़र्रमुल ह़राम 1441 हिजरी)

3 करबला की ह़ाज़िरी

सवाल : आप की करबला ए मोअ़ल्ला में ह़ाज़िरी कब हुई थी ?

जवाब : करबला ए मोअ़ल्ला की ह़ाज़िरी का साल मुझे याद नहीं है, काफ़ी साल हो गए हैं। ज़िन्दगी में दो मरतबा बग़दाद शरीफ़ का सफ़र किया था और दोनों मरतबा करबला शरीफ़ की ह़ाज़िरी भी हुई थी।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मोह़र्रमुल ह़राम 1441 हिजरी)

4 मोह़र्रमुल ह़राम में लफ़्ज़े ''ह़राम'' का क्या मत़लब है ?

सवाल : मोह़र्रमुल ह़राम में मोह़र्रम के साथ ह़राम का लफ़्ज़ क्यूं (बोला जाता) है ?

जवाब : यहां इस नाम में ''ह़राम'' का लफ़्ज़ ह़लाल के मुक़ाबले में नहीं है, बल्कि इस लफ़्ज़े ह़राम से मुराद इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत है, चूंकि मोह़र्रम का महीना इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत वाला होता है, इस लिए इस के साथ लफ़्ज़े ह़राम बोला जाता है, जिस त़रह़ काबा शरीफ़ जिस मस्जिद में है उस का नाम मस्जिदुल ह़राम है, जिस का मत़लब है : इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत वाली मस्जिद।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मोह़र्रमुल ह़राम 1441 हिजरी)

5 ईसाले सवाब का इन्कार करना कैसा ?

सवाल : जो अ़ज़ीज़ रिश्तेदार दुन्या से चले जाते हैं, क्या उन की क़ब्रों पर जा कर दुआ़ मांगने और उन के लिए क़ुरआन ख़्वानी करवाने से उन्हें सवाब पहुंचता है ?

जवाब : ईसाले सवाब यानी सवाब पहुंचाना, जिस त़रह़ हम मरने वाले के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करते हैं या उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हैं तो उसे इस का सवाब मिलता है, इसी त़रह़ जब हम उस के लिए क़ुरआन और क़ुल शरीफ़ वग़ैरा पढ़ते या पढ़वाते हैं तो उसे इस का भी सवाब पहुंचता है। ईसाले सवाब अच्छा काम है। इस का इन्कार करना गुनाह और इन्कार करने वाला गुमराह है।

(देखिए : फ़तावा रज़विया, 9/590,592)

जब शरीअ़त ने ईसाले सवाब को जाइज़ कहा है तो मैं और आप इस का इन्कार कैसे कर सकते हैं !

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मोह़र्रमुल ह़राम 1441 हिजरी)

6 क़ब्र वाले सुनते और देखते हैं

सवाल : अगर हम जुमेरात या जुम्आ़ के रोज़ क़ब्रस्तान जाएं और क़ब्र वालों से बात करें तो क्या वोह हमारी बात सुनते हैं ?

जवाब : जुमेरात हो या जुम्आ़ या और कोई वक़्त हो, क़ब्र वाले सुनते भी हैं और देखते भी हैं, बल्कि उन की देखने और सुनने की त़ाक़त दुन्या के मुक़ाबले में बढ़ जाती है। यहां तक कि अगर मुर्दा ग़ैर मुस्लिम हो तो वोह भी देखता-सुनता है। (بخاری، 3/11، حدیث: 3976 ملتقطاً) क़ब्र वाले को दुन्या में जिस से ज़्यादा उन्सियत, मह़ब्बत या तअ़ल्लुक़ होता है जब वोह क़ब्र पर आता है तो क़ब्र वाले को ज़्यादा ख़ुशी ह़ासिल होती है।

(देखिए : जज़्बुल क़ुलूब, स. 197)

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मोह़र्रमुल ह़राम 1441 हिजरी)

7 सुसराल में मोह़र्रमुल ह़राम का चांद देखने में ह़रज नहीं

सवाल : येह बात कहां तक दुरुस्त है कि दुल्हन निकाह़ के पेहले साल मोह़र्रमुल ह़राम या सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का चांद सुसराल में न देखे ?

जवाब : येह भी एक ढकोसला और ग़लत़ बात है कि दुल्हन निकाह़ के पेहले साल मोह़र्रमुल ह़राम या सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का चांद सुसराल में न देखे। बिलफ़र्ज़ अगर दुल्हन की आंखें कमज़ोर हों या वोह नाबीना हो या उस का घर किसी प्लाज़े में हो तो वोह मैके में चांद कैसे देख पाएगी ? नीज़ अगर दुल्हन के मां बाप फ़ौत हो चुके हों और उस का कोई वारिस न हो तो क्या चांद देखने के लिए उसे दारुल अमान भेजा जाएगा ? याद रखिए ! शरई लेह़ाज़ से ऐसा कोई मस्अला नहीं (है) कि दुल्हन निकाह़ के पेहले साल मोह़र्रमुल ह़राम या सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का चांद सुसराल में न देखे बल्कि येह सब अ़वामी तवह्हुमात (ख़ुराफ़ात) हैं जिन को ख़त्म करना ज़रूरी है।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 मोह़र्रमुल ह़राम 1440 हिजरी)

8 लोहा नर्म हो जाता !

सवाल : किस नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने लोहे का काम किया है ? नीज़ क्या हम येह काम उन की सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से कर सकते हैं ?

जवाब : ह़ज़रते सैयदना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने लोहे का काम किया है। अल्लाह पाक ने इन्हें येह मोजिज़ा अ़त़ा फ़रमाया था कि आप عَلَيْهِ السَّلَام जब लोहे को अपने दस्ते मुबारक में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाता था जैसा कि दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 422 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन" सफ़ह़ा 63 पर है : "ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام बा वुजूद येह कि एक अ़ज़ीम सल्त़नत के बादशाह थे मगर सारी उ़म्र वोह अपने हाथ की दस्तकारी की कमाई से अपने ख़ुर्दो नोश का सामान करते रहे। अल्लाह पाक ने आप को येह मोजिज़ा अ़त़ा फ़रमाया था कि आप लोहे को हाथ में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाया करता था और आप इस से ज़िर्हें बनाया करते थे और इन को फ़रोख़्त कर के इस रक़म को अपना ज़रीअ़ए मआ़श बनाए हुवे थे और अल्लाह तआ़ला ने आप को परिन्दों की बोली सिखा दी थी।"

फ़ी ज़माना लोहे को भट्टी के ज़रीए़ गर्म कर के नर्म किया जाता है तो यूं भट्टी चलाते वक़्त सुन्नत की अदाएगी की निय्यत का येह मौक़अ़ मह़ले नज़र (Fit) नहीं आता और न ही इस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ इस का सुन्नत होना कहीं पढ़ा है क्यूंकि ह़ज़रते सैयदना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तो बग़ैर भट्टी के अपने हाथों से ही लोहे को नर्म कर के ज़िर्हें बना लिया करते थे।

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत

मुफ़्ती अबू मुहम्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है। तेहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते (पूछते रेहते) हैं, जिन में से 4 मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किए जा रहे हैं।

1 क्या मर्द पर एह़राम से बाहर होने के लिए ह़लक़ (गंजा) कराना ही ज़रूरी है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या अपने वक़्त पर एह़राम से बाहर होने के लिए मर्द पर ह़लक़ कराना ही ज़रूरी है या क़स्र (बाल करवाना) भी करा सकता है, अगर क़स्र करा सकता है तो अफ़्ज़ल अ़मल क्या है नीज़ क़स्र की मिक्दार (ह़द) कितनी है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

मर्द के लिए एह़राम से बाहर होने के लिए ह़लक़ कराना ही ज़रूरी नहीं है, बल्कि अगर तक़सीर कराना (बाल करवाना) मुमकिन हो तो तक़सीर की भी रुख़्सत है, अलबत्ता मर्द के लिए पूरे सर का ह़लक़ सुन्नत और अफ़्ज़ल अ़मल है, और तक़सीर के ज़रीए़ एह़राम से बाहर होने के लिए ज़रूरी है कि कम से कम चौथाई (25%) सर के बालों में से हर बाल उंगली के एक पोरे के बराबर यानी तक़रीबन एक ईंच काट लिया जाए, ह़लक़ की त़रह़ तक़सीर में भी येही सुन्नत है कि पूरे सर के बालों की तक़सीर की जाए, तक़सीर में मर्द और औ़रत दोनों के लिए येही हुक्म है। चौथाई सर की तक़सीर करना हो तो चौथाई सर से कुछ ज़्यादा हिस्से के बाल और एक पोरे से ज़ाइद काट लेना चाहिए, ताकि बाल छोटे बड़े होने की बिना पर येह न हो कि चौथाई सर के बालों की तक़सीर न हो सके।

(المسلك المتقسط، ص324، الدرّ المختار و ردّ المحتار، 3/738، 739 ملتقطاً، بہار شریعت 1/1142 ملتقطاً، 27 واجبات حج اور تفصیلی احکام، ص118)

وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُهٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क्या हर अज़ान का जवाब देना लाज़िम है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं जिस बिल्डिंग में रेहता हूं वहां चन्द मिनट के फ़ासिले पर मुख़्तलिफ़ अज़ानों की आवाज़ें आती हैं क्या हम पर हर अज़ान का जवाब देना लाज़िम है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

वक़्फ़े वक़्फ़े से (1 By 1) अगर मुख़्तलिफ़ अज़ानों की आवाज़ें आ रही हों तो ज़बान से फ़क़त़ पेहली ही अज़ान का जवाब देना मुस्तह़ब है अलबत्ता बेहतर येही है कि सब अज़ानों का जवाब दें।

रद्दुल मुह़तार में है : "ولو تکرر ای بان اذن واحد بعد واحد---اجاب الاول-" यानी अगर एक के बाद एक अज़ान दे तो सुनने वाला पेहली का जवाब दे। (ردالمحتار مع در مختار، 2/82)

सदरुश्शरीआ बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहारे शरीअ़त में लिखते हैं : “अगर चन्द अज़ानें सुने तो इस पर पेहली ही का जवाब है और बेहतर येह (है) कि सब का जवाब दे।

(बहारे शरीअ़त, 1/473)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

3 एक ही मजलिस में एक ही आयते सजदा पांच लोगों ने पढ़ी तो सजदए तिलावत एक बार होगा या पांच बार ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर एक ही मजलिस में एक ही आयते सजदा पांच लोगों ने पढ़ी तो सजदए तिलावत एक ही बार करना होगा या पांच बार ? नीज़ अगर आयते सजदा सुनने वाले ने ख़ुद भी वोही आयत उसी मजलिस में तिलावत की हो तो वोह एक ही सजदए तिलावत करेगा या अलग अलग यानी एक पढ़ने का और दूसरा सुनने का ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई दोनों सूरतों में एक ही सजदए तिलावत काफ़ी होगा, अलग अलग सजदए तिलावत करना वाजिब नहीं।

सदरुश्शरीआ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : “एक मजलिस में सजदे की एक आयत को बार बार पढ़ा या सुना तो एक ही सजदा वाजिब होगा अगर्चे चन्द शख़्सों से सुना हो, यूंही अगर आयत पढ़ी और वोही आयत दूसरे से सुनी तो भी एक ही सजदा वाजिब होगा।” (बहारे शरीअ़त, 1/735)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

4 आ़शूरे के दिन सुर्मा लगाने का क्या हुक्म है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि आ़शूरे (यानी दस मुह़र्रम) के दिन सुर्मा लगाने का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

आ़शूरे (यानी दस मुह़र्रम) के दिन सुर्मा लगाना जाइज़ है, इस में कोई ह़रज नहीं, बल्कि जो आ़शूरे के दिन इस्मद सुर्मा लगाए तो उस की आंखें कभी नहीं दुखेगी।

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी किताब अल जामेउ़स्सग़ीर में ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : من اکتحل بالاثمد یوم عاشوراء لم یرمد ابدا यानी जिस ने आ़शूरे के दिन इस्मद सुर्मा लगाया उस की आंखें कभी न दुखेगी। (الجامع الصغیر، جز: 2، ص418، حدیث: 8506)

इस ह़दीसे पाक के तह़त अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं ان فی الاکتحال به مرمة للعین وتقوية للبصر، واذاکان ذلك منه فی ذلك اليوم نال البركة فعوفی من الرمد علی طول الامد यानी इस्मद सुर्मा लगाने में आंखों की दुरुस्ती और बीनाई की तक़्वियत है, और जब इस (आ़शूरे के) दिन में लगाया जाए तो बरकत ह़ासिल होगी, फिर त़वील मुद्दत आंखों के दर्द से आ़फ़ियत नसीब हो जाएगी। (التیسیر شرح جامع الصغیر، 2/404)

दुररुल मुन्तक़ा में क़ेहस्तानी से है : ولاباس به للجميع يوم عاشوراء علی المختار لقوله عليه الصلاة والسلام من اکتحل يوم عاشوراء لم ترمد عيناه ابدا यानी आ़शूरे के दिन तमाम (रोज़ेदार, और ग़ैर रोज़ेदार) के लिए मुख़्तार क़ौल के मुत़ाबिक़ सुर्मा लगाने में ह़रज नहीं, क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जिस ने आ़शूरे के दिन सुर्मा लगाया उस की आंखें कभी न दुखेगी।

(الدر المنتقی، 1/364)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : “आ़शूरे के दिन और बहुत से आमाल करना चाहिएं जैसे ग़ुस्ल करना, सुर्मा लगाना, रोज़ा रखना वग़ैरा।” (मिरआतुल मनाजीह़, 3/126)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

मज़ारे मुबारक हज़रते इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ

करबला का पैग़ाम मुसलमानाने आ़लम के नाम

मौलाना मुहम्मद अ़ताउन्नबी हुसैनी मिस्बाही

ह़क़्क़ो बाति़ल का आमना सामना तख़्लीक़े आदम से ही चला आ रहा है, जब **अल्लाह** करीम ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया तो इब्लीस ने तकब्बुर में आ कर मुख़ालफ़त की, नतीजतन हमेशा हमेशा के लिए लईन, मर्दूद और जहन्नमी ठेहरा। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के दुन्या में तशरीफ़ लाने से आज तक हज़ारों ऐसे महाज़ (वाक़ेआ़त) हुवे जिन में नज़रियाती, फ़िक्री और अ़मली तौ़र पर ह़क़्क़ो बाति़ल एक दूसरे के मद्दे मुक़ाबिल (आमने-सामने) आए, **अल्लाह** करीम ने ह़क़ को फ़त्ह़ अ़ता़ फ़रमाई और बाति़ल जल्द या ब देर हर बार ज़लीलो रुस्वा हुवा, इन्ही मारिकों में से एक बहुत दर्दनाक और तारीख़े इस्लाम का एक अहम तरीन मारिका **मैदाने करबला** का है, येह मारिका ह़क़्क़ो बाति़ल का एक ऐसा मारिका था कि तब से आज तक ह़क़ के लिए **हुसैनियत** और बाति़ल के लिए **यज़ीदियत** का नाम बोला और लिखा जाने लगा है । इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एहले कूफ़ा के मुसलसल ख़ुतूत़ भेजने और बुलाने के बाद जब कूफ़ा पहुंचे और फिर एहले कूफ़ा की बे वफ़ाई और यज़ीदियों की शक़ावत व लालचे दुन्या के सबब मारिकए करबला रूनुमा हुवा जिस में ख़ानवादए नबवी और दीगर जां निसारों पर मुश्तमिल मुठ्ठीभर क़ाफ़िले को यज़ीदियों ने इन्तेहाई बे दर्दी के साथ शहीद कर दिया, क़ुरबान जाइए इन नुफ़ूसे क़ुदसिया की ह़क़ परस्ती पर कि जान दे दी, घर लुटा दिया, अपनी आंखों से जिगर के टुकड़ों की शहादत का दर्दनाक मन्ज़र देखना तो बरदाश्त कर लिया लेकिन बाति़ल के सामने झुकना गवारा न किया ।

दीने इस्लाम के लिए येह जो इतनी बड़ी क़ुरबानी दी गई और इमामे आ़ली मक़ाम ने अपने हाथों से अपने ख़ानदान के नौजवान शोहदा के ज़ख़्मों से चूर लाशे उठाए, इस से हमें येह दर्स मिलता है कि .....

1 ख़िदमते दीन और दावते दीन में कभी भी पसो पेश का शिकार न होना बल्कि जब भी मौक़अ़ मयस्सर आए दीन के नाम पर चल पड़ना और दीन की सर बुलन्दी के लिए हर जाइज़ कोशिश करना ।

2 दीन की ह़िफ़ाज़त में अपने अह़बाब, घरबार बल्कि अपनी जान भी राहे ख़ुदा में नज़राना करना पड़े तो पीछे मत हटना बल्कि आगे बढ़ कर दीन की ह़िफ़ाज़त के लिए ह़क़्क़ो बाति़ल के दरमियान मज़बूत़ दीवार की मानिन्द खड़े हो जाना और हर ख़्वाहिशो आसाइश के मुक़ाबले में दीनो ईमान ही को तरजीह़ देना ।

3 अगर दुन्या की इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी पर मसाइबो आलाम और तकालीफ़ के तारीक बादल भी छा जाएं तब भी अह़कामे ख़ुदावन्दी से ग़फ़्लत मत बरतना बल्कि शरीअ़त पर अ़मल की शम्अ़ से इन तारीकियों (अन्धेरों) को काफ़ूर (ख़त्म) करना ।

4 नमाज़ की पाबन्दी हर ह़ाल में करना, घर में हो या सफ़र में, अम्न में हो या मैदाने जंग में, हर सूरत पेशानी को बारगाहे ख़ुदा में झुकने का आ़दी रखना ।

5 ख़िदमते दीन की राह में मसाइबो तकालीफ़ रूबरू हों तो उस से घबरा कर ज़बान पर शिकवा ओ शिकायत न लाना बल्कि "اَلصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْاُوْلٰی"(1) पर कारबन्द रेहना ।

6 जो वादा करना उस पर बे वफ़ाई का दाग़ न लगने देना बल्कि उस पर तक्मील व वफ़ा की मोहर लगाना।

7 इस्लामो ईमान की ला ज़वाल नेमत पा कर झूट, ग़ीबत, धोका, फ़रेब, जुल्म और हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद के ज़ाएअ़ करने का तौक़ गले में न डालना।

8 दीने इस्लाम एक पुर अम्न दीन है इस लिए किसी पर जुल्म न करना, यहां तक कि जानवरों पर भी शफ़्क़त रखना। हां ! अपनी जान व इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिए तदाबीर ज़रूर की जाएं।

9 मुसलमान का शेवा मह़ब्बते क़ुरआन और आ़दते क़िराअते क़ुरआन है न कि तिलावते क़ुरआन से दूरी, नेज़े पर बुलन्द सरे हुसैन की तिलावत को याद रखना।

10 ख़ास कर ख़्वातीन के लिए इस में पैग़ाम है कि मसाइबो आलाम के पहाड़ ही क्यूं न टूट पड़े फिर भी नौह़ा व वावेला और कोई ग़ैर शरई अ़मल न करना बल्कि मस्तूराते ख़ानदाने नबुव्वत के ग़म और त़रज़े अ़मल को पेशे नज़र रखना कि उन हस्तियों ने येह सारा वाक़िआ़ अपनी आंखों से देखा फिर भी उन्हों ने न नौह़ा किया, न सीना कोबी की, न बाल बिखेरे और न ही बे पर्दगी का मुज़ाहरा किया बल्कि सब्र किया और "मरज़ी ए मौला अज़ हमह औला" (यानी मालिक की रिज़ा सब से बेहतर है) की ख़ामोश सदाएं बुलन्द कीं।

अल्लाह करीम हमें शोहदा ए करबला के एह़साने अ़ज़ीम को याद रखने और इन की सीरत व किरदार को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **आमीन**

---

(1) सब्र पेहले सदमे के वक़्त होता है।

(بخاری،1/441،حدیث:1302)

यानी जिस वक़्त मुसीबतो आज़माइश का सामना हो उस वक़्त ही सब्र करना होता है क्यूंकि बाद में तो सब्र आ ही जाता है।

इस्लाम की रौशन तालीमात

मर्हूमीन के साथ भलाई

मौलाना अबू मुह़म्मद अ़त्तारी मदनी

दीने इस्लाम की रौशन तालीमात में जिस त़रह़ ज़िन्दगी में दूसरों के साथ भलाई से पेश आने, दूसरों का भला करने, सोचने और उन के हुक़ूक़ का ख़याल रखने का दर्स मिलता है, इसी त़रह़ दुन्या से चले जाने वाले मर्हूम मुसलमानों के साथ भी भलाई का दर्स मिलता है। येह इस्लाम की रौशन तालीमात का हुस्न है कि मुसलमान अपने मां-बाप, बहन भाइयों, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और दीगर मुसलमानों के लिए उन की ज़िन्दगी में और इन्तेक़ाल के बाद दुआ़ ए मग़फ़ेरत और ईसाले सवाब के ज़रीए़ वक़्तन फ़ वक़्तन उन के साथ भलाई का मुआ़मला करते हैं।

ईसाले सवाब इस्लाम की एक ऐसी बेहतरीन खूबी है जिस की बदौलत ज़िन्दों को भी अज्र मिलता है और मर्हूमीन भी इस की बरकत से अज़ाबे क़ब्र से नजात और राहत व सुकून पा सकते हैं। क़ुरआने करीम में भी मुसलमानों का अपने लिए और अपने से पेहले वाले मुसलमानों के लिए बख़्शिश की दुआ करने का ज़िक्र मौजूद है :

﴿وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो इन के बाद आए अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पेहले ईमान लाए। (پ28، الحشر: 10) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ज़िन्दों का हदिया (यानी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिए दुआ ए मग़फ़ेरत करना है।

(شعب الایمان، 6/203، حدیث: 7905)

एक ह़दीसे पाक में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मां-बाप की त़रफ़ से नफ़्ली ख़ैरात कर के उन के साथ भलाई करने की तरग़ीब दिलाई है, चुनान्चे **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिए कि उसे अपने मां-बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और उस के (यानी ख़ैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी। (شعب الایمان، 6/205، حدیث: 7911)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआनो ह़दीस से ईसाले सवाब का जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब होना साबित होता है और येह भी मालूम होता है कि ईसाले सवाब करने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े हैं जिन पर मुसलमान ज़मानए क़दीम (पूराने ज़माने) से अ़मल करते आ रहे हैं।

आइए ! ईसाले सवाब के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े पढ़ते हैं।

बग़ैर माल ख़र्च किए ईसाले सवाब के चन्द त़रीक़े : (1) ज़िन्दा व मुर्दा सब के लिए बख़्शिश की दुआ़ करना (2) नमाज़ (3) रोज़ा (4) एतेकाफ़ (5) क़ुरआने पाक की तिलावत (मसलन सूरए यासीन, सूरए मुल्क, सूरए फ़ातेहा, आयतुल कुर्सी, सूरए इख़्लास, वग़ैरा या पूरा क़ुरआने करीम) (6) ज़िक्रुल्लाह (कलिमए त़य्यिबा, سُبْحٰنَ اللّٰه, اَلْحَمْدُ لِلّٰه, اَللّٰهُ اَكْبَر वग़ैरा) (7) दुरूद शरीफ़ (8) दर्स (9) बयान (10) नेकी की दावत (11) नमाज़े फ़ज्र के लिए जगाना (12) दीनी किताब का मुत़ालआ़ करना (13) दीनी कामों के लिए इनफ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का ईसाले सवाब कर सकते हैं।

माल ख़र्च करने के ज़रीए ईसाले सवाब के चन्द त़रीक़े :

(1) ईसाले सवाब की निय्यत से सदक़ा ओ ख़ैरात करना (2) ह़ज करना (3) किसी आ़लिम या त़ालिबे इल्म को किताबें दिलाना (4) कुतुबो रसाइल ख़रीद कर तक़्सीम करना (5) किसी बीमार का इ़लाज करवा देना (6,7) किसी ग़रीब को राशन या कपड़े दिला देना (8) किसी की जाइज़ ज़रूरत पूरी करना (9) पानी का नल या मोटर लगवा देना (10,11,12) मस्जिद, मद्रसे, जामेआ़ वग़ैरा बनवाना या उन की तामीरात में हिस्सा लेना (13) मुसलमानों को खाना खिलाना वग़ैरा।

ईसाले सवाब कब करना चाहिए ? ईसाले सवाब किसी भी वक़्त कर सकते हैं और कोई दिन या कोई वक़्त ख़ास कर के भी कर सकते हैं जबकि इसे फ़र्ज़ या वाजिब न समझते हों, जैसे हमारे यहां तीजा, दसवां, चालीसवां, बरसी, ग्यारहवीं व बारहवीं शरीफ़, यौमे सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आज़म व उ़स्माने ग़नी व अ़लिय्युल मुर्तज़ा व ह़सनैने करीमैन رضی اللہ عنھم اجمعین और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के उ़र्स वग़ैरा के मौक़ेअ़ पर ईसाले सवाब किया जाता है।

अल्लाह पाक हमें इस्लाम की रौशन तालीमात पर अ़मल करते हुवे बुज़ुर्गाने दीन और अपने मर्हूमीन के लिए ख़ूब ख़ूब ईसाले सवाब करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

(ईसाले सवाब के बारे में मज़ीद जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का रिसाला "फ़ातेहा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा" पढ़िए)

कर भला सो हो भला

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी) . . . . . .

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

बे साया मेह़बूब صَلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मौलाना काशिफ़ शेहज़ाद अ़त्तारी मदनी

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह इम्तियाज़ी शान है कि सूरज, चांद और चराग़ की रौशनी में आप का साया नहीं होता। गुज़श्ता शुमारे में इस मौज़ूअ़ पर कई दलाइल पेश किए गए थे, आइए ! इस मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ कुछ मज़ीद बातें पढ़ कर अपना ईमान ताज़ा करते हैं :

साया क्यूं नहीं था ? ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! उ़लमा ए इस्लाम ने **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस का साया न होने की जो मुख़्तलिफ़ ईमान अफ़रोज़ ह़िक्मतें बयान फ़रमाई हैं उन में से 4 मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

1 रेह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर होने की वज्ह से आप का साया नहीं था।(1)

किया तुम को नूरे मुजस्सम ख़ुदा ने ज़मीं पर नहीं पड़ता साया तुम्हारा (2)

2 साया न होना आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की निशानियों और अ़लामात में से है, चुनान्चे बाज़ बुज़ुर्गाने दीन ने अ़दमे साया (परछाई ना होने) को नबुव्वत की अ़लामात और निशानियों के बाब में ज़िक्र फ़रमाया है।(3)

3 ह़ज़रते सैयदना ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : مَعْنَاهُ لِئَلَّا يَطَأَ عَلَيْهِ كَافِرٌ فَيَكُوْنَ مَذَلَّةً لَهُ यानी इस में ह़िक्मत येह थी कि कोई काफ़िर सायए अक़्दस पर पाउं न रखे क्यूंकि इस में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन है।(4)

ह़िकायत : ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا तशरीफ़ लिए जाते थे, एक यहूदी ह़ज़रत के गिर्द (यानी आस पास) अ़जब ह़रकात अपने पाउं से करता जाता था। उस से दरयाफ़्त फ़रमाया (कि ऐसा क्यूं करते हो ?) बोला : बात येह है कि और तो कुछ क़ाबू हम तुम पर नहीं पाते, जहां जहां तुम्हारा साया पड़ता है उसे अपने पाउं से रोंदता (यानी कुचलता) चलता हूं। ऐसे ख़बीसों की शरारतों से ह़ज़रते ह़क़ عَزَّوَجَلَّ (यानी **अल्लाह** पाक) ने अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मेह़फ़ूज़ फ़रमाया।(5)

4 ह़ज़रते सैयदना शैख़ अह़मद फ़ारूक़ी सरहिन्दी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

دَرعالَمِ شہادت سایۂ شخص از شخص لطیف تراست و چوں لطیف از وَے دَرعالَم نَباشَد اُو را سایہ چہ صُورت دارد

यानी दुन्या में हर शख़्स का साया उस शख़्स से ज़्यादा लत़ीफ़ व पाकीज़ा होता है और सरवरे कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़्यादा लत़ीफ़ कोई चीज़ नहीं इस लिए आप का साया नहीं हो सकता।(6)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन इन्सान का जिस्म गर्दो ग़ुबार, मैल कुचैल वग़ैरा से मैला और गन्दगी व नजासत से आलूदा हो जाता है लेकिन इन्सान का साया इन चीज़ों से मैला नहीं होता, लेहाज़ा हर शख़्स का साया इस से ज़्यादा लत़ीफ़ व पाकीज़ा होता है। नूर वाले आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूरानी जिस्म से ज़्यादा लत़ीफ़ व पाकीज़ा कोई चीज़ नहीं इस लिए आप का साया भी नहीं है।

अ़दमे साया (परछाई ना होने) से मुतअ़ल्लिक़ उ़लमा ए किराम की तालीफ़ात : जिन उ़लमा ए किराम ने अपनी किताबों में अ़ज़मत व शाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीगर पेहलूओं के साथ साथ अ़दमे साया का भी ज़िक्र फ़रमाया इन की तादाद तो कसीर है, अलबत्ता कई आ़शिक़ाने रसूल ने मुस्तक़िल अ़दमे साया के उ़नवान पर भी कुतुबो

रसाइल और मक़ालात लिखने की सआदत हासिल फ़रमाई है। ऐसे चन्द उलमा ए किराम के अस्मा ए गिरामी मुलाहज़ा फ़रमाइए :

1 आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस मौज़ूअ पर 3 ला जवाब रसाइल तस्नीफ़ फ़रमाए जिन के नाम येह हैं। (الف) قَمَرُ التَّمَامِ فِیْ نَفْیِ الظِّلِّ عَنْ سَیِّدِ الْاَنَامِ علیہ وعلٰی الہ الصّلٰوۃ والسّلام (मख़्लूक़ के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साए की नफ़ी में कामिल चांद) (ب) نَفْیُ الْفَیْءِ عَمَّنْ اِسْتَنَارَ بِنُوْرِہٖ کُلُّ شَیْءٍ صلّی اللہ علیہ وسلم (उस ज़ाते अक़्दस से साए की नफ़ी जिन के नूर से हर चीज़ रौशन हो गई) (ج) هُدَی الْحَیْرَانِ فِیْ نَفْیِ الْفَیْءِ عَنْ سَیِّدِ الْاَکْوَانِ علیہ الصلوٰۃ والسلام الاتمان الاکملان (काइनात के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साए की नफ़ी के मुतअल्लिक़ हैरत ज़दा शख़्स की रेहनुमाई) इस के इलावा आप ने मौलाना हबीब अली अलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की किताब पर तक़रीज़ लिखी जिस में अदमे साया से मुतअल्लिक़ कसीर अक़्ली व नक़्ली दलाइल दर्ज फ़रमाए। 2 शैख़ुद्दलाइल हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद अब्दुल हक़ सिद्दीक़ी नक़्शबन्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने قُرَّۃُ عَیْنِ الصُّدُوْر के नाम से इस मौज़ूअ पर रिसाला तेहरीर फ़रमाया 3 हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه 4 रईसुत्तेहरीर हज़रते अल्लामा मौलाना अरशदुल क़ादरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه 5 हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती नूरुल्लाह नईमी बसीरपुरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه समेत दीगर कई आशिक़ाने रसूल ने भी इस मौज़ूअ पर रसाइल और मक़ालात तेहरीर फ़रमाए।

वोह हैं ख़ुरशीदे रिसालत नूर का साया कहां *इस सबब से सायए ख़ैरुल वरा मिलता नहीं*(7)

अदमे साया से मुतअल्लिक़ 3 रज़वी फूल : इमामे एहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अदमे साया (परछाई ना होने) से मुतअल्लिक़ अपनी तेहरीरात में इल्मो इरफ़ान के जो गुलशन सजाए हैं उन में से 3 फूलों की ख़ुश्बू से अपना ईमान ताज़ा कीजिए : 1 हदीस में है कि आस्मानों में चार उंगल जगह नहीं जहां कोई फ़रिश्ता अपनी पेशानी रखे सजदे में न हो।(8) (अगर) मलाइका (फ़रिश्ते) के (लिए) साया होता तो आफ़्ताब (यानी सूरज) की रौशनी हम तक क्यूंकर पहुंचती या शायद पहुंचती तो ऐसी जैसे घने पेड़ में से छन कर ख़ाल ख़ाल बुन्दकियां (यानी इक्का दुक्का बूंदें) नूर के साए के अन्दर नज़र आती हैं।(9) 2 जब मलाइका (फ़रिश्ते जो) कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से बने(10) साया नहीं रखते तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) (जो) कि अस्ले नूर (नूर की बुन्याद) हैं जिन की एक झलक से सब मलक (यानी फ़रिश्ते) बने क्यूंकर साए से मुनज़्ज़ा (यानी पाक) न होंगे। अजब (है) कि मलाइका (जो कि) मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से बने (वोह तो) बे साया हों और मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (जो) कि नूरे इलाही से बने, साया रखें।(11) 3 हम दावा ए हतमी करते हैं कि अगर इस (अदमे साया यानी साया ना होने के) बाब में कोई हदीस न आई होती, न किसी आलिम ने इस की तसरीह फ़रमाई होती, ताहम (फिर भी) ब मुलाहज़ा उन आयात व अहादीसे मुतकासिरा मुतवाफ़िरा मुतज़ाफ़िरा के जिन से बिल क़त्अ वल यक़ीन सरापा ए सैयदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नूर सिर्फ़ काने लताफ़त व जाने इज़ाअत होना साबित (है) (यानी जिन कसीर आयतों और हदीसों से क़तई व यक़ीनी तौर पर सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक जिस्म का सरापा नूर और लतीफ़ होना साबित होता है उन्हें देखते हुवे) हम हुक्म कर सकते कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिए साया न था।(12)

येही मन्ज़ूर था क़ुदरत को कि साया न बने *ऐसे यकता के लिए ऐसी ही यकताई हो*(13)

इजमाई मस्अला : हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : आक़ा ए दो आलम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बे साया होने के इतने दलाइल व अक़्वाल हैं कि अगर इस को इजमाई (मुत्तफ़िक़ा) मस्अला केह दिया जाए तो बेजा (ग़लत) न होगा।(14)

सच्चों के साथ हो जाएं : **अल्लाह** पाक ने ईमान वालों को येह हुक्म दिया है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ (۱۱۹)﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।(15) मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयत के तहत लिखते हैं : अच्छों का संग (यानी सोहबत) इख़्तियार करो कि इन से महब्बत रखो, उन के जैसे अक़ीदे, उन के जैसे आमाल करो कि वोह हज़रात हक़्क़ानियत (यानी सच्चाई) की दलील हैं।(16)

अल्लाह के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : اَلْبَرَکَۃُ مَعَ اَکَابِرِکُم यानी बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।(17)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस्लाम के इब्तेदाई दौर से आज तक तक़रीबन हर दौर में बड़े बड़े उ़लमा ए किराम और उम्मत के इमाम सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़दमे साया (परछाई ना होने) की ख़ुसूसियत का बयान फ़रमाते आए हैं। इन तमाम ह़ज़रात के नाम जम्अ़ करना और इन का ज़िक्र करना तो काफ़ी मुश्किल है, (मगर) ह़ुसूले बरकत के लिए इस त़वील (लम्बी) फ़ेहरिस्त में से सिर्फ़ 28 अकाबिरीने उम्मत के अस्मा ए गिरामी पेश हैं :

(1) ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना ज़कवान (101 हिजरी) (2) अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक मरवज़ी (181 हिजरी) (3) इमाम मुह़म्मद बिन अ़ली ह़कीम तिरमिज़ी शाफ़ेई (285 हिजरी) (4) इमाम ह़ुसैन बिन राग़िब अस्फ़हानी (450 हिजरी) (5) अबुल फ़ज़्ल इमाम क़ाज़ी इयाज़ मालिकी (544 हिजरी) (6) अ़ल्लामा निज़ामी गंजवी (594 हिजरी) (7) इमाम अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी (597 हिजरी) (8) आ़रिफ़े कामिल मौलाना जलालुद्दीन रूमी (672 हिजरी) (9) ह़ाफ़िज़ुद्दीन ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी ह़नफ़ी (710 हिजरी) (10) इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन अ़ब्दुल काफ़ी सुबुकी शाफ़ेई (756 हिजरी) (11) ह़ज़रते ख़्वाजा सैयद नसीरुद्दीन मह़मूद चराग़ देहल्वी चिश्ती निज़ामी (757 हिजरी) (12) शरफ़ुद्दीन अबू मुह़म्मद इमाम इस्माईल मुक़री यमनी शाफ़ेई (839 हिजरी) (13) नूरुद्दीन मौलाना अ़ब्दुर्रह़मान जामी (898 हिजरी) (14) इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई (911 हिजरी) (15) शारेह़े बुख़ारी इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी (923 हिजरी) (16) शैख़ुल इस्लाम इमाम ज़करिया अन्सारी शाफ़ेई (928 हिजरी) (17) इमाम मुह़म्मद बिन यूसुफ़ सालेह़ी शामी (942 हिजरी) (18) इमाम ह़ुसैन बिन मुह़म्मद दियार बिकरी (966 हिजरी) (19) आ़रिफ़ बिल्लाह इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शारानी (972 हिजरी) (20) इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की हैतमी शाफ़ेई (974 हिजरी) (21) मलिकुल मुह़द्दिसीन शैख़ मुह़म्मद बिन त़ाहिर सिद्दीक़ी पटनी क़ादरी (986 हिजरी) (22) अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्त़ान क़ारी ह़नफ़ी (1014 हिजरी) (23) इमाम मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी शाफ़ेई (1031 हिजरी) (24) ह़ज़रते शैख़ अह़मद सरहिन्दी फ़ारूक़ी नक़्शबन्दी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी (1034 हिजरी) (25) अ़ल्लामा अ़ली बुरहानुद्दीन ह़लबी (1044 हिजरी) (26) शैख़े मुह़क़्क़िक़ शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी (1052 हिजरी) (27) इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद ख़फ़ाजी मिसरी ह़नफ़ी (1069 हिजरी) (28) इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी मालिकी (1122 हिजरी) رضوان اللہ تعالٰی ورحمۃُ اللہ علیہم اجمعین

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूं रज़ा *बोल बाले मेरी सरकारों के*[18]

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! हमें अपने इन मेह़बूब बन्दों जैसे अ़क़ाइदो आमाल इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और अ़ज़मतो शाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुआ़मले में हर क़िस्म के शैत़ानी वस्वसों से नजात अ़त़ा फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) انموذج اللبیب، ص213 (2) قبالۂ بخشش، ص30 (3) الشفاء، 1/368 (4) سبل الہدیٰ والرشاد، 2/90 (5) فتاویٰ رضویہ، 30/701 (6) مکتوباتِ امام ربانی، 2/75، مکتوب:100
(7) سامانِ بخشش، ص132 (8) ترمذی، 4/140، حدیث:2319 (9) فتاویٰ رضویہ، 30/693 (10) الجزء المفقود من المصنف لعبدالرزاق، ص63، حدیث:18 (11) فتاویٰ رضویہ، 30/693
(12) فتاویٰ رضویہ، 30/746 (13) ذوقِ نعت، ص205 (14) رسائلِ نعیمیہ، ص105 (15) پ11، التوبۃ:119 (16) تفسیر نعیمی، 11/129 (17) مستدرک، 1/238، حدیث:218
(18) حدائقِ بخشش، ص360۔

तेह़रीरी मुक़ाबला "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के उ़नवानात (बराए नवम्बर 2021)

मज़मून भेजने की आख़री तारीख़ : 20 अगस्त 2021

1 फ़िरऔ़नियों पर आने वाले अ़ज़ाबात 2 ईसाले सवाब के 4 त़रीक़े 3 नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल

मज़ीद तफ़्सीलात के लिए इन नम्बरों पर राबत़ा करें :

फ़रियाद

दूसरों के वक़्त की क़द्र कीजिए

मौलाना मुहम्मद इमरान अ़त्तारी मदनी

जिस त़रह़ हमारे लिए हमारा वक़्त क़ीमती और अहम है कि हम इस की क़द्र करें, इसी त़रह़ दूसरों के लिए भी उन का वक़्त क़ीमती और अहम होता है। लेहाज़ा हमें अपने वक़्त की क़द्र के साथ साथ दूसरों के वक़्त की भी क़द्र करनी चाहिए और हर उस काम से बचना चाहिए जिस से दूसरों का वक़्त हमारी वज्ह से ज़ाएअ़ होता हो।

ख़त़ीब साह़िबान और मुबल्लिग़ीन से अ़र्ज़ है कि जुम्आ़ के दिन ख़त़ीब साह़ब का ख़ित़ाब सुनने और यूंही सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में मुबल्लिग़ का बयान सुनने के लिए आने वाले लोगों में से कोई 10 से 15 मिनट का सफ़र कर के आता है तो कोई आधे घन्टे और एक घन्टे का, बसा अवक़ात तो इजतेमाआ़त और तरबियती निशस्तों में शिर्कत के लिए लोग दूर दराज़ का सफ़र मसलन एक दिन का या एक दिन और एक रात का या फिर दो तीन दिनों का सफ़र कर के आए होते हैं, इन में से कई लोग ऐसे भी होते होंगे जो सिर्फ़ ख़ित़ाब व बयान सुनने के लिए अपना काम काज छोड़ कर आते होंगे, ऐसी सूरते ह़ाल में एक ख़त़ीब साह़ब और मुबल्लिग़ की येह ज़िम्मेदारी बनती है कि वोह लोगों के वक़्त की क़द्र करते हुवे उन के सामने सिर्फ़ मोतमद और मुस्तनद बातें ही बयान करें, और उन्हें उन की ज़रूरियात, प्रोफ़ेशन और त़र्ज़े मुआ़शरत के मुत़ाबिक़ दीनी तालीमात पहुंचाए, इस के लिए मोतबर उ़लमा ए एहले सुन्नत की किताबों का मुत़ालआ़ करें, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाली किताबें भी इस ह़वाले से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप मुफ़ीद पाएंगे, आप ह़ज़रात को अपने बयान के लिए मुत़ालआ़ कितना और कितनी देर करना चाहिए इस के लिए आप येह सोचें कि आप का बयान सुनने के लिए अगर 50 अफ़राद भी आते हैं और उन में से हर एक के आने जाने और बयान सुनने में दो दो घन्टे लगते हों तो मजमूई त़ौर पर 100 घन्टे हुवे, तो उन के 100 घन्टों के मुक़ाबले में उन को दीन सिखाने के लिए आप ह़ज़रात को कितनी देर और कितना मुत़ालआ़ करना चाहिए, 15 मिनट या 15 घन्टे ? 15 लाइनें पढ़नी चाहिएं या 15 सफ़ह़ात या फिर 15 किताबें, इस का फ़ैसला आप ख़ुद ही फ़रमा लें। **मेरी बस इतनी अ़र्ज़ है कि आप के पास आने वाले जब अपने घरों को लौटें तो उन्हें येह न लगे कि हमारा वक़्त ज़ाएअ़ हो गया, कुछ सीखने को न मिला या कुछ नया सीखने को न मिला।**

मुख़्तलिफ़ दुन्यावी और दीनी इन्स्टीट्यूट और इदारों में पढ़ाने वाले टीचर्ज़ से अ़र्ज़ है कि आप तो क़ौम के मेमार हैं, मुस्तक़बिल में मुल्को मिल्लत को संवारने वाले अपने वक़्त और अपनी ज़िन्दगी का एक बड़ा ह़िस्सा

नोट : येह मज़्मून निगराने शूरा की गुफ़्तगू वग़ैरा की मदद से तैयार कर के उन्हें चेक करवाने के बाद पेश किया गया है।

आप को देखते और आप की बातें सुनते हुवे गुज़ारते हैं, उन में से कई तो आप से इल्म ह़ासिल करने के लिए अपने घरों और वत़न से दूर, रूखी सूखी पर गुज़ारा कर के वक़्त गुज़ारते हैं, कई कई दिनों और महीनों तक सिर्फ़ आप से इल्म ह़ासिल करने के लिए अपनों से दूर रेहते हैं, ऐसी सूरते ह़ाल में आप की ज़िम्मेदारी मज़ीद बढ़ जाती है कि उन स्टूडन्ट्स के वक़्त की क़द्र करें, उन की पढ़ाई पर मुकम्मल तवज्जोह देने के साथ साथ उन के अख़्लाक़ियात संवारने की भी भरपूर कोशिश करें। आप के पढ़ाए हुवे से उन्हें येह न लगे कि शायद उस्ताद साह़ब पढ़ाने के लिए तैयारी नहीं करते, बस अपना वक़्त पूरा करने के लिए क्लास में आ जाते हैं, या फिर उस्ताद साह़ब को तो बस अपनी सेलेरी से मत़लब है, स्टूडन्ट्स का फ़्यूचर सफ़ेद (Bright) होता हो या सियाह (Dark) उस से उन का कोई लेना देना नहीं।

मोह़तरम मुबल्लिग़ीन व मुअ़ल्लिमीन ! जब भी दूसरों को कुछ सिखाना और बयान करना हो तो इस के लिए पेहले तैयारी ज़रूर करें और इस में भी पेहले आप येह देखें कि आप का बयान सुनने वाले कौन और किस लेवल के लोग होंगे, उ़लमा में बयान करने के लिए मवाद अलग होगा जबकि आ़म लोगों में बयान की जाने वाली बातें अलग होंगी, दुन्यवी और दीनी त़ौर पर पढ़े लिखे लोगों में अलग अलग त़र्ज़ का बयान होगा।

मवाद की अहमियत व ज़रूरत के साथ साथ इस बयान करने की तरतीब का भी ख़ास ख़याल रखना ज़रूरी है। तम्हीद क्या बनानी है और मौज़ूअ़ को कहां तक निभाना है, तरग़ीब कहां बयान करनी है, और जिस मक़्सद के ह़ुसूल के लिए सामेईन को जम्अ़ किया गया वोह कहां वाज़ेह़ करना है उसे यूं समझिए कि जिस त़रह़ बीज बोने के लिए पेहले ज़मीन में हल चलाना, उसे नर्म करना होता है फिर जा कर बीज डाला जाता है, बयान की तरतीब में भी इस बात का ख़याल रखना होता है। जब आप दो से तीन मरतबा इस त़रह़ तैयार कर के बयान करेंगे तो **अल्लाह** पाक की रेह़मत से फिर आप को आइन्दा इस त़रह़ बयानात करने में ज़्यादा दिक़्क़त पेश नहीं आएगी।

इसी त़रह़ जहां दूसरों के वक़्त की क़द्र के लिए मुत़ालआ़ करना, मज़ीद और मज़ीद सीखते और पढ़ते रेहना ज़रूरी है इसी त़रह़ अपने इल्म पर अ़मल करना भी बहुत ज़रूरी है, येह भी ह़क़ीक़त है कि अपने इल्म पर अ़मल करना जहां हमारे अपने लिए मुफ़ीद है वहीं दूसरों के लिए भी मुफ़ीद है। मुबल्लिग़ीन, वाइज़ीन और असातेज़ा जिस क़दर बा अ़मल होंगे लोग भी उसी क़दर उन की नसीह़तें क़बूल करेंगे और इस के साथ साथ दीगर फ़वाइद भी ह़ासिल होंगे जैसा कि ह़दीसे पाक में है : مَنْ عَمِلَ بِمَا عَلِمَ عَلَّمَهُ اللّٰهُ مَا لَمْ يَعْلَم यानी जो शख़्स अपने इल्म पर अ़मल करे, **अल्लाह** उसे वोह भी सिखा देता है जो वोह नहीं जानता।[1]

नीज़ अगर आप ग़ैर आ़लिम हैं और बयान करना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप दर्जे ज़ैल हिदायात पर भी अ़मल करें।

मेरे शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دامت بركاتهم العاليه इरशाद फ़रमाते हैं : ग़ैर आ़लिम के बयान की आसान सूरत येह है कि उ़लमा ए एहले सुन्नत की किताबों से ह़स्बे ज़रूरत फ़ोटो कोपियां करवा कर उन के तराशे अपनी डायरी में चस्पा कर ले और इस में से पढ़ कर सुनाए। मुंह ज़बानी कुछ न कहे नीज़ अपनी राए से हरगिज़ किसी आयते करीमा की तफ़्सीर या ह़दीसे पाक की शर्ह़ वग़ैरा बयान न करे। क्यूंकि तफ़्सीर बिर्राए[2] ह़राम है और अपनी अटकल के मुत़ाबिक़ आयत से इस्तिदलाल यानी दलील पकड़ना और ह़दीसे मुबारक की शर्ह़ करना अगर्चे दुरुस्त हो तब भी शरअ़न इस की इजाज़त नहीं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم है : जिस ने बग़ैर इल्मे कुरआन की तफ़्सीर की वोह अपना ठिकाना जहन्नम बनाए।[3] ग़ैर आ़लिम के बयान के बारे में रेहनुमाई करते हुवे मेरे आक़ा ए नेमत, आला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمة الله تعالى عليه फ़रमाते हैं : जाहिल उर्दू ख़्वा अगर अपनी त़रफ़ से कुछ न कहे बल्कि आ़लिम की तस्नीफ़ पढ़ कर सुनाए तो इस में ह़रज नहीं।[4]

मेरी तमाम आ़शिक़ाने रसूल से **फ़रियाद** है ! अपनी दुन्या ओ आख़ेरत की बेहतरी के साथ साथ दूसरों की भी दुन्या ओ आख़ेरत बेहतर करने की कोशिशों में लगे रहें, दर्सो बयान और दीगर सीखने सिखाने की निशश्तों को फ़ुज़ूलियात और वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले कामों से पाक करें, अपने वक़्त की क़द्र के साथ साथ दूसरों के वक़्त की भी क़द्र करें। **अल्लाह** पाक हमें अ़मल की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِيْن صلى الله عليه واله وسلم

---

(1) حلیۃ الاولیاء، 10/13، حدیث:1432

(2) तफ़्सीर बिर्राए करने वाला वोह केहलाता है जिस ने कुरआन की तफ़्सीर अ़क़्ल और क़यास (अन्दाज़े) से की, जिस की नक़्ली (यानी शरई) दलील व सनद न हो।

(3) ترمذی، 4/439، حدیث:2969 (4) فتاوٰی رضویہ، 23/409۔

कैसा होना चाहिए ?

रसूले करीम صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم का समझाने का अन्दाज़

मौलाना अबुन्नूर राशिद अ़ली अ़त्तारी मदनी

तलबा को कुछ भी ज़ेहन नशीन करवाने के लिए सब से ज़्यादा अहमियत अन्दाज़े तफ़्हीम (यानी समझाने के अन्दाज़) की है। येही वोह हुनर है जो अ़मले तालीम को परवान भी चढ़ाता है और इस की कमी नुक़्सान भी पहुंचाती है। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपनी बात को समझाने के लिए मुतअ़द्दद तरीक़े अपनाते थे मसलन : **बात वाज़ेह** (Clear) **करना और हस्बे ज़रूरत दोहराना** (Repetition)। आक़ा ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी कोई बात करते तो साफ़ और वाज़ेह अन्दाज़ में फ़रमाते और किसी ख़ास बात की अहमियत के सबब या समझाने की ग़रज़ से दो या तीन बार भी दोहराते चुनान्चे रिवायत है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतना ठेहर ठेहर कर गुफ़्तगू फ़रमाते कि आप के पास बैठा हुवा शख़्स उसे याद कर लेता। जबकि एक रिवायत में है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लफ़्ज़ को तीन बार दोहराते थे ताकि उसे समझ लिया जाए। (ترمذی، 5/366، حدیث: 3659، 3660) मदीने शरीफ़ के बारे में फ़रमाया : هِیَ طَابَۃُ، هِیَ طَابَۃُ (مسند احمد، 6/409، حدیث: 18544)

मिसालों से समझाना क़ुरआने करीम, अह़ादीसे करीमा और इन्सानी फ़ित़रत गवाह है कि कोई भी बात मिसाल के ज़रीए समझाई जाए तो बहुत जल्द समझ आ जाती और देर तक ज़ेहन नशीन रेहती है। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मिसालें दे कर समझाते जैसा कि 1 ह़ज़रते सैयदना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौसमे सरमा (पतझड़) में बाहर तशरीफ़ लाए जबकि दरख़्तों के पत्ते झड़ रहे थे तो आप ने एक दरख़्त की टेहनी पकड़ कर उस के पत्ते झाड़ते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं ह़ाज़िर हूं। इरशाद फ़रमाया : **बेशक जब कोई मुसलमान अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे इस दरख़्त के पत्ते झड़ रहे हैं।** (مسند احمد، 8/133، حدیث: 21612)

2 ह़ज़रते सैयदना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र छोटे कान वाले बकरी के एक मुर्दा बच्चे के पास से हुवा, कुछ सह़ाबा ए किराम भी आप के हमराह थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का कान पकड़ा और फ़रमाया : तुम में से कौन इसे एक दिरहम में ख़रीदना चाहेगा। लोगों ने अ़र्ज़ की : हम इसे किसी भी चीज़ के बदले में लेना पसन्द नहीं करते, हम इस का क्या करेंगे ? तो इरशाद फ़रमाया : क्या तुम पसन्द करते हो कि येह तुम को मिल जाए। उन्हों ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक की क़सम ! अगर येह ज़िन्दा होता तब भी इस में ऐ़ब था कि इस का एक कान छोटा है और अब जबकि येह मर चुका है तो कोई इसे कैसे लेगा ? हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह पाक की क़सम ! जैसे तुम्हारी नज़रों में येह मुर्दा बच्चा कोई वुक़्अ़त (हैसियत) नहीं रखता अल्लाह पाक के नज़दीक दुन्या इस से भी ज़्यादा ह़क़ीर है।**

(مسلم، ص1210، حدیث: 7418)

समझाने के लिए सवाल करना बाज़ बातें सवालिया अन्दाज़ में समझाना मुफ़ीद होती हैं, यानी अगर किसी चीज़ की अहमियत बयान करनी हो, अहम बात

समझानी हो या कोई त़ालिबे इ़ल्म सवाल करे तो जवाबन त़लबा से ऐसा सवाल करना जिस का जवाब वोह जानते भी हों और उस का बताई जाने वाली बात से तअ़ल्लुक़ भी हो जैसा कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के ज़रीए़ गुनाहों के ख़त्म होने की एक मिसाल बयान फ़रमाते हुवे सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : भला बताओ कि अगर किसी के दरवाज़े पर नेहर हो और उस में वोह रोज़ाना पांच मरतबा नहाता हो तो क्या उस के बदन पर कुछ मैल बाक़ी रेह जाएगा ? सह़ाबा ए किराम ने अ़र्ज़ की : उस के जिस्म पर कुछ भी मैल बाक़ी नहीं रहेगा। हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह मिसाल पांचों नमाज़ों की है। **अल्लाह** पाक इस के ज़रीए़ गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता है।

(بخاری،1/196،حدیث:528)

इसी त़रह़ एक मौक़ेअ़ पर मोमिन की शानो अ़ज़मत समझाने के लिए सवाल फ़रमाया : मोमिन की मिसाल उस दरख़्त की सी है जिस के पत्ते नहीं गिरते, बताओ वोह कौन सा दरख़्त है ? ह़ाज़रीन मुख़्तलिफ़ दरख़्तों के नाम अ़र्ज़ करने लगे। ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बहुत ज़हीन थे, फ़रमाते हैं कि मेरे ज़ेहन में आ गया कि खजूर का दरख़्त है लेकिन मैं ने बताने से ह़या मेह़सूस की। फिर ह़ाज़रीन ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप ही इरशाद फ़रमा दीजिए तो हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह खजूर का दरख़्त है। (مسلم،ص1157،حدیث:7098)

हाथ के इशारे से समझाना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी किसी बात को समझाने के लिए अपने हाथ के ज़रीए़ इशारे भी फ़रमाया करते थे, चुनान्चे यतीम बच्चों की परवरिश करने वाले के दरजे को बयान करते हुवे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस त़रह़ होंगे। फिर अपनी शहादत वाली और दरमियान वाली उंगली से इशारा फ़रमाया। (بخاری،3/497،حدیث:5304)

त़लबा के लिए दुआ़ करना इ़ल्म और त़ालिबे इ़ल्म से इख़्लासो मह़ब्बत रखने वाले उस्ताज़ का एक वस्फ़ येह भी होता है कि वोह अपने त़लबा की कामयाबी के लिए बारगाहे इलाही में दुआ़ करता है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत में कई ऐसे वाक़ेआ़त मिलते हैं चुनान्चे ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे (सीने) लगाया और कहा : ऐ **अल्लाह** ! इस को किताब यानी क़ुरआने करीम का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा।

(بخاری،1/44،حدیث:75)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन बयान कर्दा मिसालों और अह़ादीस के इ़लावा भी रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत में एक उस्ताज़ के लिए बहुत सारे मदनी फूल हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तालीमो तब्लीग़ के दौरान इन्तेहाई नर्मी और शफ़्क़त का मुज़ाहरा फ़रमाते थे, जिस के सबब हर एक पर ख़ुश गवार असर पड़ता था और सीखने के बाद इस पर अ़मल करने में एक लज़्ज़त मेह़सूस करता। एक कामयाब उस्ताज़ के लिए इन त़रीक़ों को अपनाने के साथ साथ ज़रूरी है कि वोह ख़ुद मुख़्तलिफ़ ख़ूबियों और पाकीज़ा सीरत व किरदार का ह़ामिल हो ताकि उस की शख़्सियत त़ालिबे इ़ल्मों की ज़िन्दगी में इन्क़ेलाब बरपा कर सके और साथ ही वोह अपने शागिर्दों के साथ नर्मी और मह़ब्बत का रवय्या अपनाए, ग़ैर अख़्लाक़ी व ग़लत़ ह़रकतों के सादिर होने पर मार पीट करने, गालियां देने, बे वुक़ूफ़, ना हंजार वग़ैरा नाज़ेबा कलेमात केहने के बजाए नर्मी और मह़ब्बत से समझाए। उन के **लायानी** (बेकार–फ़ालतू) एतेराज़ात पर मज़ाक़ उड़ाना और गेहरे एतेराज़ात पर झुन्झलाहट की कैफ़ियत का त़ारी हो जाना, सीरते नबवी के सरासर ख़िलाफ़ है। नीज़ ख़ुद ग़रज़ी और मालो दौलत के हु़सूल को मक़्सदे अस्ली बनाने के बजाए त़लबा की ख़ैर ख़्वाही और अच्छे मुस्तक़बिल (Bright future) को अपना मुत़म्मह़े नज़र (Target) बनाएं। **अल्लाह** करीम हम सब को मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तबसेरे

मौलाना अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत़्त़ारी मदनी

केहते हैं कि किसी शख़्स के पास एक गधा था। एक दिन वोह उसे बेचने के लिए चला तो उस का बेटा भी साथ हो लिया। रास्ते में एक जगह औ़रतें कुवें से पानी भर रही थीं, बाप बेटे को गधे के साथ पैदल चलता देख कर आपस में केहने लगीं कि येह **दोनों कितने नादान (यानी ना समझ) हैं कि सवारी पास होते हुवे भी पैदल जा रहे हैं!** येह तबसेरा (Comment) बाप ने सुन लिया और बेटे से केहने लगा : तुम गधे पर बैठ जाओ, मैं पैदल चलता हूं। अभी थोड़ी दूर ही गए होंगे कि चन्द बड़ी उ़म्र के लोग मिले जो इन्हें देख कर केहने लगे : **देखो जी ! क्या ज़माना आ गया है कि बूढ़ा बाप पैदल चल रहा है और बेटा सवारी के मज़े ले रहा है!** येह सुन कर बेटा सवारी से नीचे उतर आया और इसरार कर के बाप को सवार करा दिया, थोड़ा आगे चले तो इन्हें जवानों का एक ग्रुप मिला जो इन्हें देख कर केहने लगा : **कितना संगदिल बाप है कि ख़ुद सवारी पर बैठा है और बेटे को पैदल चला रहा है!** येह सुन कर बाप ने बेटे को अपने साथ सवारी पर बिठा लिया, अभी इन्हों ने थोड़ा ही फ़ासला त़ै किया था कि इन्हें कुछ और लोग मिले जिन में से एक शख़्स ने तबसेरा (Comment) किया : **मियां ! मुझे नहीं लगता कि येह गधा तुम्हारा है! क्यूंकि येह मर मर कर (यानी बहुत मुश्किल से) चल रहा है और तुम दोनों इस पर मज़े से चढ़े बैठे हो!**

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के क़ारेईन ! किसी की ज़ात, सिफ़ात, लिबास, अन्दाज़े गुफ़्तगू, चाल ढाल काम काज, रहन सहन और कारकर्दगी वग़ैरा के बारे में तबसेरे करना हमारे यहां आ़म है और इसे अपना ह़क़ समझा जाता है। घरों, दफ़ातिर, फ़ेक्ट्रियों, बाज़ारों, मीडिया और सोश्यल मीडिया वग़ैरा में अच्छे बुरे हर त़रह़ के तबसेरे हो ही रहे होते हैं। इन तबसेरों का निशाना हमारी अपनी औलाद या बीवी भी हो सकती है और ऑफ़िस में साथ काम करने वाले भी ! दुकानदार भी हो सकता है और गाहक भी ! फिर येह तबसेरे मुस्बत (Positive) भी होते हैं और मन्फ़ी (Negative) भी ! याद रखिए ! हमारा तबसेरा किसी को बिगाड़ भी सकता है और संवार भी ! येह किसी को परेशानी भी दे सकता है और आसानी भी ! मायूसी का शिकार होने वाला हमारे मुस्बत तबसेरे से कामयाबी की तलाश में निकल सकता है, किसी को तरक़्क़ी करने का जज़्बा मिल सकता है, उस की महारत (Skill) में इज़ाफ़ा हो सकता है, कोई जन्नत में ले जाने वाले रास्ते पर चल सकता है और हमारा एक मन्फ़ी तबसेरा **''गिरती हुई दीवार को एक धक्का और दो''** का किरदार अदा कर के किसी को ख़ुदकुशी पर मजबूर कर सकता है, किसी का हंसता बसता घर उजाड़ सकता है, किसी का केरियर तबाहो बरबाद कर सकता है।

उस्ताज़, पीर, मां-बाप, ख़ानदान वालों के तबसेरे (Comments) इन्सान के लिए ज़्यादा अहमियत रखते हैं, इस लिए हमें येह ख़याल रखना चाहिए कि हम कहां, कब और किस के बारे में, किस के सामने क्या कमेन्ट कर रहे हैं ! इस के साथ साथ येह तबसेरे हमारी मुस्बत या मन्फ़ी सोच भी ज़ाहिर करते हैं और हमारी शख़्सियत का तआ़रुफ़ भी करवाते हैं कि हम किस क़िस्म के इन्सान हैं ! इस लिए जब किसी के बारे में तबसेरा करने लगें तो **''पेहले तोलो बाद में बोलो''** के उसूल पर अ़मल कर लीजिए, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदे में रहेंगे। इन मिसालों की मदद से अपने तबसेरे के मुस्बत या मन्फ़ी होने का फ़ैसला करना क़द्रे आसान हो जाएगा :

मुस्बत तबसेरे की 20 मिसालें : वोह तबसेरे जिस में किसी की ह़ौसला अफ़्ज़ाई की गई हो, किसी को तसल्ली दी गई हो या हिम्मत दिलाई गई हो जैसे : (1) ख़ूब (2) शानदार (3) मुझे आप की बात पसन्द आई (4) आप का अन्दाज़े गुफ़्तगू अच्छा लगा (5) आप की कारकर्दगी पेहले से बेहतर है (6) आप ने जो नात शरीफ़ पढ़ी उस की त़र्ज़ मुन्फ़रिद थी (7) आप ने इस उ़नवान पर अच्छे पोइन्टस बयान किए (8) आप से मिल कर ख़ुशी हुई (9) आप का बयान मालूमाती था (10) आप की किताब दिलचस्प है (11) आप ने बड़ा उ़म्दा डिज़ाइन बनाया है (12) आप का बनाया हुवा खाना बहुत मज़ेदार है, मैं तो उंगलियां चाटता रेह गया (13) आप के घर की सफ़ाई देखने के लाइक़ है (14) आप की शख़्सियत (Personality) शानदार है (15) नाकामी कामयाबी का ज़ीना (यानी सीढ़ी) होती है (16) हिम्मत न हारें हर मुश्किल के बाद आसानी है (17) गिरते हैं शेहसवार ही मैदान में (यानी ग़लत़ी कुछ करने वालों से ही होती है, आप उन से तो बेहतर हैं जो कुछ करने का ह़ौसला ही नहीं रखते) (18) सुब्ह़ का भूला शाम को आ जाए तो उसे भूला नहीं केहते (यानी ग़लत़ी करने वाला अगर अपनी ग़लत़ी दुरुस्त कर ले तो उसे बुरा नहीं केहना चाहिए) (19) जब जागे हुवा सवेरा (यानी अपनी ग़लत़ी का एह़सास होने पर मायूस होने के बजाए उसे ठीक करने की कोशिश करनी चाहिए) (20) सब्र का फल मीठा होता है (मत़लब : जल्दी नहीं मचानी चाहिए, सब्र का नतीजा अच्छा होता है)

एह़तियात़ कीजिए : येह ख़याल रहे कि मुस्बत तबसेरा करते वक़्त झूट से भी बचा जाए, झूट वोह जो सच का उलट हो इस लिए वोही बात कही जाए जो सच हो। "बहुत पसन्द आया" उसी वक़्त बोलिए जब "बहुत" पसन्द आया हो, वरना सिर्फ़ "पसन्द आया" कहिए, समझदार के लिए इशारा ही काफ़ी है। इसी त़रह़ तबसेरा करते वक़्त निय्यत का ख़याल रखिए क्यूंकि दिलजोई, ह़ौसला अफ़्ज़ाई, ढारस, तसल्ली और चीज़ है जबकि ख़ुशामद और चीज़ !

सेन्डविच टेक्निक (Sandwich technique) : मुस्बत तबसेरे को किसी की इस्लाह़ (दुरुस्ती) के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है, इसे सेन्डविच टेक्निक भी केहते हैं वोह इस त़रह़ कि पेहले उस के काम की सच्ची तारीफ़ कर दीजिए फिर जिस ख़ामी की निशानदेही करना हो उसे अच्छे लेहजे और अल्फ़ाज़ में बयान कर दीजिए और आख़िर में उसे दुआ़ओं से नवाज़ दीजिए।

मन्फ़ी तबसेरे की 34 मिसालें : वोह तबसेरा जो किसी की ह़ौसला शिकनी का सबब बने, उस की हिम्मत तोड़ दे, उसे मायूस कर दे या उस का दिल दुखाने का सबब बने मसलन (1) तुम्हें न जाने कब अ़क़्ल आएगी (2) येह तुम्हारी ना एहली है (3) तुम हमेशा लेट आते हो (4) इस नाकामी के ज़िम्मेदार तुम ख़ुद हो (5) तुम्हारा रवैया अफ़्सोस नाक है (6) मुझे पेहले ही डर था कि तुम काम बिगाड़ दोगे (7) येह काम तुम्हारे बस की बात नहीं (8) बे वुक़ूफ़ी की भी कोई ह़द होती है (9) तुम से मिल कर मुझे ज़रा भी ख़ुशी नहीं हुई (10) तुम्हें देख कर मेरा ख़ून खोलने लगता है (11) तुम्हें नौकरी तो मिलनी नहीं पकोड़ों की रेढ़ी (लारी) लगा लो (12) तुम्हारे दिमाग़ में भुस भरा हुवा है (यानी तुम बहुत बे वुक़ूफ़ हो) (13) सिर्फ़ पास हो कर तुम ने कौन सा तीर मार लिया है पोज़ीशन लेते तो कुछ और बात होती (14) आप का मज़्मून सत़ह़ी नौइ़यत का है (15) लम्बी लम्बी मत छोड़ो (यानी झूट नहीं बोलो) (16) आप ख़ुशामद कर रहे हो (17) तुम मुझे उल्लू (यानी बे वुक़ूफ़) बना रहे हो (18) तुम मत़लबी हो (19) लालची हो (20) तुम धोके बाज़ हो (21) तुम से ख़ैर की उम्मीद नहीं (22) तुम ने ख़ुद अपने पाउं पर कुलहाड़ी मारी है (यानी अपना नुक़्सान ख़ुद किया है) (23) तुम नहीं बदल सकते (24) इन तिलों में तेल नहीं (यहां काम नहीं बनेगा) (25) लौट के बुद्धु घर को आए (ग़लत़ियों के सबब, वहीं वापस आ गए जहां से चले थे) (26) कव्वा चला हंस की चाल अपनी भी भूल गया (जब कोई किसी मालदार या साह़िबे हैसियत आदमी की रेस (पैरवी) कर के नुक़्सान उठाए तो उस वक़्त केहते हैं) (27) येह मुंह और मसूर की दाल (तुम इस लाइक़ नहीं) (28) काम का न काज का दुश्मन अनाज का (सुस्त और काहिल आदमी जिस का खाने के सिवा और कोई काम न हो) (29) मुफ़्त की रोटियां कब तक तोड़ोगे (30) वोह अंधी चलाता है (यानी अपनी मर्ज़ी करता है) (31) मीठा मीठा हप और कडवा कडवा थू (जो ख़ुद को पसन्द हो उसे क़बूल और जो पसन्द न हो उसे क़बूल नहीं करते) (32) अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे (येह उस वक़्त बोलते हैं जो किसी के क़ाबू में न आता हो, फिर किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाए) (33) रस्सी जल गई मगर बल न गया (यानी शानो शौकत चली गई (लेकिन) तकब्बुर न गया) (34) तुम्हारी गर्दन में सरया आ गया है (यानी तुम तकब्बुर करने लगे हो)

मन्फ़ी तबसेरा करते वक़्त ग़ीबत, बोहतान और दिल आज़ारी से बचना बहुत दुश्वार है, चुनान्चे इस से बचने ही में आ़फ़ियत है। मौला करीम हमें ज़बान की एह़तियातें अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मौलानल उस्ताज़ यह्या रज़ा अशरफ़ी

यौमे आज़ादी मुबारक हो

वतन से महब्बत के तकाज़े

हमारा वत्न (मुल्क) हमारी पेहचान है, हम दुन्या के किसी भी ख़ित्ते में चले जाएं हमारी पेहचान इसी से है। येह वत्न हमारे लिए एक घर की मानिन्द ही नहीं बल्कि ह़क़ीक़तन एक घर है। किसी से भी पूछा जाए कि क्या आप को अपने वत्न से मह़ब्बत है तो यक़ीनन उस का जवाब **"हां"** में होगा। वत्न **अल्लाह** की नेमत है तो इस नेमत से मह़ब्बत के कुछ तक़ाज़े भी हैं चुनान्चे हम में से हर एक को चाहिए कि इन तक़ाज़ों को पूरा करे और मुल्क की तामीर व तरक़्क़ी में अपना अपना ह़िस्सा मिलाए।

वत्न से मह़ब्बत का तक़ाज़ा है कि ....

- हम शरीअ़त के दाइरे में रेहते हुवे अपने मुल्क के क़वानीन पर अ़मल करें।
- ट्रेफ़िक़ क़वानीन की पाबन्दी करें और राह चलते, ड्राइविंग करते हुवे अपने वत्न की फ़ज़ा की ह़िफ़ाज़त की कोशिश करें। गाड़ियों की वोह तमाम ख़राबियां जिन की वज्ह से फ़ज़ा में धुवां फैलता है उन्हें दुरुस्त करवाएं।
- अपने वत्न की सड़कों पर ऐसा सामान मसलन सरया, लोहे के बड़े बड़े औज़ार वग़ैरा न घसीटे जो सड़कों के टूटने और ख़राब होने का बाइ़स बने।
- रोड, ट्रेन की पटरी, बिजली के तार और गेस के पाइप वग़ैरा कहीं से ख़राब हों और उस से हमारे वत्न और हम वत्नों (देशवासियों) को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा हो तो मुतअ़ल्लिक़ा मोह़कमे (प्रशासन) को इस की इत्तेलाअ़ ज़रूर दें।
- कचरा वग़ैरा सड़कों और गलियों में फैंक कर अपने वत्न की ख़ूब सूरती तबाह और बीमारियों में इज़ाफ़ा न करें। मुसलमान के लिए तो त़हारत, पाकीज़गी और सफ़ाई व सुथराई का हुक्म है बल्कि सफ़ाई को ईमान का ह़िस्सा क़रार दिया गया है।

हम वत्नों (देशवासियों) को किसी भी मुआमले में हमारी मदद की ज़रूरत हो तो जहां तक मुमकिन नज़र आए उन के काम आएं, रोड एक्सीडन्ट में उन का सहारा बनें, ग़रीब हम वत्नों (देशवासियों) की ज़रूरतों का ख़याल रखें।

किसी हम वतन (देशवासी) की कोई गिरी हुई चीज़ आप को मिले तो उसे ब हिफ़ाज़त उस तक पहुंचाने की कोशिश करें अगर मालूम न हो तो शरई तौर पर जो "लुक्ते" के एहकाम हैं उन के मुताबिक़ अमल करें।(1)

ख़रीदारी में अपने मुल्के अज़ीज़ की प्रोडक्ट्स को तरजीह दें, बिला वज्ह मुल्की मस्नूआत की बुराई न करें, बल्कि दूसरों को भी अपने मुल्क की मसनूआत (Products) ख़रीदने का ज़ेहन दें।

सरकारी इदारे और उन का सामान हमारे वत्ने अज़ीज़ का सामान है, इसे किसी क़िस्म का नुक़्सान न पहुंचाएं।

अगर आप सरकारी मुलाज़िम (Government servant) हैं तो याद रखें कि आप इस वत्ने अज़ीज़ के खुसूसी नुमाइन्दे हैं इस लिए आप के लिए ज़्यादा ज़रूरी है कि इस की इमलाक व अश्या (सरकारी मिलकत) का दुरुस्त इस्तेमाल करें।

गलियों में स्ट्रीट लाइट्स वग़ैरा जलती हैं और इस के लिए यक़ीनन हमारे मुल्क की बिजली ख़र्च होती है, वतन से महब्बत के तक़ाज़े के पेशे नज़र कोशिश करें कि कहीं भी फ़ुज़ूल जलती हुई लाइट मिले मसलन दिन का उजाला फैल चुका है और लाइटें अभी जल रही हैं तो उन्हें ऑफ़ करें या करवाएं।

वत्ने अज़ीज़ के उलमा ए एहले सुन्नत, आशिक़ाने रसूल के मदारिस, जामेआत और दीनी इदारे येह मुल्क से पुर ख़ुलूस महब्बत करते और सिखाते भी हैं और दीनी तालीमात भी देते हैं, हमें दीन और वतन दोनों की ज़रूरत है चुनान्चे अपने बच्चों को इन दीनी इदारों में तालीम दिलवाएं, इन दीनी इदारों के साथ तआवुन करें, इन की आबादकारी और ख़ुशहाली हक़ीक़तन अपने वत्ने अज़ीज़ के मुहिब्बीन व वफ़ादार अफ़राद बढ़ाने के मुतरादिफ़ है।

अगर आप बैरूने मुल्क मुक़ीम हैं तो वहां किसी भी ऐसी एक्टिवीटी (प्रवृत्ति) का हिस्सा न बनें जो आप के मुल्क की बदनामी का सबब बने।

ताजिरों और सेठों को चाहिए कि अपने मुलाज़िमीन का हक़ न दबाएं, जबकि मुलाज़िमीन को चाहिए कि सुस्ती, काम चोरी और अपनी ज़िम्मेदारियों में कोताही न करें, जब हम सब अपनी अपनी ज़िम्मेदारियां पूरी करेंगे, दूसरों के हुक़ूक़ अदा करेंगे तो एक मज़बूत और बाहम महब्बत रखने वाला मुआशरा पैदा होगा, यही मुआशरा वत्ने अज़ीज़ की तरक़्क़ी का सबब भी बनेगा।

वत्ने अज़ीज़ का कोई फ़र्द अगर कोई ग़लत हरकत करे, मुआशरती, मुआशी या अख़्लाक़ी एतेबार से क़ाबिले गिरफ़्त मुआमलात में शामिल हो तो उसे समझाने, राहे रास्त पर लाने और अगर ज़रूरी हो तो उस से ऊपर के इदारे या फ़र्द को इत्तेलाअ़ देने की कोशिश ज़रूर करें मगर उस की वीडियो और तसवीरें बना कर, पोस्टें लिख कर सोश्यल मीडिया पर आम न करें, क्यूंकि अगर वोह शख़्स गुनाह कर रहा है तो इस तरह वाइरल करने से एक तो गुनाह की इशाअ़त (Advertise) होगी जो ख़ुद गुनाह है और दूसरा अपने ही वतन की बदनामी होगी।

अल्लाह पाक हमें अपने **वतन (मुल्क)** से महब्बत और इस की तामीर व तरक़्क़ी के लिए ख़ूब मेहनत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(1) जिसे "लुक़्ता" यानी कोई गिरी पड़ी चीज़ मिले तो उस पर तशहीर लाज़िम है यानी बाज़ारों और शारेए आम और मसाजिद में उतने ज़माने तक एलान करे कि अब ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि मालिक अब तलाश न करता होगा। येह मुद्दत पूरी होने के बाद उसे इख़्तियार है कि लुक़्ते की हिफ़ाज़त करे या किसी मिस्कीन पर सदक़ा कर दे। मज़ीद तफ़्सील के लिए बहारे शरीअ़त, हिस्सा 10, सफ़्हा 471 पर लुक़्ते का बयान पढ़िए

इस्मे गिरामी "नबिय्युत्तौबह" और 17 इल्मी निकात (क़िस्त् : 08)

मौलाना अबुन्नूर राशिद अ़ली अ़त्तारी मदनी

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी) . . . .

इमामे एहले सुन्नत, हुज़ूर सैयदी आला ह़ज़रत इमामे अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नामे मुबारक "नबिय्युत्तौबह" की 13 तौजीहात शुरूह़ाते ह़दीस और कुतुबे सीरत से जबकि 4 तौजीहात अपनी जानिब से ज़िक्र फ़रमाई हैं, चुनान्चे आप लिखते हैं : "नामे मुबारक" नबिय्युत्तौबह अ़जब जामेअ़ व कसीरुल मनाफ़ेअ़ नामे पाक है, इस की तेरह तौजीहें फ़क़ीर غفرلہ المولی القدیر ने शर्हे सह़ीह़ मुस्लिम लिल इमामुन्नववी व शर्हुश्शिफ़ा लिल क़ारी वल ख़फ़ाजी व मिरक़ात व अशिअ़तुल लमआ़त शुरूहे़ मिश्कात् व तैसीर व सिराजुल मुनीर व ह़फ़नी शुरूहे़ जामेए़ सग़ीर व जमउ़ल वसाइल शर्हे़ शमाइल व मत़ालेउ़ल मसर्रात व मवाहिब व शर्हे़ जुरकानी व मजमउ़ल बह़ार से इल्तेक़ात् कीं और चार ब तौफ़ीके़ **अल्लाह** तआ़ला अपनी त़रफ़ से बढ़ाई सब सतरह(17) हुईं, بَعْضُهَا اَمْلَحُ مِنْ بَعْضٍ وَاَحْلٰی (इन में हर एक दूसरी से लज़ीज़ और मीठी है)

यहां उन 17 तौजीहात को खुलासतन पेश किया जाता है :

1 हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिदायत से आ़लम (जहान यानी बहुत बड़ी तादाद) ने तौबा और रुजूअ़ इलल्लाह की दौलतें पाईं, फ़ौरन छोड़ देना और आइन्दा

न करने का अ़ज़्म काफ़ी हुवा नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुज़ूर की आवाज़ पर मुतफ़र्रिक़ जमाअ़तें, मुख़्तलिफ़ उम्मतें **अल्लाह** पाक की त़रफ़ पलट आईं।

2 रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से ख़लाइक़ को तौबा नसीब हुई, पेहली और इस तौजीह में फ़र्क़ है यानी हिदायत नाम है रास्ता दिखाने और दावत देने का जबकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत मिलने से मुराद तौबा की तौफ़ीक़ नसीब होना है।

3 जिस क़दर लोगों ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ पर तौबा की दीगर अम्बिया ए किराम के हाथों पर न हुई। सह़ीह़ ह़दीसों से साबित (है) कि रोज़े क़ियामत येह उम्मत सब उम्मतों से शुमार (गिनती) में ज़्यादा होगी, न फ़क़त़ हर एक उम्मत जुदागाना बल्कि मजमूआ़ जमीअ़ उमम से, एहले जन्नत की एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिन में بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰى अस्सी (80) हमारी और चालीस (40) में बाक़ी सब उम्मतें, وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

4 आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तौबा का हुक्म ले कर आए।

5 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से क़बूले तौबा की बिशारत लाए।

6 आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तौबा ए आ़म लाए हर नबी सिर्फ़ अपनी क़ौम के लिए तौबा लाए, जबकि आप तमाम जहान से तौबा लेने आए।

7 बल्कि तौबा का हुक्म वोही ले कर आए कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सब इन के नाइब हैं तो रोज़े अव्वल से आज तक और आज से क़ियामत तक जो तौबा ख़ल्क़ से त़लब की गई या की जाएगी, वाक़ेअ़ हुई या वुक़ूअ़ पाएगी। सब के नबी, हमारे नबिय्युत्तौबह हैं।

8 "नबिय्युत्तौबह" से मुराद "नबिय्यु अहलित्तौबह" है जैसा कि क़ुरआने पाक की आयत وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ में اَلْقَرْيَةَ से मुराद اَهْلَ الْقَرْيَةِ है, अब ज़्यादा मुनासिब येह है कि तौबा से मुराद ईमान लें, चुनान्चे "नबिय्युत्तौबह" के माना हुवे "तमाम एहले ईमान के नबी"।

9 रसूले रेह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत तव्वाबीन हैं, वस्फ़े तौबा में सब उम्मतों से मुमताज़ हैं, क़ुरआन इन की सिफ़त में اَلتَّآئِبُوْنَ फ़रमाता है, जब गुनाह कर बैठते हैं तो तौबा करते हैं येह उम्मत की फ़ज़ीलत है और उम्मत की हर फ़ज़ीलत इस के नबी की त़रफ़ राजेअ़ है।

10 नबिय्ये रेह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की तौबा सब उम्मतों से ज़्यादा मक़्बूल हुई, कि इन की तौबा में सिर्फ़ नदामत, गुनाह को फ़ौरन छोड़ देना और आइन्दा न करने का अ़ज़्म काफ़ी हुवा, नबिय्ये रेह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के बोझ उतार लिए, अगली उम्मतों के सख़्त व शदीद बार इन पर न आने दिए, अगलों की तौबा सख़्त सख़्त शराइत़ से मशरूत़ की जाती थी, बनी इसराईल को गाय का बछड़ा पूजने के गुनाह की तौबा के लिए अपनी जानों को क़त्ल करने का फ़रमाया गया और जब सत्तर हज़ार आपस में कट चुके उस वक़्त तौबा क़बूल हुई।

11 प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद कसीरुत्तौबा हैं, सह़ीह़ बुख़ारी में है (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं) : मैं रोज़ **अल्लाह** سبحانه से सौ बार इस्तिग़्फ़ार करता हूं।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौबा किसी गुनाह से न होती थी क्यूंकि आप तो गुनाहों से पाक थे, बल्कि आप हर लम्ह़ा तरक़्क़ी ए मक़ामाते क़ुर्ब व मुशाहदे में हैं, जैसाकि रब्बुल इ़ज़्ज़त का फ़रमान है :

﴿وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक पिछली तुम्हारे लिए पेहली से बेहतर है।[1])

जब एक मक़ामे अजल्ल व आला पर तरक़्क़ी फ़रमाते गुज़श्ता मक़ाम को ब निस्बत इस के एक नौए़ तक़्सीर तसव्वुर फ़रमा कर अपने रब के हुज़ूर तौबा ओ इस्तिग़्फ़ार लाते तो वोह हमेशा तरक़्क़ी और हमेशा तौबा ए बे तक़्सीर में हैं।

12 **बाबे तौबा :** रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के आख़िर अ़हद (ज़माने) में बाबे तौबा बन्द होगा, अगली नबुव्वतों में अगर कोई एक नबी के हाथ पर ताइब न होता तो उन के बाद आने वाले किसी दूसरे नबी के हाथ पर तौबा कर लेता तो भी मक़्बूल होती, जबकि हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर बाबे नबुव्वत बन्द हो गया और जब (क़ियामत से क़ब्ल दुन्या से) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत रुख़्सत हो जाएगी (और सिर्फ़ कुफ़्फ़ार बाक़ी बचेंगे) तो तौबा का दरवाज़ा भी बन्द हो जाएगा, जो कोई आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर तौबा न लाए (यानी आप पर ईमान न लाए) उस के लिए कहीं तौबा नहीं।

13 **फ़ातेह़े बाबे तौबा :** आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ातेह़े बाबे तौबा हैं सब में पेहले सैयदना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने तौबा की वोह आप ही के तवस्सुल से थी तो आप ही अस्ले तौबा और वसीलए तौबा हैं।

14 हुज़ूर नबिय्ये रेहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तौबा क़बूल करने वाले हैं, आप का दरवाज़ए करम तौबा ओ माज़ेरत करने वालों के लिए हमेशा खुला है। जब आप ने कअ़ब बिन ज़ुहैर का ख़ून इन के ज़मानए नसरानियत में मुबाह़ फ़रमा दिया तो बादहू इन के रुजूअ़ लाने और तौबा करने पर इन की तौबा भी क़बूल फ़रमाई । तौरात मुक़द्दस में है : لَایَجْزِیْ بِالسَّیِّئَۃِ السَّیِّئَۃَ وَلٰکِن یَعْفُوْ وَیَغْفِرُ यानी अह़मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बदी का बदला बदी न देंगे बल्कि बख़्श देंगे और मग़्फ़ेरत (मुआ़फ़) फ़रमाएंगे ।[2]

इसी लिए "अ़फ़ुव्व" और "ग़फ़ूर" भी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्मा ए तैयबा हैं ।

15 बन्दों को हुक्म है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तौबा ओ इस्तिग़्फ़ार करें **अल्लाह** तो हर जगह सुनता है, उस का इल्म, उस का सम्अ़, उस का शुहूद सब जगह एक जैसा है मगर हुक्म येही फ़रमाया कि मेरी त़रफ़ तौबा चाहो तो मेरे मेह़बूब के हुज़ूर ह़ाज़िर हो जाओ :

﴿ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ۝۶۴ ﴾

अगर वोह जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करें, तेरे पास ह़ाज़िर हो कर ख़ुदा से बख़्शिश चाहें और रसूल उन की मग़्फ़ेरत मांगे तो ज़रूर ख़ुदा को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।[3]

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में तो लोग आप की बारगाह में ह़ाज़िर होते थे, अब मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़्री होगी और जहां येह भी मयस्सर न हो तो दिल से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ तवज्जोह करे और आप की बारगाह में फ़रियाद, इस्तेग़ासा और त़लबे शफ़ाअ़त करे कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब भी हर मुसलमान के घर में जल्वा फ़रमा हैं चुनान्चे अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : رُوْحُہ علیہ السَّلام حَاضِرٌ فِی بُیُوْتِ اَھلِ الاِسْلام नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारका हर मुसलमान के घर में जल्वा फ़रमा है ।[4]

16 आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुफ़ीज़े तौबा हैं, तौबा आप ही लेते हैं और आप ही देते हैं, आप तौबा न दें तो कोई तौबा न कर सके, तौबा एक नेमते उ़ज़्मा बल्कि हर नेमत से बड़ी नेमत है और नुसूसे मुतवातिरा औलिया ए किराम व उ़लमा ए एलाम से साबित हो चुका कि हर नेमत क़लील या कसीर, सग़ीर या कबीर, जिस्मानी या रूह़ानी, दीनी या दुन्यवी, ज़ाहिरी या बात़िनी, रोज़े अव्वल से अब तक, अब से क़ियामत तक, क़ियामत से आख़ेरत, आख़ेरत से अबद तक, मोमिन या काफ़िर, मुत़ीअ़ या फ़ाजिर, फ़रिश्ता या इन्सान, जिन्न या ह़ैवान बल्कि ज़ाते इलाही के सिवा जिसे जो कुछ मिली या मिलती है या मिलेगी सब इन्हीं के हाथों पर बटी और बटती है, ख़ुद फ़रमाते हैं : اَنَا اَبُو الْقَاسِمِ اللّٰهُ يُعْطِى وَاَنَا اَقْسِمُ मैं अबुल क़ासिम हूं **अल्लाह** देता है और मैं तक़्सीम करता हूं ।[5]

17 गुनाहों से इन की त़रफ़ तौबा की जाती है तौबा में इन का नाम **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के नाम के साथ लिया जाता है कि मैं **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ तौबा करता हूं, उम्मुल मोमिनीन सैयदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ، وَاِلٰى رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَاذَا اَذْنَبْتُ؟ : या रसूलल्लाह ! मैं **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल की त़रफ़ तौबा करती हूं मुझ से क्या ख़त़ा हुई ?[6]

मोअ़्जमे कबीर में ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से है : अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ वग़ैरहुमा चालीस अजिल्ला सह़ाबा ए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ खड़े हो कर हाथ फैला कर लरज़ते कांपते हुज़ूर से अ़र्ज़ की : تُبْنَا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ हम **अल्लाह** और उस के रसूल की त़रफ़ तौबा करते हैं ।[7]

इमामे एहले सुन्नत मजीद फ़रमाते हैं : तौबा के माना हैं ना फ़रमानी से बाज़ आना, जिस की मासियत की है उस से अ़हदे इत़ाअ़त की तजदीद कर के उसे राज़ी करना, और नस्से क़त़ई क़ुरआन से साबित (है) कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हर गुनहगार हुज़ूर सैयदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुनहगार है । قَالَ اللّٰہُ تعالیٰ : ﴿ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ﴾ जिस ने रसूल की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की ।[8]

इस को अ़क्से नक़ीज़, مَنْ لَمْ يُطِعِ اللّٰهَ لَمْ يُطِعِ الرَّسُوْلَ लाज़िम है और हमारे क़ौल مَنْ عَصَى اللّٰهَ فَقَدْ عَصَى الرَّسُوْلَ का येही माना है । और क़ुरआने अ़ज़ीम हुक्म देता है कि **अल्लाह** व रसूल को राज़ी करो ।

قَالَ اللّٰہُ تعالیٰ : ﴿ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝۶۲ ﴾ सब से ज़्यादा राज़ी करने के मुस्तह़िक़ **अल्लाह** व रसूल हैं अगर येह लोग ईमान रखते हैं ।[9]

अल्लाह करीम हमें भी नबिय्युत्तौबह जनाबे मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीलए जलीला से हर त़रह़ की ख़त़ाओं और गुनाहों की मुआ़फ़ी अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)پ30، الضحیٰ:4 (2)بخاری، 2/25، حدیث:2125، سنن دارمی، 1/16، حدیث:5 (3)پ5، النسآء:64 (4)شرح شفاء للقاری، 2/118 (5)مستدرک للحاکم، 3/502، حدیث:4243 (6)بخاری، 2/21، حدیث:2105 (7)معجم کبیر، 2/95، حدیث:1423 (8)پ5، النسآء:80 (9)پ10، التوبہ:62۔

(चौथी और आख़री क़िस्त़)

फ़रिश्ते दुआ़ ए मग़फ़ेरत करते हैं

मौलाना मुह़म्मद अफ़ज़ल अ़त्तारी मदनी

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी) . . . .

तिलावते क़ुरआने करीम की यूं तो वैसे ही बहुत बरकात हैं, एक ह़र्फ़ पर दस नेकियां मिलती हैं, **अल्लाह** की रेह़मतें उतरती हैं इन सब के साथ साथ येह बड़ी बरकत व सआ़दत वाली बात है कि **अल्लाह** करीम के मासूम फ़रिश्ते भी दुआ़ ए मग़फ़ेरत करते हैं चुनान्चे

70 हज़ार फ़रिश्ते सुब्ह़ो शाम इस्तिग़फ़ार करें : जो सुब्ह़ को اَعُوْذُ بِاللہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ तीन बार पढ़ कर सूरए ह़श्र की आख़री तीन आयतें पढ़े, **अल्लाह** पाक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमाएगा कि उस के लिए शाम तक इस्तिग़फ़ार करें और अगर इस दिन में मरा तो शहीद मरा और जो शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक के लिए येही बात है।[1]

फ़रिश्तों की दुआ़एं : ह़ज़रते सैयदना सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं कि जिस ने रात के इब्तेदाई ह़िस्से में क़ुरआने पाक ख़त्म किया तो फ़रिश्ते सुब्ह़ तक उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते रेहते हैं और जिस ने रात के आख़री ह़िस्से में क़ुरआने पाक ख़त्म किया फ़रिश्ते शाम तक उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते रेहते हैं।[2]

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : गरमियों में चूंकि दिन बड़ा होता है तो सुब्ह़ के ख़त्म करने में इस्तिग़फ़ारे मलाइका ज़्यादा होगी और जाड़ों (यानी सर्दियों) की रातें बड़ी होती हैं तो शुरूए़ रात में ख़त्म करने से इस्तिग़फ़ार ज़्यादा होगी।[3]

मुसलमान भाई से मुलाक़ात करना, उस की इयादत करना, उस की मेहमान नवाज़ी करना और उस के दुख सुख में शरीक होना तो वैसे ही बहुत बड़ी नेकी व सआ़दत और अज्रो सवाब का बाइ़स है जबकि करम बाला ए करम येह है कि इन नेकियों पर **अल्लाह** के मासूम फ़रिश्ते हमारे लिए दुआ़ ए मग़फ़ेरत भी करते हैं चुनान्चे

10 फ़रिश्ते साल भर तक दुआ़ ए मग़फ़ेरत करते हैं : ह़ज़रते सैयदना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते उबय बिन कअ़्ब की ह़ज़रते बरा बिन मालिक से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने ह़ज़रते बरा से पूछा : ऐ भाई ! आप को क्या चीज़ पसन्द है ? ह़ज़रते बरा ने जवाब दिया : सत्तू और खजूर, चुनान्चे उसी वक़्त वोह चीज़ें आ गईं और उन्हों ने सेर हो कर खा लीं, बाद में ह़ज़रते बरा बिन मालिक ने येह बात रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ज़िक्र की तो रेह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ बरा ! आदमी जब **अल्लाह** की रिज़ा के लिए अपने भाई के साथ ऐसा करता है यानी मेहमान नवाज़ी करता है और इस की कोई जज़ा और शुक्रिया नहीं चाहता तो **अल्लाह** करीम उस के घर में 10 फ़रिश्तों को भेज देता है जो पूरे एक साल तक **अल्लाह** पाक की तस्बीह़ो तहलील और तक्बीर पढ़ते और उस बन्दे के लिए मग़फ़ेरत की दुआ़ करते रेहते हैं। जब साल पूरा हो जाता है तो उन फ़रिश्तों की पूरे साल की इबादत के बराबर उस के नामए आमाल में इबादत लिख दी जाती है और **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है कि "**जन्नतुल ख़ुल्द**" और न फ़ना होने वाली बादशाही में उस को जन्नत की लज़ीज़ ग़िज़ाएं खिलाए।[4]

मुसलमान भाई से मुलाक़ात पर 70 हज़ार फ़रिश्तों की दुआ़ ए मग़फ़ेरत : ह़ज़रते सैयदना अबू रज़ीन उ़क़ैली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि करीम आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अबू रज़ीन ! मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई से मिलता है और फिर जब वोह उसे रुख़्सत करता है तो 70 हज़ार फ़रिश्ते उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और अ़र्ज़ करते हैं : "या **अल्लाह** ! जैसे उस ने तेरे लिए मुलाक़ात की तू भी उसे अपना क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमा।"[5]

मुसलमान की इयादत पर 70 हज़ार फ़रिश्तों की दुआ़ ए मग़फ़ेरत : रेह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत के लिए सुब्ह़ को जाए तो शाम तक उस के लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और उस के लिए जन्नत में एक बाग़ होगा।"[6]

---

(1) ترمذی، 4/423، حدیث:3483 (2) دارمی، 2/561، حدیث:2931 (3) بہارِ شریعت، 3/551 (4) کنزالعمال، جز9، 5/119، حدیث:25972 (5) مجمع الزوائد، 8/317، رقم:13592 (6) ترمذی، 2/290، حدیث:971۔

अह़कामे तिजारत

मुफ़्ती अबू मुह़म्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

अपनी कमीटी की रक़म दे कर इस पर नफ़्अ़ लेना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने एक जगह कमीटी डाली हुई है मगर कमीटी चन्द महीने बाद मिलेगी, जबकि इस के दोस्त बकर की अभी कमीटी खुल चुकी है और उस के पास रक़म मौजूद है, ज़ैद बकर से केहता है कि अपनी कमीटी की रक़म मुझे दे दो और जब मेरी कमीटी खुलेगी तो तुम अपनी रक़म वापस ले लेना, इस के बदले में आप को **तीन हज़ार रुपिये ज़्यादा** अदा करूंगा ।

बराहे करम ! येह रेहनुमाई फ़रमा दें कि ऊपर रक़म देने की वज्ह से इस मुआ़मले की क्या शरई ह़ैसियत है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में तीन हज़ार रुपिये मशरूत़ नफ़्ए़ पर ज़ैद का बकर से कमीटी की रक़म लेना, नाजाइज़ो ह़राम हैं क्यूंकि येह क़र्ज़ पर मशरूत़ नफ़्अ़ है और क़र्ज़ पर मशरूत़ नफ़्अ़ **सूद** होता है, और सूद ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । ज़ैद और बकर दोनों पर लाज़िम है कि इस त़रह़ का सूदी मुआ़मला हरगिज़ न करें ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ट्रेवल एजेन्ट का कोरोना के टेस्ट पर कमीशन लेना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि हमारा ट्रेवल एजेन्सी का काम है, अब जो मुसाफ़िर भी बैरूने मुल्क सफ़र पर जाता है, उस के लिए कोरोना टेस्ट करवाना ज़रूरी होता है, हमारी एजेन्सी के ज़रीए़ भी लोग बाहर मुल्क का सफ़र करते हैं तो चन्द लेबोरेटरियों की त़रफ़ से हमें येह पेशकश मिली है कि अगर आप अपनी एजेन्सी के तह़त सफ़र करने वाले मुसाफ़िरों को हमारी लेबोरेटरी में टेस्ट के लिए भेजेंगे तो हम आप को कुछ फ़ीसद कमीशन देंगे, येह कमीशन भी तै़ होगा, और लेबोरेटरी वाले टेस्ट करवाने वाले से कोई इज़ाफ़ी चार्जिज़ भी नहीं लेंगे, बल्कि उस से उतने ही चार्जिज़ वुसूल किए जाएंगे जितने दूसरी लेबोरेटरी वाले वुसूल करते हैं । क्या हमारा येह **कमीशन** लेना जाइज़ होगा या नहीं ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में **कमीशन लेना जाइज़ नहीं** । इस की वज्ह येह है कि कमीशन, काम करने की उजरत होती है, इस के लिए कोई ऐसा काम करना ज़रूरी होता है जिस के बदले में उजरत की सूरत में मुआ़वज़ा (बदला) दिया जा सके, यहां आप सिर्फ़ मश्वरा देंगे कि इस लेबोरेटरी से टेस्ट करवा लो, तो इस मौक़ेअ़ पर सिर्फ़ मश्वरा देना कोई ऐसा काम नहीं है जिस के बदले में उजरत का इस्तेह़क़ाक़ (यानी ह़क़ ह़ासिल) होता हो, इस लिए येह कमीशन लेना जाइज़ नहीं ।

अलबत्ता अगर वोह लेबोरेटरी वाक़ेई क़ाबिले एतेमाद हो, और आप या आप का नुमाइन्दा कस्टमर को ले कर लेबोरेटरी जाए, यूं कुछ मेह़नत करें और कमीशन भी तै़ हो तो इस मेह़नत के बदले में कमीशन ले सकते हैं । लेकिन तै़ शुदा उजरत के मुस्तह़िक़ नहीं होंगे, बल्कि उजरते मिस्ल के मुस्तह़िक़ होंगे, उजरते मिस्ल से मुराद येह है कि इस त़रह़ के काम करने पर जितनी उजरत का उ़र्फ़ हो उतनी उजरत ले सकते हैं, अलबत्ता अगर तै़ शुदा उजरत, उजरते मिस्ल से कम हो तो फिर तै़ शुदा उजरत ही दी जाएगी, उजरते मिस्ल नहीं दी जाएगी ।

आला ह़ज़रत इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अगर कारन्दे (नौकर) ने इस बारे में जो मेह़नत व कोशिश की वोह अपने आक़ा (मालिक) की त़रफ़ से थी, बाएअ़ (बेचने वाले) के लिए कोई दवादोश (दौड़ धूप) न की, अगर्चे बाज़ ज़बानी बातें उस की त़रफ़ से भी की हों, मसलन आक़ा (मालिक) को मश्वरा दिया हो कि येह चीज़ अच्छी है ख़रीद लेनी चाहिए, या इस में आप का नुक़्सान नहीं और मुझे इतने रुपिये मिल जाएंगे, उस ने ख़रीद ली, जब तो येह शख़्स (अ़म्र) बाएअ़ (बेचने वाले) से किसी उजरत का मुस्तह़िक़ नहीं कि उजरत आने जाने, मेह़नत करने की होती है न (कि) बैठे बैठे दो चार बातें केहने, सलाह़ बताने, मश्वरा देने की... और अगर बाएअ़ (बेचने वाले) की त़रफ़ से मेह़नत व कोशिश व दवादोश (दौड़ धूप) में अपना ज़माना सर्फ़ किया (वक़्त लगाया) तो सिर्फ़ अज्रे मिस्ल का मुस्तह़िक़ होगा, यानी ऐसे काम (या) इतनी सई (कोशिश) पर जो मज़दूरी होती है उस से ज़ाइद न पाएगा, अगर्चे बाएअ़ से क़रार दाद कितने ही ज़्यादा का हो, और अगर क़रार दाद अज्रे मिस्ल से कम का हो तो कम ही दिलाएंगे कि सुकूते ज़्यादत (ज़्यादा की उजरत छोड़ने) पर खुद राज़ी हो चुका। (फ़तावा रज़विया, 19/453)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़ोटो ग्राफ़र को दुकान किराए पर देना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या फ़ोटो ग्राफ़र को दुकान किराए पर दे सकते हैं ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : सूरते मसऊला (पूछी गई सूरत) में सब से बेहतर येह है कि जाइज़ पेशा करने वाले अफ़राद को दुकान किराए पर दें (और) ऐसे शख़्स को न दें जिस के बारे में मालूम है कि वोह दुकान में फ़ोटोग्राफ़ी करेगा। अलबत्ता इस के बा वुजूद कोई फ़ोटो ग्राफ़र को दुकान किराए पर देता है तो शरअ़न ऐसा करना, जाइज़ है क्यूंकि दुकान-मकान किराए पर लेने वाला सुकूनत और काम की ग़रज़ से किराए पर लेता है इस में किसी भी जाइज़ो नाजाइज़ काम का ज़िम्मेदार वोह खुद होता है।

अलबत्ता मालिके दुकान पर लाज़िम है कि येह केह कर दुकान न दे कि इस में येह काम करो। और वोह काम शरअ़न ग़लत़ हो जैसा कि फ़ोटो ग्राफ़र का काम कि अगर वोह डीजीटल है तो आ़म त़ौर से मर्दो औ़रत की तमीज़ के बग़ैर और शादी बियाह के फ़न्कशन में बे पर्दगी वग़ैरा से एह़तेराज़ किए बग़ैर होता है और अगर प्रिन्ट निकालता है तो जानदार की तस्वीर का प्रिन्ट निकालना वैसे ही जाइज़ नहीं और ग़लत़ काम न तो खुद करना, जाइज़ है न ही इस पर राज़ी रेहना जाइज़ है।

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़ोटो ग्राफ़र को दुकान किराए पर देने से मुतअ़ल्लिक़ सवाल हुवा तो इस के जवाब में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "उस शख़्स को दुकान किराए पर दी जा सकती है मगर येह केह कर न दें कि इस में तस्वीर खींचे, अब येह उस का फ़ेल है कि तस्वीर बनाता है और अ़ज़ाबे आख़ेरत मोल लेता है।"

(फ़तावा अमजदिया, 3/272)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तस्वीर वाली कुर्सी बनाना, बेचना और इस्तेमाल करना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि आज कल ऐसी कुर्सियां आ रही हैं जिन पर बैठने और टेक लगाने की जगह पर इन्सानी तसावीर बनी हुई होती हैं, इन कुर्सियों को बनाना, बेचना और इस्तेमाल करना कैसा है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : ऐसी कुर्सियां जिन पर बैठने (Seat) और टेक लगाने की जगह (*back*) पर इन्सान की तस्वीर बनी हुई हो तो उन कुर्सियों पर बैठने और टेक लगाने में शरई त़ौर पर ह़रज नहीं है कि इन पर बैठने और टेक लगाने में तसावीर की तौहीन है, ताज़ीम नहीं और इन कुर्सियों को बेचने और ख़रीदने में भी ह़रज नहीं, लेकिन ऐसी कुर्सियां बनाना, नाजाइज़ो गुनाह है क्यूंकि जानदार के चेहरे की तस्वीर बनाना मुत़लक़न ह़राम और सख़्त गुनाह है।

आला ह़ज़रत इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : जानदार की तस्वीर बनाना मुत़लक़न ह़राम है, जो इसे जाइज़ कहे शरीअ़त पर इफ़्तरा करता है गुमराह है मुस्तह़िक़े ताज़ीर व सज़ा ए नार है और रखना तीन सूरतों में जाइज़ है : एक येह कि चेहरा काट दिया हो या बिगाड़ दिया हो। दूसरे येह कि इतनी छोटी हो कि ज़मीन पर रख कर खड़े हो कर देखें तो आज़ा की तफ़्सील नज़र न आए। तीसरे येह कि ख़्वारी ओ ज़िल्लत की जगह पड़ी हो जैसे फ़र्शपा (कार्पेट-कालीन के) अन्दाज़ में, वरना रखना भी ह़राम (है) हां, ग़ैरे जानदार मिस्ले दरख़्त व मकान की तस्वीर खींचना रखना सब जाइज़ है। (फ़तावा रज़विया, 24/557)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पेशों के एतिबार से निस्बतें

अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी मदनी

औलिया, उ़लमा ओ मुह़द्दिसीन رحمۃ اللہ علیہم जिन्हों ने दीने मतीन की ख़ूब ख़िदमत की और इस्लाम के नूर को फैलाने और इ़ल्म की इशाअ़त में अपना अपना हिस्सा डाला, इन बा बरकत हस्तियों के नामों के साथ बाज़ अवक़ात कोई निस्बत आती है, येह निस्बत कभी गली, मह़ल्ले और शेहर के एतेबार से लगती है, कभी आबा ओ अज्दाद और क़बीले की मुनासबत से और बाज़ अवक़ात उन के अपने पेशों या उन के आबा ओ अजदाद के पेशों से तअ़ल्लुक़ की बिना पर लगती है। इस मज़्मून में पेशों के एतेबार से बुज़ुर्गों की निस्बतों को बयान किया जाएगा और उन का ज़िक्रे ख़ैर किया जाएगा।

इब्नुल जब्बाब : येह जिबाब यानी जुब्बों के बेचने की त़रफ़ निस्बत है और इस लक़ब से मश्हूर शख़्सियत ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, मोह़द्दिसे उन्दलुस इमाम अबू उ़मर अह़मद बिन ख़ालिद क़ुरत़ुबी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं। आप की विलादत 246 हिजरी में हुई और विसाल 322 हिजरी में हुवा। क़ाज़ी इयाज़ मालिकी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप फ़िक़्हे मालिकी में इमाम थे। इमाम ज़ह़बी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप को अ़दीमुन्नज़ीर (यानी बे मिसाल शख़्स) लिखा और बाज़ मोह़द्दिसीन के ब क़ौल इब्नुल जब्बाब जैसा मोह़द्दिस उन्दलूस में पैदा ही नहीं हुवा।

(سیر اعلام النبلاء، 11/628، 629)

अल बज़्ज़ाज़ : येह लफ़्ज़ उस शख़्स के लिए कहा जाता है जो बज़्ज़ यानी एक क़िस्म के कपड़ों को बेचता हो। इस निस्बत से मश्हूर बुज़ुर्गों में से एक मोह़द्दिसे इराक़, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस ह़ज़रते अबू इमरान मूसा बिन हारून رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी हैं। आप की विलादत 214 हिजरी में हुई और विसाल 294 हिजरी में हुवा। जलीलुल क़द्र इमाम ह़ज़रते अबू बक्र अह़मद बिन इस्ह़ाक़ सिबग़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ने हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस में ह़ज़रते मूसा बिन हारून رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से बढ़ कर रोब व दबदबे वाला और मुत्तक़ी ओ परहेज़गार नहीं देखा। ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ब्दुल ग़नी बिन सईद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप अपने वक़्त में अह़ादीसे रसूल के मुतअ़ल्लिक़ लोगों में सब से बेहतर कलाम फ़रमाने वाले थे। मन्क़ूल है कि आप बहुत ज़्यादा ह़ज करते थे, आप का त़रीक़ए कार येह था कि एक साल बग़दाद में क़ियाम फ़रमाते और ह़ज के बाद एक साल (मक्कए मुकर्रमा में) सुकूनत इख़्तियार फ़रमाते। इमाम ज़ह़बी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरा गुमान येह है कि आप इस अ़र्से में तिजारत करते होंगे।

(الانساب للسمعانی، 2/186- سیر اعلام النبلاء، 10/104، 105)

अल बज़्ज़ार : येह लफ़्ज़ उस शख़्स के लिए बोला जाता है जो बज़्र यानी बीज से तेल निकालता है या बीज को बेचता है। अइम्मा और उ़लमा की एक जमाअ़त इस निस्बत के साथ मश्हूर है, इन ही बुज़ुर्गों में से एक

ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, साह़िबे मुस्नदे बज़्ज़ार, इमाम अबू बक्र अह़मद बिन अ़म्र बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ भी हैं। आप की विलादत 211, 212 या फिर 213 हिजरी में हुई और विसाल 292 हिजरी में हुवा। मन्क़ूल है कि इमाम बुख़ारी के उस्ताज़, अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस ह़ज़रते अ़ली बिन मदीनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के बाद इ़ल्मे ह़दीस में आप से बढ़ कर कोई आ़लिम नहीं हुवा।

(الانساب للسمعانی، 2/182۔ مسند البزار، 1/8، 14، 16)

अल मावर्दी : येह माउल वर्द (गुलाब का पानी यानी अ़र्क़े गुलाब) बेचने और इस के काम की त़रफ़ निस्बत है। उ़लमा की एक जमाअ़त इस निस्बत के साथ मश्हूर हुई क्यूंकि उन के आबा ओ अज्दाद में से कोई इस का काम करता था या इसे बेचता था। इन उ़लमा में से एक क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात (Chief Justice) अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ भी हैं। आप की विलादत 364 हिजरी में हुई और विसाल 450 हिजरी में हुवा। मन्क़ूल है कि आप ने अपनी ज़िन्दगी में अपनी लिखी हुई किसी किताब को ज़ाहिर नहीं फ़रमाया और तमाम तसानीफ़ (किताबों) को एक मक़ाम पर जम्अ़ फ़रमा दिया। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो एक क़ाबिले एतेमाद शख़्स से फ़रमाया : फ़ुलां मक़ाम पर मौजूद तमाम किताबें मेरी तस्नीफ़ हैं, मैं ने अपनी निय्यत को ख़ालिस नहीं पाया इस लिए उन्हें ज़ाहिर नहीं किया। जब मेरी मौत का वक़्त आए और ह़ालते नज़्अ़ त़ारी हो तो अपना हाथ मेरे हाथ में दे देना, अगर मैं तुम्हारे हाथ को दबा कर पकड़ लूं तो जान लेना कि मेरी कोई तस्नीफ़ मक़्बूल नहीं हुई और तुम मेरी किताबें ले कर रात के वक़्त उन्हें दरिया ए दिज्ला में डाल देना, और अगर मैं तुम्हारा हाथ न थामूं और अपना हाथ दराज़ कर दूं तो समझ जाना कि मेरी तसानीफ़ मक़्बूल हो चुकी हैं और मैं जिस ख़ालिस निय्यत की उम्मीद करता था उस में कामयाब हो गया हूं। उस शख़्स का बयान है कि जब ह़ज़रत की वफ़ात का वक़्त आया और मैं ने आप के हाथ में हाथ दिया तो आप ने मेरा हाथ न थामा, मैं ने जान लिया कि आप की तसानीफ़ मक़्बूल हो चुकी हैं चुनान्चे मैं ने आप की किताबों को लोगों के सामने ज़ाहिर कर दिया।

(الانساب للسمعانی، 11/104، 105، وفیات الاعیان، 3/247 ملخصاً)

अन नस्साज : येह कपड़े के नस्ज यानी बुनने की त़रफ़ निस्बत है। उ़लमा की एक जमाअ़त इसे निस्बत के साथ मन्सूब है, इन ही बुज़ुर्गों में से एक ह़ज़रते अबुल ह़सन ख़ैरुन्नस्साज رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ भी हैं। आप ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के सोह़बत याफ़्ता हैं। आप की विलादत 202 हिजरी में हुई और विसाल 322 हिजरी में हुवा। मन्क़ूल है कि आप के चेहरे का रंग सियाह था, एक मरतबा ह़ज की अदाएगी से फ़ारिग़ होने के बाद जब आप कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो एक शख़्स ने आप को पकड़ लिया और कहा कि तुम मेरे ग़ुलाम हो और तुम्हारा नाम ख़ैर है। आप ने उस के साथ कोई झगड़ा नहीं किया बल्कि उस की बात मान कर उस के साथ चल दिए। उस शख़्स ने एक मुद्दत तक आप से कपड़ा बुनने का काम करवाया फिर आज़ाद कर दिया और कहा कि तुम मेरे ग़ुलाम नहीं हो। कहा गया है कि उस शख़्स पर एक मुद्दत तक येह शुबा

डाल दिया गया था कि आप उस के ग़ुलाम हैं। आप का अस्ली नाम मुह़म्मद बिन इस्माईल था । ग़ुलामी से आज़ादी के बाद आप से कहा गया कि क्या आप दोबारा अपने पेहले नाम की त़रफ़ नहीं आएंगे ? इरशाद फ़रमाया : मैं अपने उस नाम को तब्दील नहीं करूंगा जो मुझे एक मुसलमान ने दिया है, चुनान्चे आप ने अपनी वफ़ात तक इस नाम को अपने साथ ख़ास किए रखा।

(الانساب للسمعانی، 12/74، سیر اعلام النبلاء، 11/646، تاریخ الاسلام للذہبی، 7/459، الاعلام للزرکلی، 2/326)

अल क़फ़्फ़ाल : येह क़ुफ़्ल यानी तालों (Locks) के काम की त़रफ़ निस्बत है । इस निस्बत से मन्सूब हस्ती शैख़ुश्शाफ़ेइय्या इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मरवज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं, आप को अल क़फ़्फ़ालुस्सग़ीर कहा जाता है । आप की विलादत 327 हिजरी और विसाल 417 हिजरी में हुवा। आप को तालों के काम में बहुत महारत ह़ासिल थी यहां तक कि एक मरतबा अपने आलात और चाबी की मदद से ऐसा ताला तैयार किया जिस का वज़्न चार ह़ब्बा के बराबर था (एक ह़ब्बा जव के दो दानों के बराबर होता है यानी आठ जव के दानों के वज़्न जितना हलका फुल्का ताला बना लिया) ताहम जब आप की उ़म्र 30 साल की हुई तो आप ने इस काम को ख़ैरबाद केह दिया और इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल की जानिब मुतवज्जेह हो गए फिर फ़िक़्ह में इतना ऊंचा मक़ाम पाया कि फ़क़ीह नासिरुल उ़मरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इमाम अबू बक्र क़फ़्फ़ाल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ज़माने में इन से बढ़ कर कोई फ़क़ीह नहीं था और न ही इन के बाद कोई इन जैसा हुवा और हम कहा करते थे कि येह इन्सान की सूरत में फ़रिश्ता हैं !

आप के शागिर्द क़ाज़ी ह़ुसैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : तदरीस के वक़्त अक्सर अवक़ात उस्ताज़े मोह़तरम (सर झुका कर) रोया करते थे फिर सर उठाते और फ़रमाते : हम अपने मक़्सद से कितने ग़ाफ़िल हैं।

नोट : क़फ़्फ़ाल की निस्बत से मन्सूब एक और बुज़ुर्ग भी गुज़रे हैं, उन का नाम ह़ज़रते अबू बक्र मुह़म्मद बिन अ़ली शाशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه है, उन्हें अल क़फ़्फ़ालुल कबीर कहा जाता है।

(الانساب للسمعانی، 10/211، سیر اعلام النبلاء، 12/374، 13/260، الاعلام للزرکلی، 4/66)

अल क़त़्त़ान : येह अल क़ुत़न (यानी रूई (Cotton)) बेचने की त़रफ़ निस्बत है । इस निस्बत से मन्सूब शख़्सियत जलीलुल क़द्र इमाम अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस ह़ज़रते यह़्या बिन सईद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं। आप की विलादत 120 हिजरी की इब्तेदा में हुई और विसाल

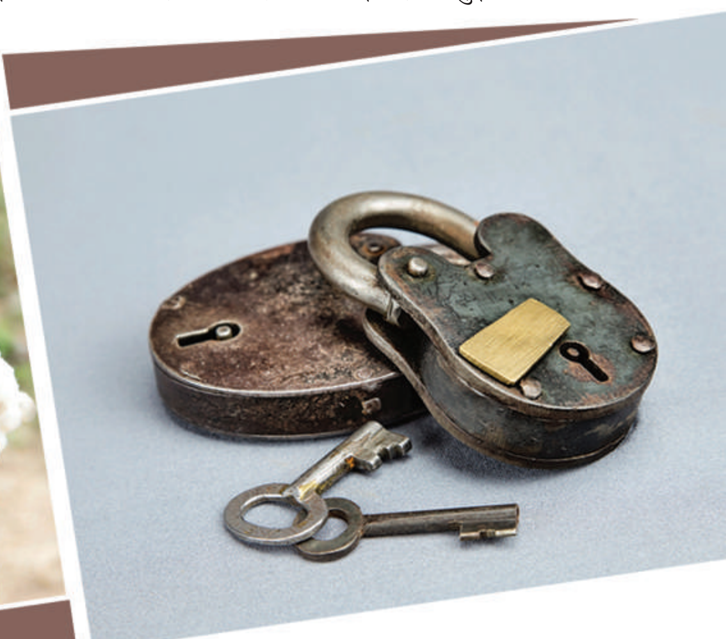

198 हिजरी सफ़र के महीने में हुवा। हाफ़िज़ुल ह़दीस इब्ने अ़म्मार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जब तुम ह़ज़रते यह़्या बिन सईद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की त़रफ़ देखोगे तो आप की

ताजिरों वाली हैअत के सबब येह गुमान करोगे कि आप के अन्दर कोई क़ाबिले क़द्र इल्मी सलाह़िय्यत नहीं होगी लेकिन जब आप कलाम फ़रमाते तो फ़ुक़हा आप की बात सुनने के लिए ख़ामोश हो जाते । सैयदुल हुफ़्फ़ाज़ अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब बसरा तशरीफ़ लाए तो मुझ से कहा : मेरे पास किसी इन्सान को लाओ ताकि मैं उस से इल्मी मुज़ाकरा करूं, चुनान्चे मैं ह़ज़रते यह़्या बिन सईद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को ले आया और दोनों ने इल्मी मुबाह़सा किया, जब ह़ज़रते यह़्या बिन सईद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ चले गए तो ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मुझ से कहा : मैं ने तुम को इन्सान लाने के लिए कहा था तुम तो मेरे पास जिन्न को ले आए । (यानी ह़ज़रते यह़्या बिन सईद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के ह़ाफ़िज़े ने आप को ह़ैरत में डाल दिया था)। (سیراعلام النبلاء، 8/110تا117)

अल आजुर्री : येह आजुर्र यानी ईंट (Brick) के काम और उस के बेचने की त़रफ़ निस्बत है नीज़ दरबुल आजुर्र (बग़दाद के एक मह़ल्ले) की त़रफ़ भी निस्बत है। बाज़ बुज़ुर्गों के साथ येह निस्बत ईंटों के काम की वज्ह से और बाज़ की मज़्कूरा मह़ल्ले में क़ियाम के एतेबार से आती है। आजुर्री की निस्बत से मन्सूब शख़्सियात में से सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ख़ालिद आजुर्री رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ भी हैं, आप का विसाल 303 हिजरी में हुवा।

ईंटों की गुफ़्तगू : आप फ़रमाते हैं कि मैं ईंटों का काम करता था, एक मरतबा मैं भट्टे में ईंटों की तहों (यानी ऊपर नीचे रखी हुई ईंटों की लाइन) के दरमियान से गुज़र रहा था कि मैं ने सुना : एक तह ने दूसरी को सलाम किया और कहा : आज रात मुझे आग में डाल दिया जाएगा। फ़रमाते हैं : मैं ने मज़दूरों को उस तेह को आग में डालने से मन्अ़ कर दिया और ईंटें उसी त़रह़ अपनी जगह बाक़ी रहीं। इस के बाद मैं ने कभी ईंटों को आग में पकाने का काम नहीं किया। (الانساب للسمعانی، 1/94، 95، المنتظم لابن الجوزی، 13/164)

रَضِیَ اللہُ عَنْہُ हज़रते फ़ारूके़ आज़म की सादगी

मौलाना अ़दनान अह़मद अ़त्तारी मदनी

मुसलमानों के ख़लीफ़ए सानी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने वसीओ़ अ़रीज़ इस्लामी सल्त़नत के ह़ाकिम होने के बावुजूद अपनी ज़िन्दगी का मेयार मामूली और सादा रखा। बे तकल्लुफ़, सादा और आ़म आदमी जैसी ज़िन्दगी बसर की, आप ने अपनी ज़िन्दगी को ख़ुशह़ाली, ऐ़शो इ़श्रत, लज़ीज़ खानों और आसाइशों से दूर रखा।

आइए, ह़ज़रते फ़ारूके़ आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की रौशन सीरत के इस चमकदार पेहलू को मुलाह़ज़ा कीजिए।

मुल्के शाम का सफ़र : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए, ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ भी आप के साथ थे, (रास्ते में दरिया आया तो आप) दोनों ह़ज़रात उस जगह पर तशरीफ़ लाए जहां पानी कम था। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ अपनी ऊंटनी से उतरे और अपने चमड़े के मोज़े उतार कर अपने कंधे पर रख लिए फिर ऊंटनी की लगाम थाम कर पानी में दाख़िल हो गए, येह देख कर ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप येह काम कर रहे हैं और मुझे येह पसन्द नहीं कि यहां के लोग आप को नज़र उठा कर देखें। इरशाद फ़रमाया : अफ़्सोस ऐ अबू उ़बैदा ! येह बात तुम्हारे इ़लावा किसी ने न कही, मैं तो इस अ़मल को उम्मते मुह़म्मदिया के लिए मिसाल बना देना चाहता हूं, क्या तुम्हें याद नहीं हम एक बे सरो सामान क़ौम थे, फिर **अल्लाह** करीम ने हमें इस्लाम के ज़रीए़ इ़ज़्ज़त बख़्शी, जब भी हम इस्लाम के इ़लावा किसी और चीज़ से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना चाहेंगे तो **अल्लाह** पाक हमें रुस्वा कर देगा।[1] **सफ़रे ह़ज :** आप رضی اللہ تعالٰی عنہ एक बार ह़ज के लिए मक्कए मुकर्रमा को रवाना हुवे तो पूरे सफ़रे ह़ज में जहां कहीं आप ने पड़ाव किया, न वहां ख़ैमा लगाया न क़नात, बस किसी दरख़्त पर चादर और चमड़े का दस्तरख़्वान डाल लेते और उस के साए में बैठ जाते।[2] **ज़मीन पर आराम :** जब कभी शेहर से बाहर कहीं सफ़र वग़ैरा पर जाते तो सफ़र के दौरान आराम के लिए मिट्टी का ढेर लगा कर उस पर कपड़ा बिछाते और फिर आराम फ़रमा लेते।[3] **नंगे पाउं :** कभी देखा गया कि (नमाज़े ई़द के लिए) नंगे पाउं ही तशरीफ़ लिए जा रहे हैं।[4] **बे छना आटा :** जब से आप ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को बग़ैर छने आटे की रोटी खाते हुवे देखा तब से आप ने भी कभी छने हुवे आटे की रोटी नहीं खाई।[5] **दो सालन :** कभी यूं हुवा कि साह़बज़ादी ने रोटी और ठन्डे शोरबे में ज़ैतून मिला कर आप की ख़िदमत में पेश किया तो फ़रमाया : एक बरतन में दो सालन ? मैं इसे कभी नहीं चखूंगा।[6] **ख़ुश्क रोटी :** कभी ऐसा हुवा कि (ख़ुश्क) शामी रोटी दांतों से तोड़ कर खाते, किसी ने पूछा : या अमीरल मोमिनीन ! अगर आप कहें तो मैं आप के लिए नर्म ग़िज़ा ले आऊं ? तो फ़रमाया : क्या तुम्हारी नज़र में अ़रब में कोई ऐसा शख़्स है जो उ़म्दा ग़िज़ा ह़ासिल करने के लिए मुझ से भी ज़्यादा कु़व्वत (त़ाक़त) रखता हो।[7] (यानी आप ह़ाकिम थे और उ़म्दा ग़िज़ा ह़ासिल कर सकते थे मगर फिर भी क़नाअ़त इख़्तियार करते हुवे ख़ुश्क रोटी तनावुल फ़रमाते) **सादा ग़िज़ा :** कभी इस त़रह़ हुवा कि गोश्त के टुकड़ों को पानी में उबाल कर लाया जाता, कभी यूं हुवा कि क़लील मिक़्दार में ताज़ा गोश्त लाया जाता जिसे आप तनावुल फ़रमाते।[8] कभी ऐसा भी हुवा कि शदीद भूक के आ़लम में आप

को एक ही खजूर मिली तो आप ने उसे खा कर ऊपर से पानी पी लिया, फिर अपने पेट पर हाथ फेर कर इरशाद फ़रमाया : बरबादी है उस शख़्स के लिए जिस को उस के पेट ने जहन्नम में दाख़िल किया।(9) कभी एक वफ़्द आ कर ठेहरा तो क्या देखता है कि ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के लिए रोज़ाना खाने के वक़्त एक (सूखी) रोटी चुरमा कर के लाई गई, जिसे आप कभी घी के साथ कभी ज़ैतून के साथ तो कभी दूध के साथ तनावुल फ़रमा लेते।(10) **पसीना चूसने वाली क़मीस :** (मुल्के शाम के सफ़र में) ईला के मक़ाम पर पहुंचे तो त़वील सफ़र के सबब बदन पर मौजूद क़मीस पीछे से फट गई थी। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने वहां के ह़ाकिम को अपनी क़मीस धुलवाने और पैवन्द लगाने के लिए दे दी, ह़ाकिम ने पैवन्द लगा के उसे धुलवा दिया और साथ ही उस जैसी एक नई क़मीस भी बनवा कर आप की ख़िदमत में बत़ौरे तोह़फ़ा पेश कर दी। आप ने नई क़मीस को देखा, उस पर हाथ फेरा और अपनी वोही पैवन्द वाली पुरानी क़मीस पेहन ली और फ़रमाया : मेरी येह क़मीस तुम्हारी क़मीस के मुक़ाबले में ज़्यादा पसीना चूसने वाली है।(11) **देर से आने पर माज़ेरत :** कभी यूं हुवा कि आप को नमाज़े जुम्अ़ा के लिए ताख़ीर हो गई, जब आप तशरीफ़ लाए तो लोगों से माज़ेरत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : मुझे अपनी इस क़मीस की वज्ह से ताख़ीर हुई है क्यूंकि इस के इ़लावा मेरे पास कोई दूसरी क़मीस नहीं है।(12) **क़मीस पर चार पैवन्द :** किसी ने आप के दोनों कंधों के दरमियान क़मीस पर चार पैवन्द देखे।(13) **तेहबन्द पर पैवन्द :** किसी ने देखा कि आप के कपड़ों में ऊपर तले तीन पैवन्द (यानी कपड़े के जोड़) एक जगह पर लगे थे कि एक पैवन्द गल गया तो उस के ऊपर एक और लगाया, किसी ने देखा आप ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में ख़ुत़्बा दिया और उस वक़्त आप के तेहबन्द शरीफ़ में बारह पैवन्द थे।(14) किसी ने देखा कि आप ख़ानए काबा का त़वाफ़ कर रहे हैं और तेहबन्द पर बारह पैवन्द हैं।(15) किसी ने आप को नमाज़ की ह़लात में देखा कि तेहबन्द पर कई पैवन्द हैं और कहीं कहीं उस में चमड़ा भी लगा है।(16) क़ह़त़ (दुक़ाल) के ज़माने में आप के तेहबन्द पर 16 पैवन्द देखे गए।(17) **ब क़द्रे किफ़ायत ख़ूराक :** आप رضی اللہ تعالٰی عنہ अपने और अपने घर वालों के लिए ब क़दरे किफ़ायत ही ख़ूराक लिया करते थे, गर्मियों में एक लिबास लेते अगर वोह कहीं से फट जाता तो उसे पैवन्द लगा लेते, जब तक उस से काम चलता, चला लेते और फिर उसे तबदील कर लेते, हर साल पिछले साल से कम दरजे का कपड़ा ही लेते। किसी ने आप से इस मुआ़मले में बात की तो आप ने फ़रमाया : मैं मुसलमानों के माल से अपने ख़र्चे के लिए माल लेता हूं और मुझे इतना ही किफ़ायत करता है।(18) **यौमिया अख़राजात :** किसी ने यूं रिवायत की : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ अपने और अपने घर वालों पर यौमिया फ़क़त़ दो दिरहम ख़र्च किया करते थे।(19) **ह़ज के अख़राजात :** किसी ने यूं बताया कि आप ह़ज के लिए गए तो फ़क़त़ 180 दिरहम ख़र्च किए।(20) **क़र्ज़ :** जब आप को ज़रूरत पेश आती तो आप बैतुल माल (सरकारी ख़ज़ाने) से क़र्ज़ भी ले लेते, बाज़ अवक़ात बैतुल माल के निगरान आप के पास आते और क़र्ज़ा वापस मांगते और लौटाने का पाबन्द कर देते लेहाज़ा आप क़र्ज़े की रक़म ले कर उन के पास पहुंच जाते कभी यूं होता कि जब आप का वज़ीफ़ा अदा किया जाता तो आप उस में से क़र्ज़ की रक़म लौटाते।(21) **वाज़ो नसीह़त :** जब रमज़ानुल मुबारक की आमद होती तो आप यकुम रमज़ान की रात नमाज़े मग़रिब के बाद लोगों को नसीह़त आमोज़ ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाते।(22) **मिस्वाक से मह़ब्बत :** आप को कसरत से मिस्वाक करते देखा गया।(23)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस सादगी व आ़जिज़ी ने ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की अ़ज़मतों को चार चांद लगाए, इस ज़माने में उन की जिस जिस अदा पर अ़मल करना हमारे लिए मुमकिन हो वोह अपना कर हम फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की पैरवी की बरकतें पा सकते हैं।

शहादत : मुसलमानों के इस अ़ज़ीम ख़लीफ़ा को 26 ज़ुल ह़िज्जा बुध के दिन शदीद ज़ख़्मी कर दिया गया था जबकि यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 24 हिजरी बरोज़ इतवार को रौज़ए रसूल में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की तदफ़ीन हुई। आप की ख़िलाफ़त तक़रीबन 10 साल 5 माह और 21 रोज़ रही।(24)

---

(1) مستدرک للحاکم، 1/236، حدیث: 214 (2) تاریخ ابن عساکر، 44/305 (3) مصنف ابن ابی شیبہ، 19/144، رقم: 35603 (4) مستدرک للحاکم، 4/32، حدیث: 4535 (5) طبقات ابن سعد، 1/301 (6) ایضاً، 3/243 (7) ریاض النضرۃ، 1/365 (8) تاریخ ابن عساکر، 44/298 (9) مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، ص135 (10) تاریخ ابن عساکر، 44/298- الزہد لابن المبارک، ص204 (11) تاریخ الرسل والملوک، 4/64 (12) طبقات ابن سعد، 3/251 (13) مصنف ابن ابی شیبہ، 19/139، رقم: 35588 (14) مراٰۃ المناجیح، 6/108 (15) طبقات ابن سعد، 3/250 (16) ایضاً، 3/250 (17) ایضاً، 3/243 (18) ایضاً، 3/234 (19) ایضاً، 3/234 (20) ایضاً، 3/234 (21) مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، ص100 (22) مصنف عبد الرزاق، 4/204، حدیث: 7778 (23) طبقات ابن سعد، 3/220 (24) طبقات ابن سعد 3/278۔

مزارِ हज़रते सैयदना अबू अ़ब्दुर्रह़मान बिलाल बिन रबाह़ ह़बशी رضی اللہ عنہ

رحمۃ اللہ علیہ मज़ारे हज़रते सैयद सफ़िय्युद्दीन इस्ह़ाक़ क़ाज़मी अर्दबीली शाफ़ेई

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

मौलाना अबू माजिद मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी मदनी

मोह़र्रमुल ह़राम इस्लामी साल का पेहला महीना है। इस में जिन सह़ाबा ए किराम, औलिया ए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमा ए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है उन में से 13 का मुख़्तसर तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **:**

1 सह़ाबिया ह़ज़रते हिन्द बिन उ़त्बा कु़रशिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का सिलसिलए नसब चौथी पुश्त में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिल जाता है, आप रईसे मक्का की बेटी, सरदारे मक्का ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा हैं। आप फ़त्ह़े मक्का के दिन इस्लाम लाईं, बैअ़त की और घर में मौजूद बुत पाश पाश कर दिया, आप बहुत अ़क़्ल मन्द, बहादुर, ग़ैरत मन्द, बा ह़या, पाक दामन, फ़ैयाज़, साह़िबुर्राए और हुस्ने इस्लाम वाली ख़ातून थीं। मुसलमानों के ह़ौसले बुलन्द करने के लिए जंगे यरमूक में शरीक हुईं। आप का विसाल (मोह़र्रम 14 हिजरी को) ख़िलाफ़ते उ़मर में उस दिन हुवा जब ह़ज़रते अबू कु़ह़ाफ़ा उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ौत हुवे थे।(1) 2 मोअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सैयदना अबू अ़ब्दुर्रह़मान बिलाल बिन रबाह़ ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत एक क़ौल के मुत़ाबिक़ मक्कए मुकर्रमा में हुई। इब्तेदा में इस्लाम क़बूल करने और इन्तेहाई तकालीफ़ उठाने, इश्क़े रसूल में शोहरत पाने और मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे नबवी में अज़ान देने का शरफ़ पाने, ग़ज़वए बद्र समेत तमाम ग़ज़वात में शिर्कत करने और अह़ादीस रिवायत करने वाले हैं। आप ने त़ाऊ़ने अ़मवास में 17 या 18 हिजरी को विसाल फ़रमाया। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह वबा मोह़र्रम और सफ़र 17 हिजरी में फैली।(2)

औलिया ए किराम رحمہم اللہ السلام **:** 3 सुल्त़ानुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रते सैयद सफ़िय्युद्दीन इस्ह़ाक़ काज़मी अर्दबीली शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 650 हिजरी अर्दबील ईरान में एक काज़मी सादात ख़ानदान में हुई और 12 मोह़र्रम 785 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार अर्दबील ईरान में है। आप इब्तेदा ही से तसव्वुफ़ की त़रफ़ माइल, बानी ए ख़ानक़ाह व सिलसिलए सफ़विया, मोअस्सिर शख़्सियत और अकाबिर औलिया से हैं।(3) 4 मोह़युद्दीन सानी ह़ज़रत शाह सैयद मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह क़ादरी बग़दादी हनफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1130 हिजरी को बग़दाद शरीफ़ में हुई और विसाल 14 मोह़र्रम 1207 हिजरी को रामपुर (यूपी) हिन्द में हुवा, मज़ार मर्जए ख़लाइक़ है। आप उ़लूमे इस्लामिया के माहिर, सिलसिलए क़ादरिया के अ़ज़ीम शैख़े त़रीक़त, नवाब ऑफ़ रियासत रामपुर के मुर्शिद, जामेअ़ मस्जिद रामपुर व ख़ानक़ाहे क़ादरिया के बानी और साह़िबे करामत वलिय्युल्लाह थे, ह़ज़रते शाह सैयद अमजद अ़ली अक्बराबादी और ह़ज़रत शाह नियाज़ अह़मद बरेल्वी आप के ख़ुलफ़ा हैं।(4) 5 कु़त़्बुल हिन्द ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ मीर शुजाउ़द्दीन हुसैन क़ादरी रिफ़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1191 हिजरी बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) हिन्द में हुई और 4 मोह़र्रम 1265 हिजरी को ह़ैदराबाद दक्कन में वफ़ात पाई, मज़ार दरगाहे कु़त़्बुल हिन्द ईदी बाज़ार में मर्जए ख़ासो आ़म है। आप ह़ाफ़िज़ व क़ारी ए कु़रआन, आ़लिमो फ़ाज़िल, मुसन्निफ़े कुतुब, वली ए कामिल और मुबल्लिग़े इस्लाम थे। आप की तब्लीग़े इस्लाम से कसीर लोगों ने इस्लाम क़बूल किया है।(5) 6 ग़ौसुल अ़स्र ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद उ़मर अ़ब्बासी क़ादरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1233 हिजरी को मौज़ए मान (ज़िल्अ़ गुजरान वाला पंजाब) के सूफ़ी ख़ानदान में हुई, 5 मोह़र्रम 1309 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार दरबारे माला क़ादरिया ख़रादां बाज़ार (ज़िल्अ़ गुजरान वाला) में है। आप क़ादरिया सिलसिले के शैख़े त़रीक़त और कसीरुल फ़ैज़ थे।(6) 7 ह़ज़रत बावाजी सलूई वाले, उस्ताज़ुल हुफ़्फ़ाज़ ह़ज़रते मौलाना ह़ाफ़िज़ गुलाम अह़मद गोलड़वी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1305 हिजरी में मौज़ए ऐनू (ख़ूशाब, पंजाब) के सालेह़ एवान ख़ानदान में हुई और 18 मोह़र्रम 1394 हिजरी को विसाल फ़रमाया और जामेअ़ मस्जिद रह़मानिया (चवा सैयदन शाह ज़िल्अ़ चकवाल)

मज़ारे हज़रते शाह सैयद मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह क़ादरी बग़दादी ह़नफ़ी رحمۃ اللہ علیہ

رحمۃ اللہ علیہ मज़ारे हज़रते ह़ाफ़िज़ मीर शुजाउद्दीन हुसैन क़ादरी रिफ़ाई

से मुत्तसिल तदफ़ीन की गई। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, जैयद आ़लिमे दीन, मुरीद व ख़लीफ़ा पीर मेहर अ़ली शाह गोलड़वी, तल्मीज़े ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत क़ाज़ी अ़ब्दुल ग़फ़ूर, बानी ए जामेअ़ मस्जिद रह़मानिया व मद्रसा, कसीर हुफ़्फ़ाज़ व उ़लमा के उस्ताज़ और साह़िबे करामत थे।(7) 8 शम्सुल उ़लमा, ताजुल औलिया, ह़जरते अ़ल्लामा शाह वजीहुद्दीन अ़लवी चिश्ती शत्तारी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 911 हिजरी में गुजरात (जांपानेर, मुज़ाफ़ाते गुजरात) हिन्द में हुई और 29 मोह़र्रम 998 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप का मज़ार मुबारक मदीनतुल औलिया अह़मदाबाद (गुजरात) हिन्द में मर्जए अनाम है। आप जैयद आ़लिमे दीन, बानी ए मद्रसा आ़लिया अ़लविया, शरीअ़तो त़रीक़त के जामेअ़, 40 से ज़ाइद कुतुब के मोह़श्शी (ह़ाशिया लिखने वाले) और मुसन्निफ़ और अकाबिर उ़लमा नीज़ मशाइख़े हिन्द से हैं।(8)

उ़लमा ए इस्लाम رحمهم الله السّلام : 9 शैख़ुल इस्लाम ह़जरते इमाम अबू उ़स्मान इस्माईल नैशापुरी साबूनी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 373 हिजरी को एक इ़ल्मी घराने में हुई और 4 मोह़र्रम 449 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप अ़ज़ीम आ़लिमे दीन, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मुह़द्दिसे वक़्त, आ़बिदो ज़ाहिद और मुसन्निफ़े कुतुब थे। बीस साल जामेअ़ मस्जिद में इमामत व ख़ित़ाबत फ़रमाई। आप की किताब अ़क़ीदतुस्सलफ़ व अस्ह़ाबुल ह़दीस आप की पेहचान है।(9) 10 हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मह़मूद मौसिली ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 599 हिजरी मौसिल (सूबा नेनवा) इराक़ में हुई। बग़दाद शरीफ़ में 19 मोह़र्रम 683 हिजरी को विसाल फ़रमाया और तदफ़ीन मक़बरा ख़ीज़रान शुमाली बग़दाद में हुई। आप अ़ज़ीम ह़नफ़ी आ़लिमे दीन, इमामे अ़स्र, फ़क़ीहे ह़नफ़ी, उस्ताज़ुल उ़लमा और मुसन्निफ़े कुतुब हैं। आप की किताब "अल मुख़्तार" मुतूने अरबआ़ (फ़िक़्हे अह़नाफ़ की चार बड़ी बुन्यादी कुतुब) में शामिल है।(10) 11 ह़ज़रते अल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अ़ब्दुस्समीअ़ बनारसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत बनारस (यूपी) हिन्द में हुई और 10 मोह़र्रम 1345 हिजरी को मदीने शरीफ़ में विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में हुई, आप जैयद आ़लिमे दीन, मुनाज़िरे इस्लाम, मजाज़े त़रीक़त, शैख़ुल ह़दीस व मुदर्रिसे मद्रसा इब्राहीमिया बनारस, 16 कुतुबो रसाइल में से एक अहम तस्नीफ़ تُحْفَۃُ الْاَتْقِیَاءِ فِیْ تَحْقِیْقِ اَفْضَلِ الْبَشَرِ بَعْدَ الْاَنْبِیَاء भी है, आप आला ह़ज़रत के मआ़सिर (यानी आप के ज़माने के थे) और आप से मह़ब्बत करते थे।(11) 12 साह़िबे दीवान शाइर ह़ज़रते मौलाना अ़ली अह़मद ख़ान असीर नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1268 हिजरी को बरैली शरीफ़ में हुई और 2 मोह़र्रम 1346 हिजरी को मदीनए मुनव्वरा में विसाल फ़रमाया। तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में हुई, आप आ़लिमे दीन, शाइरे इस्लाम, 16 कुतुब के मुसन्निफ़, बानी ए मत़बअ़ नसीमे सह़र बदायूं, सिलसिलए नक़्शबन्दिया के बुज़ुर्ग, आ़शिक़े रसूल और आग्रा कोलेज में अ़रबी के प्रोफ़ेसर थे। लिसानुल ह़स्सान मौलाना याक़ूब हुसैन ज़ियाउल क़ादरी बदायूनी आप के ले पालक बेटे और शागिर्द हैं।(12) 13 ह़ज़रते शैख़ सैयद मुह़म्मद सुहैल अल ख़त़ीब ह़सनी शाफ़ेई क़ादरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1315 हिजरी को दिमश्क़ में हुई और यहीं 10 मोह़र्रम 1402 हिजरी को विसाल फ़रमाया। दह़दाह़ क़ब्रिस्तान में दफ़्न किए गए। आप ख़ानदाने ग़ौसे आज़म के चश्मो चराग़, शैख़ बदरुद्दीन ह़सनी व ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल ह़य्य कत्तानी के शागिर्द, शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ त़राबुलुसी नक़्शबन्दी के ख़लीफ़ा, जैयद आ़लिमे दीन, मुसन्निफ़े कुतुब और सूफ़ी ए बा सफ़ा थे। फ़ज़ीलतुश्शैख़ ह़ज़रते अ़ल्लामा डॉक्टर सैयद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अल ख़त़ीब हुसैनी दिमश्क़ी حفظہ اللہ आप के जा नशीन और साह़िब ज़ादे हैं।(13)

---

(1) اسد الغابۃ، 7/316، طبقات لابن سعد، 8/188، 6/9، فتوح البلدان، ص184 (2) الاستیعاب، 1/258، تہذیب التہذیب، 1/527، البدایۃ والنہایۃ، 10/40 (3) اردو دائرہ معارفِ اسلامیہ، 12/138 (4) مختصر تعارف، ص2 تا 8 (5) محبوب ذی المنن تذکرہ اولیائے دکن، 2/1004، تذکرۃ الانساب، ص95 (6) انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 1/432 (7) مردِ کامل، ص25، 33، 57 (8) شیخ وجیہ الدین علوی گجراتی حیات و خدمات، ص4 تا 12، 210 تا 220، 257 (9) سیر اعلام النبلاء، 13/462، طبقات المفسرین للسیوطی، ص36 (10) الجواہر المضیہ، 1/291، الفوائد البہیۃ، ص137، حدائق الحنفیہ، ص289 (11) تحفۃ الاتقیاء، ص15 تا 29 (12) تذکرۂ شعراء حجاز، ص127 تا 131 (13) نثر الجواہر والدرر، 2/2059۔

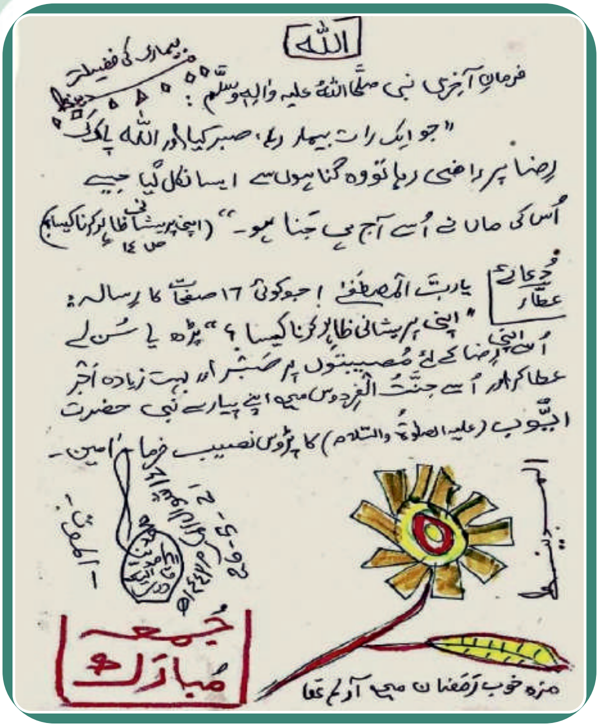

(ज़रूरतन तब्दीली की गई है)

फूल क्यूं बनाते हैं ?

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه तेह़रीर, ऑडियो और वीडियो पैग़ाम की सूरत में हर हफ़्ते जुम्अ़ा की मुबारक बाद देते और कोई एक रिसाला पढ़ने / सुनने की तरग़ीब भी दिलाते हैं और पढ़ने / सुनने वालों को दुआ़ से भी नवाज़ते हैं। 26 मई 2021 ईसवी को आप ने तेह़रीर की सूरत में रिसाला **"अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?"** पढ़ने की तरग़ीब दिलाई और तेह़रीर के नीचे फूल बनाया, जब येह तेह़रीर अमीरे एहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه के सोश्यल मीडिया पेज पर वाइरल हुई तो एक सोश्यल मीडिया युज़र जुलफ़िक़ार अ़ली ने कमेन्ट करते हुवे कुछ यूं सवाल किया : **प्यारे बापाजान !** इस पर जो फूल बनाया गया है येह कहीं वक़्त का ज़ियाअ़ (Time waste) तो नहीं बनता, इस में कैसे सवाब ह़ासिल किया जा सकता है ? राहनुमाई फ़रमा दें।

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه ने इस पर एक ऑडियो पैग़ाम में फ़रमाया :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अल्लाह पाक आप को दोनों जहां की भलाइयां नसीब फ़रमाए, आमीन।

बेटे ! येह फूल बनाना ज़ीनत के लिए है कि इस से एट्रेक्शन (Attraction) बढ़ती है और आ़म आदमी येह देख कर थोड़ा रुकता है और तेह़रीर पढ़ता है। अब तो येह ट्रेन्ड (Trend) चल रहा है, चैनल पर एक से एक फूल बूटे, सीनेरी, मनाज़िर, नक़्शो निगार बने होते हैं इस को फ़ुज़ूल नहीं कहेंगे और फिर नक़्शो निगार किताबों के सरे वरक़ (Title Page) और अन्दर भी होता है बल्कि टाइटल पर स्पेश्यली ख़र्चा किया जाता है कि टाइटल जितना ख़ूब सूरत होता है किताब की अहमियत इस से उतनी ही बढ़ जाती है, इसी वज्ह से मैं ने येह फूल बनाया है। अगर हर जुम्अ़ा एक ही त़रह़ और एक ही अन्दाज़ की तेह़रीर होगी तो हो सकता है लोग येह समझें कि येह तो पुराना है। यूं हर बार कुछ न कुछ बदल बदल कर देने की कोशिश होती है, इसी त़रह़ तरग़ीबी पैग़ाम में भी मैं कभी Voice (यानी आवाज़) देता हूं तो कभी वीडियो के साथ पैग़ाम देता हूं ताकि तब्दील हो जाए और येह न लगे कि येह पिछले जुम्अ़ा का है, इस लिए इसे फ़ुज़ूल नहीं कहेंगे, मसाजिद में, घरों में नक़्शो निगार होते हैं, इसे फ़ुज़ूल नहीं कहेंगे बल्कि येह मुबाह़ है (यानी ऐसा काम है जिस का करना न करना यक्सां (Same) हो) जो अच्छी निय्यत से सवाब का काम बन जाता है।

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में पाबन्दी से शरीक हुवा करें और सुन्नतें सीखने, सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में भी हर महीने तीन दिन सफ़र की सआ़दत ह़ासिल किया करें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ताज़ियत व इयादत

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़मीद मुह़म्मद सालिमुल क़ादरी के इन्तेक़ाल पर ताज़ियत

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیِّیْن

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ

मुझे येह अफ़्सोस नाक ख़बर मिली कि ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ग़नी अ़तीफ़ मियां क़ादरी उ़स्मानी बदायूनी और ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इज़ाम मियां क़ादरी उ़स्मानी क़ुदसी के वालिदे गिरामी ज़ेबे सज्जादा आस्तानए आ़लिया क़ादरिया बदायूं शरीफ़, पीरे त़रीक़त, फ़ख़्रे क़ादरियत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शैख़ ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ह़मीद मुह़म्मद सालिमुल क़ादरी दिल की बीमारी में मुब्तला रेहते हुवे 26 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 9 मई 2021 को 82 साल की उ़म्र में बदायूं शरीफ़ में क़ज़ा ए इलाही से इन्तेक़ाल फ़रमा गए, اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن

मैं तमाम सोगवारों से ताज़ियत करता हूं और सब्रो हिम्मत से काम लेने की तल्क़ीन करता हूं। या रब्बल मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُہٗ وَ صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم ! ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शैख़ ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ह़मीद मुह़म्मद सालिमुल क़ादरी को ग़रीक़े रेह़मत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** पाक ! इन्हें अपने जवारे रेह़मत में जगह नसीब फ़रमा, इलाहल आ़लमीन ! इन की क़ब्र जन्नत का बाग़ बने, रेह़मत के फूलों से ढके, नूरे मुस्त़फ़ा के सदक़े ता ह़श्र जगमगाती रहे, ऐ **अल्लाह** पाक ! क़ब्र की वेह़शत, तंगी, घबराहट सब दूर हो, मौला ए करीम ! मर्ह़ूम को बे ह़िसाब मग़्फ़ेरत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा, या **अल्लाह** पाक ! तमाम सोगवारों को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मरह़मत फ़रमा, परवरदगार ! मेरे पास जो कुछ टूटे फूटे आमाल हैं अपने करम के शायाने शान इन का अज्र अ़त़ा फ़रमा कर येह सारा अज्रो सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इनायत फ़रमा, ब वसीलए ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सारा अज्रो सवाब ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शैख़ ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ह़मीद मुह़म्मद सालिमुल क़ादरी समेत सारी उम्मत को इनायत फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सब्रो हिम्मत से काम लीजिए, **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहिए और शैत़ान के वस्वसों पर तवज्जोह न दीजिए, जिस का वक़्त पूरा होता है वोह चला जाता है अगर कोई दुन्या में एक दिन का टाइम लाया है तो उसे एक दिन के बाद मर जाना है जैसे एक दिन का बच्चा मर जाता है और जिस को **अल्लाह** नसीब करता है तो वोह 100 साल तक ज़िन्दा रेहता है। बहर ह़ाल मरना फिर भी है इस लिए जिस का वक़्त पूरा हुवा वोह चला गया, हमें **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रेहना चाहिए और सब्र करना चाहिए, वावेला मचाने से जाने वाले ने पलट कर कहां आना है ! हमें भी तो जाना है, हमें अपनी आख़ेरत की फ़िक्र करनी चाहिए और इस की तैयारी के लिए सामान करना चाहिए कि जिस त़रह़ वोह गया, एक दिन हम भी इस दुन्या से चले जाएंगे, दुन्या से दिल नहीं लगाना है, दुन्या इब्रत की जगह है कोई तमाशा नहीं है।

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

(इस के बाद अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मर्ह़ूम के ईसाले सवाब के लिए फ़ैज़ाने रमज़ान (मुरम्मम) से एक ह़दीसे पाक बयान फ़रमाई :) फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : रोज़े की ह़ालत में जिस का इन्तेक़ाल हुवा **अल्लाह** पाक उस को क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है।

(الفردوس بماثور الخطاب،3/504،حدیث:5557)

रेह़मते आ़लमियान का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस को रमज़ान के इख़्तेताम के वक़्त मौत आई वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

(ह़िल्यतुल औलिया, 5/26, ह़दीस : 6187)

दावते इस्लामी आप की अपनी दीनी तेह़रीक है, इस के लिए हमेशा दुआ़ फ़रमाते रहिए और अपने चाहने वालों को दावते इस्लामी के दीनी कामों में ह़िस्सा लेने की तरग़ीब दिलाते रहिए, और जब जब मौक़अ़ मिले इस्लामी भाइयों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई के लिए दावते इस्लामी के इजतेमाआ़त वग़ैरा में भी करम फ़रमाइए, **अल्लाह** करीम आप साह़िबान को ख़ुश रखे, शादो आबाद, फलता फूलता मदीने के सदा बहार फूलों के सदक़े मुस्कुराता रखे। ज़हे नसीब मर्ह़ूम के ईसाले सवाब के लिए **अल्लाह** करीम के दिए हुवे माल में से मस्जिद बना दीजिए या मस्जिद की तामीर में ह़िस्सा ही ले लीजिए, मस्जिद बनाने की बड़ी फ़ज़ीलत है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने अपने ह़लाल माल से वोह घर बनाया जिस में **अल्लाह** पाक की इबादत की जाए **अल्लाह** पाक उस के लिए जन्नत में मोती और याक़ूत का घर बनाएगा।

(معجم الاوسط، 4/17، حدیث: 5059)

बे ह़िसाब मग़फ़ेरत की दुआ़ का मुल्तजी हूं।

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सैयद अह़मद शाह साह़ब के इन्तेक़ाल पर ताज़ियत

मुफ़्ती ए आज़म कच्छ मांडवी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सैयद अह़मद शाह क़ादरी साह़ब 25 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 8 मई 2021 ईसवी को 100 साल की उ़म्र में मांडवी कच्छ गुजरात हिन्द में इस दारे फ़ानी से तशरीफ़ ले गए। शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन के साह़ब ज़ादों सैयद अमीन शाह साह़ब, सैयद हुसैन शाह साह़ब, सैयद क़ासिम शाह साह़ब, सैयद उ़स्मान शाह साह़ब और सैयद अबू बक्र शाह साह़ब समेत तमाम सोगवारों से ताज़ियत की और ह़ज़रत के लिए दुआ़ ए मग़फ़ेरत करते हुवे ईसाले सवाब किया।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मई 2021 ईसवी में 1957 पैग़ामात जारी फ़रमाए जिन में से 474 ताज़ियत के, 1381 इयादत के जबकि 63 दीगर पैग़ामात थे, ताज़ियत वालों में से चन्द के नाम येह हैं :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 1 आले रसूल, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, शैख़ुल मुस्लिमीन, शेहज़ादए ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, अ़ल्लामा अलह़ाज अश्शाह सैयद ह़सनैन रज़ा क़ादरी (सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे रह़मानिया कैरी शरीफ़, बांका बिहार, हिन्द)[1] 2 क़ाज़ी शेहरे बूंदी, पीरे त़रीक़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद निज़ामुद्दीन साह़ब (बूंदी राजस्थान, हिन्द)[2] 3 आले रसूल, पीरे त़रीक़त ह़ज़रत सैयद इक़्बाल अ़ली शाह साह़ब (अह़मदाबाद शरीफ़, हिन्द)[3] 4 ख़लीफ़ए मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, सूफ़ी ए बा सफ़ा, आ़लिमे बा अ़मल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शरीफ़ अह़मद रज़वी साह़ब[4] 5 फ़क़ीहे नेपाल, सद्र मर्कज़ी इदारए शरइय्या जनकपुर, ह़ज़रते अ़ल्लामा अलह़ाज मुफ़्ती उ़स्मान रज़वी साह़ब (जनकपुर, नेपाल)[5] और 6 ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अकरम क़ादरी साह़ब[6] समेत दीगर कई आ़शिक़ाने रसूल के इन्तेक़ाल पर उन के सोगवारों से ताज़ियत की और मर्ह़ूमीन के लिए दुआ़ ए मग़फ़ेरत करते हुवे ईसाले सवाब भी किया। नीज़ अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सेंकडों बीमारों और दुख्यारों के लिए दुआ़ ए सेह़तो आ़फ़ियत भी फ़रमाई।

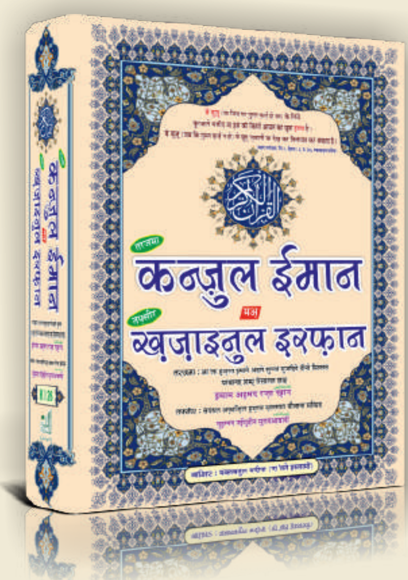

(1) तारीख़े वफ़ात : 22 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 5 मई 2021 ईसवी
(2) तारीख़े वफ़ात : 22 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 5 मई 2021 ईसवी
(3) तारीख़े वफ़ात : 2 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 15 एप्रील 2021 ईसवी
(4) तारीख़े वफ़ात : 3 शव्वालुल मुकर्रम 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 15 मई 2021 ईसवी
(5) तारीख़े वफ़ात : 5 शव्वालुल मुकर्रम 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 17 मई 2021 ईसवी
(6) तारीख़े वफ़ात : 3 शव्वालुल मुकर्रम 1442 हिजरी मुत़ाबिक़ 15 मई 2021 ईसवी

मौजिज़ात और इन की अक़्साम

मौलाना मुहम्मद नासिर जमाल अ़त्तारी मदनी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों को गुमराही से बचाने और सीधा रास्ता चलाने के लिए अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया और इन्हें बे शुमार कमालात और खुसूसियात से नवाज़ा, जिन में से एक मोजिज़ा है।

मोजिज़ा किसे केहते हैं ? एलाने नबुव्वत के बाद नबी से ऐसा अ़जीबो ग़रीब काम ज़ाहिर हो जो आ़दतन मुमकिन नहीं होता वोह मोजिज़ा केहलाता है। मोजिज़े की तीन क़िस्में हैं : (1) लाज़मी मोजिज़ात जैसे खुश्बूदार पसीना (2) आ़रज़ी इख़्तियारी मोजिज़ात जैसे अ़सा का अज़्दहा बन जाना (3) आ़रज़ी ग़ैर इख़्तियारी मोजिज़ात जैसे आयाते कुरआनिया का नुज़ूल (मिरआतुल मनाजीह़, 8/53) मोजिज़े के ज़रीए़ सच्चे और झूटे नबी में फ़र्क़ होता है इस लिए कोई झूटा "**नबुव्वत का दावा**" कर के मोजिज़ा नहीं दिखा सकता। (المعتقد المنتقد، ص113)

आख़िरी नबी मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात : चूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम नबियों से अफ़्ज़ल हैं इसी लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तमाम मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात की दो क़िस्में हैं :

(1) ज़ाते मुबारका (Body) से मुतअ़ल्लिक़ मोजिज़ात : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात का ज़ाहिरो बात़िन सरापा मोजिज़ा है। **मूए मुबारक का मोजिज़ा येह है** कि ह़ज़रते सैयदना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की टोपी में रहे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को हमेशा दुश्मनों पर फ़त्ह़ मिली। (عمدۃ القاری، 2/484، تحت الحدیث:170) **लुआ़बे मुबारक का मोजिज़ा येह है** कि ख़ैबर में ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की दुखती आंख पर लगने से आराम आ गया। (بخاری، 2/294، حدیث:2942) लुआ़बे दहन कुंवें में शामिल हुवा तो उस के पानी से शिफ़ा मिलने लगी। (طبقات ابن سعد، 1/392) **उंगलियों का मोजिज़ा येह है** कि इन से पानी के चश्मे जारी हो जाते। (بخاری، 2/493، حدیث:3573) **पसीने का मोजिज़ा येह है** कि निहायत खुश्बूदार होता। (مسلم، ص978، حدیث:6055)

(2) ज़ाते मुबारका के इलावा मोजिज़ात : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस क़िस्म के बे शुमार मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए, इन में से चन्द मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 पथ्थर तैरने लगा : ईमान लाने से क़ब्ल ह़ज़रते सैयदना इकरिमा बिन अबी जहल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पानी के कनारे खड़े हो कर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह मुत़ालबा किया कि अगर आप सच्चे हैं तो दूर पड़ा पथ्थर पानी में डूबे बग़ैर तस्बीह़ करता हुवा आप के पास आए, चुनान्चे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशारा फ़रमाया तो वोह पथ्थर डूबे बग़ैर बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िर हुवा और रिसालत की गवाही दी, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : इतना काफ़ी है ? ह़ज़रते सैयदना इकरिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : येह पथ्थर वापस अपनी जगह लौट जाए। चुनान्चे वोह पथ्थर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म पा कर वापस लौट गया। (تفسیر کبیر، 314/12)

2 मुर्दा बेटी ज़िन्दा कर दी : एक शख़्स ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के लिए येह शर्त़ रखी कि मेरी बेटी ज़िन्दा हो जाए चुनान्चे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और उस की मुर्दा बेटी ज़िन्दा कर दी। (زرقانی علی المواھب، 61/7)

3 लकड़ी तल्वार बन गई : जंगे बद्र में ह़ज़रते सैयदना उ़क्काशा बिन मोह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार टूट गई, बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक लकड़ी इनायत फ़रमाई। जब ह़ज़रते सैयदना उ़क्काशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे हाथ में ले कर हिलाया तो वोह सफ़ेद तल्वार बन गई जिसे औ़न कहा जाता था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम उ़म्र उस तल्वार के साथ जेहाद में शिर्कत फ़रमाई और फ़त्ह़ पाई। (سیرت ابن ہشام، ص263)

4 सब से बुलन्द नज़र आते : ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब पैदा हुवे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़द बहुत ज़्यादा छोटा था, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पेश किया गया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें घुट्टी दी, सर पर हाथ फेरा और दुआ़ ए बरकत फ़रमाई जिस का असर येह ज़ाहिर हुवा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मजमेअ़ में दराज़ क़द नज़र आते। (الاصابۃ، 30/5)

5 दरख़्त ने गवाही दी : आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बुलन्दो बाला शान ऐसी है कि जानदार तो जानदार बे जान चीज़ें भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताबेए़ फ़रमान हैं। एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सफ़र में थे, इस दौरान एक आराबी बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे इस्लाम की दावत दी, उस आराबी ने पूछा : क्या आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत पर कोई गवाह भी है ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि हां ! येह दरख़्त जो मैदान के कनारे पर है मेरी नबुव्वत की गवाही देगा। चुनान्चे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस दरख़्त को बुलाया तो ह़ैरत अंगेज़ त़ौर वोह दरख़्त फ़ौरन ज़मीन चीरता हुवा अपनी जगह से चल कर बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो गया और उस ने ब आवाज़े बुलन्द तीन मरतबा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की गवाही दी। फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को इशारा फ़रमाया तो वोह दरख़्त वापस अपनी जगह चला गया। आराबी येह मोजिज़ा देखते ही मुसलमान हो गया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस हाथ और मुबारक पाउं को वालेहाना अ़क़ीदत से चूमने की सआ़दत भी ह़ासिल की। (زرقانی علی المواہب، 517/6 ملخصاً)

क़ियामत तक बाक़ी रेहने वाला मोजिज़ा : नबिय्ये अकरम, रेह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सब से बड़ा मोजिज़ा क़ुरआने करीम है क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दूसरे मोजिज़ात तो अपने वक़्त पर ज़ाहिर हुवे और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने ही के लोगों ने वोह मोजिज़ात मुलाह़ज़ा किए मगर **"क़ुरआने करीम"** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ियामत तक बाक़ी रेहने वाला मोजिज़ा है।

आओ बच्चो ! ह़दीसे रसूल सुनते हैं

अच्छा सवाल

मौलाना मुह़म्मद जावेद अ़त्तारी मदनी

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "حُسْنُ السُّوَالِ نِصْفُ الْعِلْمِ" यानी अच्छा सवाल करना आधा इ़ल्म है ।

(معجم الاوسط، 5/108، حدیث:6744)

प्यारे बच्चो ! अच्छे सवाल के ज़रीए़ हम थोड़े वक़्त में ज़्यादा और अच्छी मालूमात ह़ासिल कर सकते हैं, सवाल को इ़ल्म की चाबी कहा गया है, जो इस चाबी (Key) का अच्छा इस्तेमाल करेगा उस के लिए इ़ल्म का लोंक खुल जाएगा और वोह इ़ल्म के दरवाज़े से दाख़िल हो कर बहुत सारा इ़ल्म ह़ासिल कर लेगा । जो ज़्यादा सवाल करता है वोह ज़्यादा इ़ल्म ह़ासिल करने में कामयाब होता है ।

बाज़ बच्चे सवाल करने में शर्म मेह़सूस करते हैं, क्लास में भी इसी शर्म की वज्ह से अपने टीचर से सवाल नहीं करते और यूं अपना सबक़ (Lesson) भी सह़ीह़ से नहीं समझते, इस का नुक़्सान उन्हें तब समझ में आता है जब दूसरे दिन टीचर वोही सबक़ सुनते हैं ।

अच्छे बच्चो ! अपने अब्बू, चाचू, दादा, टीचर या मस्जिद के इमाम साह़ब से वुज़ू, नमाज़ और दीगर दीनी और दुन्यावी मालूमात ह़ासिल करने के लिए अदब के साथ अच्छे अच्छे सवाल ज़रूर कीजिए ।

याद रहे कि सवाल अच्छे हों । उल्टे सीधे और बिला वज्ह के सवालात कर के अपने टीचर, अब्बू, दादा वग़ैरा को परेशान करना बुरी बात है ।

अल्लाह पाक हमें अच्छे अच्छे सवाल कर के अच्छी अच्छी मालूमात ह़ासिल करते रेहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिए अमीरे एहले सुन्नत की नसीह़त

पानी की क़द्र कीजिए

मौलाना उवैस यामीन अ़त्तारी मदनी

अच्छे बच्चो ! अमीरे एहले सुन्नत अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी साह़ब फ़रमाते हैं :

पानी के एक एक क़त़रे का ह़िसाब देना है लेहाज़ा जब भी वुज़ू करने लगें को नल इतना खोलें जितनी ज़रूरत है, ज़्यादा खोलना और पानी ज़ाएअ़ करते रेहना ख़त़रनाक है और फिर मस्जिद या मद्रसे का पानी जो वक़्फ़ का होता है उसे ज़ाएअ़ करना तो और भी ज़्यादा सख़्त है ।
(मल्फ़ूज़ाते अमीरे एहले सुन्नत (क़िस्त़ 101), सनसनी खेज़ मनाज़िर देख कर क्या तसव्वुर करना चाहिए ? स. 10)

प्यारे बच्चो ! पानी **अल्लाह** पाक की नेमतों में से एक नेमत है, हमें इस नेमत की क़द्र करनी चाहिए और ज़रूरत से ज़्यादा पानी ख़र्च नहीं करना चाहिए, वुज़ू करते या नहाते हुवे पानी देख भाल कर ख़र्च करें, इसी त़रह़ हाथ मुंह या पाउं धोते वक़्त पानी ज़्यादा न बहाएं ।

अच्छे आम ख़राब कैसे हुवे ?

मौलाना हैदर अ़ली मदनी

नन्हे मियां स्कूल से वापस घर पहुंचे तो बेग रखते ही सीधा किचन में अम्मीजान के पास जा पहुंचे और केहने लगे : अम्मीजान ! मैं आप से नहीं बोलता,

अरे मां के जिगर के टुकड़े ! पेहले सांस तो ले लो, पानी तो पी लो इस के बाद गिले शिकवे भी कर लेना, अम्मीजान ने शफ्क़त से नन्हे मियां के माथे पर आए पसीने के क़तरों को अपने दूपट्टे से साफ़ करते हुवे जवाब दिया और फिर फ़्रीज में पेहले से तैयार रखे हुवे शरबत के जग में से ग्लास भर कर नन्हे मियां को पकड़ाते हुवे कहा : जी ! अब बताइए किस बात की नाराज़ी है नन्हे मियां को अपनी अम्मीजान से,

मैं ने आप से कहा भी था कि मुझे लंच में पराठा और आमलेट नहीं बल्कि चिप्स और ज्यूस ले जाना है क्यूंकि **शाहिद** भी वोही लाता है लेकिन आप ने आज फिर मेरे टिफ़िन में पराठा रख दिया था।

नन्हे मियां के मुंह से शाहिद का नाम सुन कर अम्मीजान परेशान हो गईं, शाहिद नन्हे मियां के नए नए दोस्त थे और आज कल उठते बैठते नन्हे मियां की ज़बान पर उन्ही का नाम था, शाहिद आज लंच में येह लाया था, शाहिद ने नई ड्रोइंग बुक ली है, शाहिद के चाचू ने उस के लिए फुलां गिफ़्ट भेजा है वग़ैरा वग़ैरा, शुरूअ़ शुरूअ़ में अम्मीजान ने इसे बड़ी बात नहीं समझा था लेकिन वक़्तन फ़ वक़्तन शाहिद मियां जैसी चीज़ों की फ़रमाइशें सुन सुन कर उन्हें एह़सास हो रहा था कि अब नन्हे मियां की दादीअम्मां को बताने का वक़्त आ चुका है।

नमाज़े ज़ोहर पढ़ने के बाद जब नन्हे मियां सोने लगे तो अम्मीजान ने दादी अम्मां के कमरे का रुख़ किया और इन्हें सारी सूरते ह़ाल से आगाह कर दिया।

शाम में नन्हे मियां उठे और अ़स्र की नमाज़ पढ़ने मस्जिद पहुंच गए, वापसी पर जैसे ही घर में दाख़िल हुवे तो देखा कि सामने बरामदे में दादी अम्मां आमों की टोकरियां रखे अपनी कुर्सी पर बैठी अम्मीजान से बातें कर रही थीं, नन्हे मियां जल्दी से उन के पास पहुंच कर केहने लगे :

आहा !!! आम आए हैं हमारे घर !

जी नन्हे मियां, आप के मामूंजान ने गाऊं से भेजे हैं हम सब के लिए, इधर आओ मेरे पास बैठ जाओ, तुम्हारी अम्मीजान इन में से पड़ोसियों के ह़िस्से बना रही हैं, इतना केह कर दादी अम्मां ने नन्हे मियां का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने पास ख़ाली कुर्सी पर बिठा लिया। फिर आहिस्ता से पूछने लगीं : आप का दोस्त शाहिद कैसा है ?

बिलकुल ठीक है दादी अम्मां, आप को पता है अब मैं अपनी जगह तब्दील करवा कर शाहिद के बराबर में बैठता हूं।

दादी अम्मां बोलीं : क्या आप इस बात से रिज़ामन्द (*Agree*) हैं कि आप के सारे दोस्तों की हर हर बात और आ़दत अच्छी है ? नन्हे मियां केहने लगे : वोह तो है दादी अम्मां, सब की आ़दतें अलग अलग होती है कुछ अच्छी लगती हैं और कुछ बुरी भी लगती हैं लेकिन मुझे इस से क्या फ़र्क़ पड़ता है, मैं कौन सा उन से बुरी बातें सीखता हूं, कभी आप ने मुझे बद तमीज़ी करते देखा है क्या ?

अरे नन्हे मियां ! आप तो बहुत अच्छे बच्चे हैं लेकिन कई दिनों से आप ख़्वाह म ख़्वाह फ़रमाइशें कर रहे हैं आप की येह बात मुझे परेशान कर रही है याद रखिए कि आदमी जिन के साथ रेहता है आहिस्ता आहिस्ता वोह उन जैसा बनने लगता है और उसे पता भी नहीं चलता। इतना केह कर दादी अम्मां नन्हे मियां की अम्मीजान से मुख़ात़ब हो कर केहने लगी : बहू ज़रा मुझे वोह टोकरी में से दो अच्छे से आम पकड़ाना और साथ ही अपनी बाईं त़रफ़ रखी टोकरी में से एक ख़राब हुवा आम उठा कर नन्हे मियां को देते हुवे कहा : नन्हे मियां येह तीनों आम आप अपनी अलमारी में किसी काग़ज़ में लपेट कर रख लें, जब मैं मांगूं तो ले आना। नन्हे मियां ने तीनों आम पकड़े और "जी अच्छा" केहते हुवे अपने कमरे में चले गए।

दो दिन बाद अ़स्र के बाद क़ारी साह़ब से क़ुरआने पाक का सबक़ पढ़ कर फ़ारिग़ हुवे तो बरामदे में जाए नमाज़ बिछाए तस्बीह़ पढ़ती दादी अम्मां के पास चले आए, इन्हें देखते ही दादी केहने लगीं : नन्हे मियां ! ज़रा वोह आम तो लाना जो मैं ने आप के पास रखवाए थे।

नन्हे मियां थोड़ी देर बाद कमरे से वापस आए तो दोनों हाथों में अख़्बार में लिपटे हुवे आम पकड़ रखे थे और ला कर दादी अम्मां के सामने रख दिए।

काग़ज़ खोलो नन्हे मियां ! दादीजान का हुक्म सुन कर नन्हे मियां ने काग़ज़ खोल कर देखा तो ह़ैरानी उन की आंखों से ज़ाहिर थी और बोले : दादी अम्मां ! येह तो **सह़ीह़ वाले दो आम भी ख़राब हो चुके हैं !**

जी नन्हे मियां ! क्यूंकि वोह कुछ दिन ख़राब आम के साथ रहे तो वैसे ही बन गए येही ह़ाल इन्सान का भी है, वोह जैसे दोस्त बनाता है, जिन के साथ रेहता है रफ़्ता रफ़्ता उन्ही की आ़दतें अपनाने लगता है हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है

(ابوداؤد، 4/341، حدیث: 4833)

यानी उसी जैसी आ़दात, अख़्लाक़ और सिफ़ात इख़्तियार करता है।

(شرح الطیبی علی مشکاۃ، 9/240، تحت الحدیث: 5019)

लेहाज़ा नन्हे मियां आप ने दोस्त बनाने ही हैं तो ऐसे बनाएं जिन से आप अच्छे अच्छे काम और अच्छी अच्छी बातें सीख सकें। आम वाली मिसाल और फिर फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर नन्हे मियां को सारी बात अच्छी त़रह़ समझ आ चुकी थी, अच्छा दादीजान ! मैं आइन्दा सिर्फ़ अच्छे बच्चों से ही दोस्ती करूंगा।

शाबाश नन्हे मियां ! अब जाओ अम्मीजान से कहो कि आम काट कर यहां ले आएं हम सब मिल कर खाएंगे।

बच्चों को सफ़ाई का आ़दी बनाइए

मौलाना आसिफ़ जहांज़ेब अ़त्तारी मदनी

बच्चे बढ़ती उ़म्र में अपने इर्द गिर्द के माहो़ल से बहुत कुछ सीखते हैं। येह वोह वक़्त होता है कि बच्चों को जिस सांचे में ढाला जाए वोह ढल जाते हैं। बच्चों को इसी उ़म्र से सफ़ाई सुथराई का आ़दी बनाना चाहिए क्यूंकि बचपन से डाली गई आ़दात उ़म्र भर बच्चों के साथ रेहती हैं। बच्चों में सफ़ाई की आ़दत डालने के लिए दर्जे ज़ैल काम बच्चों से बार बार करवाइए :

1 सुब्ह़ उठने के बाद उन्हें सब से पेहले हाथ मुंह धोने, दांत साफ़ करने और बालों में कंघी करने का कहिए। गर्मी के मौसम में रोज़ाना जबकि सर्दी के मौसम में कुछ वक़्फ़ा कर के नहाने की तरग़ीब दीजिए, ख़ास तौ़र पर जब वोह बाहर से खेल कर आएं या गर्मी के बाइ़स पसीना आ गया हो। रोज़ाना नहाने से उन का जिस्म भी साफ़ रहेगा और बीमार होने के इमकानात भी कम होंगे।

2 खाने से पेहले उन के हाथ ज़रूर धुलवाइए, उन की आ़दत मज़बूत़ करने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप खुद भी उन के साथ येह काम कीजिए ताकि वोह आप को देख कर इन कामों को सीख सकें।

3 काफ़ी दिन तक अगर नाखुन न तराशे जाएं तो इन के नीचे मैल जम्अ़ हो जाता है जो बुरा लगने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ बीमारियों का बाइ़स भी बनता है। इस के लिए हफ़्ते या 10 दिन में एक बार बच्चों के नाखुन ज़रूर तराशें।

4 बच्चे पूरा दिन खेल कूद और मुख़्तलिफ़ कामों में मसरूफ़ रेहते हैं जिस की वज्ह से कपड़ों और जिस्म पर मिट्टी वग़ैरा भी लग जाती है, लेहाज़ा खेलने के बाद अगर जिस्म या कपड़ों पर मिट्टी वग़ैरा लग जाए तो उन के कपड़े और हाथ पाउं ज़रूर साफ़ करवाइए।

5 कम उ़म्र बच्चे खेलने के लिए खिलौने इस्तेमाल करते हैं। खेलने के बाद अक्सर वोह खिलौने बिखरे हुवे छोड़ देते हैं। खेलने के बाद उन्हें समेटना भी सिखाइए। इसी त़रह़ खाना खाने के बाद बरतन समेटने, दस्तर ख़्वान उठाने वग़ैरा जैसे छोटे छोटे काम भी करवाइए, इस त़रह़ उन में अपने इर्द गिर्द की चीज़ों की ह़िफ़ाज़त करने और समेट कर रखने की आ़दत पुख़्ता होगी।

6 बच्चों को इस बात का शुऊ़र दिलाइए कि स्कूल या मद्रसे से आने के बाद अपना यूनीफ़ोर्म, स्कूल बेग और जूते वग़ैरा इन की मुक़र्ररा जगह पर रखें, इसी त़रह़ होमवर्क करने के बाद पेन्सिल, कलर्ज़, कॉपियां, किताबें वग़ैरा भी संभाल कर रखने का कहिए, इस त़रह़ उन्हें चीज़ों की अहमियत का एह़सास होगा।

7 बच्चों को अपने कपड़ों और दीगर ज़रूरियात की चीज़ों की ह़िफ़ाज़त करना सिखाइए, उन्हें बार बार समझाइए कि वोह अपने कपड़ों को गन्दगी और दाग़ धब्बों से मेह़फ़ूज़ रखने की कोशिश करें, गन्दी जगहों

पर खेलें, खाना एह़तियात़ से खाएं ताकि कपड़े खाने वग़ैरा के दाग़ से मेह़फ़ूज़ रहें, कपड़े धुलने के बाद अपने कपड़े उन्हें खुद तेह कर के अलमारी में तरतीब से रखना सिखाइए। इस त़रह़ उन के ज़ेहन में येह बात बैठने लगेगी कि हर चीज़ की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा मुख़्तलिफ़ है।

8 बच्चे उ़मूमन त़रह़ त़रह़ की चीज़ें खाते रेहते हैं मसलन टॉफ़ियां, बिस्किट वग़ैरा और खाने के बाद इन के रेपर जगह जगह फेंक देते हैं, लेहाज़ा बच्चों को इस बात का भी आ़दी बनाइए कि वोह चीज़ें खाने के बाद कचरा डस्ट बिन में फेंकें।

9 इर्द गिर्द के साफ़ सुथरे माह़ोल का दिलो दिमाग़ पर भी अच्छा असर पड़ता है। आप भी अपने आस पास का माह़ोल साफ़ रखिए और बच्चों को भी माह़ोल साफ़ रखने का शुऊ़र दीजिए, इस के लिए आप उन से घर की सफ़ाई के कुछ हल्के फुल्के काम भी करवाइए जो वोह बा आसानी कर सकें, मसलन एक दिन टेबल की सफ़ाई करवा लीजिए, कुछ दिन बाद पलंग की डस्टिंग करवा लीजिए। इन्हें येह काम बत़ौरे टास्क दीजिए और काम मुकम्मल करने की सूरत में कोई न कोई इन्आ़म भी दीजिए, इस त़रह़ वोह मज़ीद बेहतर अन्दाज़ में माह़ोल को साफ़ रखना सीखेंगे और शौक़ से येह काम करेंगे।

10 जब आप बच्चों को सफ़ाई का आ़दी बना रहे हों, उस वक़्त उन्हें येह भी बताते रहिए कि सफ़ाई न सिर्फ़ हमारे लिए ज़रूरी है बल्कि **अल्लाह** पाक को भी पाकीज़गी पसन्द है, हमारे दीन में सफ़ाई को ख़ुसूसी अहमियत ह़ासिल है। हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ाई को पसन्द फ़रमाते थे। हमारे दीन में सफ़ाई को निस्फ़ ईमान क़रार दिया गया है। इस त़रह़ बच्चों को दीन की आगाही मिलती रहेगी। लेकिन येह बात ज़रूर याद रखिए कि समझाने और तरग़ीब दिलाने में सख़्त अन्दाज़ हरगिज़ न हो।

अल्लाह पाक हम सब को अपनी औलाद की अच्छी तरबियत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हुरूफ़ (अक्षर) मिलाइए !

و	ع	ر	ت	ے	م	ی	پ	ک
گ	ھ	ج	ک	ل	ب	ٹ	ق	چ
د	**ر**	**ی**	**م**	**ج**	**ا**	ح	خ	ھ
آ	م	ی	ل	ی	ر	ب	ڈ	و
م	ل	و	ھ	چ	ک	گ	ؤ	چ
ژ	ذ	م	ڈ	ز	پ	ش	ط	ھ
ث	ظ	ف	ی	س	و	ھ	گ	ہ
ع	ر	ہ	ر	ہ	ر	ا	م	پ

हमारे प्यारे मुल्क हिन्दुस्तान में **अल्लाह** के कई नेक बन्दों के मज़ारात हैं। सूफ़िया ए किराम और औलिया ए उ़ज़्ज़ाम बड़ी दूर दूर से सफ़र कर के यहां पहुंचे, जैसा कि ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ। हमारे मुल्क में कई मश्हूर मज़ारात और ख़ानक़ाहें ऐसी हैं जहां के मुतवस्सिलीन व मुतअ़ल्लिक़ीन ने हमेशा वत़ने अ़ज़ीज़ की ख़िदमत की है और इन्सानियत, हमदर्दी, भाईचारा, सुल्ह़ व मह़ब्बत और उख़ुव्वत का पैग़ाम दिया है।

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे की त़रफ़ और सीधी से उल्टी त़रफ़ हुरूफ़ मिला कर 5 नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "اجمیر" तलाश किया गया है।

अब येह 5 नाम तलाश कीजिए :

1 بریلی 2 مارہرہ 3 مبارک پور 4 کچھوچھہ 5 گھوسی۔

(1) बरैली (2) मारेहरा (3) मुबारकपुर (4) किछौछा (5) घोसी।

उम्मे मीलाद अ़त्तारिया

सादाते किराम की मह़ब्बत व ख़ैर ख़्वाही

वाकि़अ़ए करबला के बाद एहले बैत को मदीनए मुनव्वरा तक पहुंचाने के लिए जिस शख़्स को मुक़र्रर किया गया था वोह बहुत नेक दिल था, उस ने पूरे रास्ते एहले बैत की ज़रूरियात का ख़याल रखा और उन के साथ नर्मी और हुस्ने सुलूक से पेश आया, जब येह क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरा पहुंच चुका तो शेहज़ादी ए शेरे ख़ुदा ह़ज़रत ज़ैनब की छोटी बहन फ़ात़िमा बिन्ते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہم ने ह़ज़रते ज़ैनब से अ़र्ज़ की : इस शख़्स ने पूरे सफ़र में हमारा ख़ूब ख़याल रखा है, हमें भी इसे कुछ न कुछ इन्आ़म देना चाहिए। ह़ज़रते ज़ैनब رضی اللہ تعالٰی عنہا ने फ़रमाया कि हम इस शख़्स को सिर्फ़ अपने ज़ेवरात ही पेश कर सकते हैं। चुनान्चे दोनों शेहज़ादियों ने अपने कंगन वग़ैरा उतार कर उसे दे दिए और साथ ही माज़ेरत भी की (कि इस के इ़लावा हमारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं), उस शख़्स ने वोह तमाम सामान वापस लौटा दिया और अ़र्ज़ की : अगर मैं ने येह ख़िदमत गुज़ारी दुन्यवी मफ़ाद के लिए की होती तो यक़ीनन इस इन्आ़म पर मुझे ख़ुशी होती, मगर मैं ने तो येह ख़िदमत सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की ख़ुशनूदी और रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم से आप लोगों की क़राबत दारी की वज्ह से की है। (الکامل فی التاریخ، 440/3)

मोह़तरम इस्लामी बहनो ! सादाते किराम से मह़ब्बत ईमाने कामिल की निशानी है और इश्क़े रसूल का तक़ाज़ा है कि एहले बैत से ह़द दरजा मह़ब्बत की जाए और उन की इ़ज़्ज़त व तकरीम की जाए, अह़ादीसे मुबारका में जा बजा सादाते किराम से मह़ब्बत और उन के साथ ख़ैर ख़्वाही करने का फ़रमाया गया है चुनान्चे प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : हम एहले बैत की मह़ब्बत को ख़ुद पर लाज़िम करो क्यूंकि जो (ब रोज़े क़ियामत) **अल्लाह** से इस ह़ाल में मिले कि वोह हम से मह़ब्बत रखता हो तो वोह हमारी शफ़ाअ़त के सबब जन्नत में दाख़िल होगा। (معجم الاوسط، 606/1، حدیث:2230) एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : जिस ने मेरे एहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक किया तो मैं क़ियामत के दिन उसे इस का सिला दूंगा। (الکامل لابن عدی، 425/6)

सादाते किराम की मह़ब्बत व इकराम के बाब में बुज़ुर्गाने दीन की सीरत भी हमारे लिए मश्अ़ले राह है चुनान्चे एक सैयद ज़ादे जब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के पास किसी काम से तशरीफ़ लाए तो इस मौक़ेअ़ पर आप ने उन से अ़र्ज़ की : "अगर आप को कोई काम हो तो आप मुझे त़लब फ़रमा लिया करें या मुझे ख़त़ लिख कर भेज दिया कीजिए। आप को अपने दरवाज़े पर खड़ा देख कर मुझे शर्मिन्दगी हो रही है।" (نور الابصار، ص129) इसी त़रह़ अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी دامت برکاتہم العالیہ भी सादाते किराम से बड़ी मह़ब्बत और इन की ताज़ीम करते हैं, मुलाक़ात के वक़्त अगर बता दिया जाए कि येह सैयद साह़ब हैं तो अक्सर सैयद साह़ब का हाथ चूम लिया करते हैं, ऐसा भी देखा गया कि सैयद साह़ब को अपने बराबर में बिठा लिया, यहां तक कि आप सादाते किराम के बच्चों से भी बहुत मह़ब्बत और शफ़्क़त से पेश आते हैं।

प्यारी इस्लामी बहनो ! इन अह़ादीस व वाकि़आ़त से सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने और प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم से अपनी मह़ब्बत का इज़्हार करने के लिए हमें भी अपने दिल में एहले बैत की अ़क़ीदत व मह़ब्बत का चराग़ रौशन रखना चाहिए और हमा वक़्त एहले बैत की ख़ैर ख़्वाही के लिए कोशां रेहना चाहिए, लेहाज़ा सादाते किराम से मह़ब्बत करें, इन की ताज़ीम करें, इन के साथ ख़ैर ख़्वाही वाला सुलूक करें और दीगर लोगों पर इन्हें फ़ौक़ियत दें। आप के मह़ल्ले में अगर सादाते किराम के घर हैं तो वक़्तन फ़ वक़्तन इन्हें तह़ाइफ़ पेश करते रहें, बिल ख़ुसूस जो सादाते किराम माली एतेबार से कमज़ोर हैं उन का ख़ास ख़याल रखें। याद रखें ! सादाते किराम के साथ लेन देन का अन्दाज़ इस त़रह़ का न हो कि वोह ख़ुद को कमतर मेह़सूस करें। अपने घर पर होने वाली तक़रीबात में उन्हें ज़रूर मदऊ़ करें (दावत दें)। ख़ुशी व ग़मी के मौक़ेअ़ पर उन के यहां जाते रहें और ज़रूरत के वक़्त हर मुमकिन तआ़वुन करें।

ह़ज़रते उम्मे अ़तिय्या बिन्ते ह़ारिस رضی اللہ عنہا

मौलाना मुह़म्मद बिलाल सईद अ़त्तारी मदनी

ह़ज़रते उम्मे अ़तिय्या رضی اللہ تعالیٰ عنہا का शुमार जलीलुल क़द्र अन्सारी सह़ाबियात में होता है, आप का अस्ल नाम नुसैबा बिन्ते ह़ारिस है, लेकिन आप कुनियत से ज़्यादा मशहूर हैं।

इल्मी शान : आप رضی اللہ تعالیٰ عنہا आ़लिमा, फ़ाज़िला, और फ़क़ीहा थीं।[(1)] आप से 40 अह़ादीस मरवी हैं, जिन में से 6 मुत्तफ़क़ अ़लैह यानी इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम رضی اللہ تعالیٰ عنہما दोनों ने रिवायत की हैं और एक एक रिवायत दोनों ने अलग अलग ली है।[(2)] नीज़ सह़ाबा ए किराम और ताबेई़न की बड़ी जमाअ़त ने आप से रिवायात ली हैं।[(3)]

मह़ब्बते रसूल : आप को रसूले करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ाते बा बरकत से इस क़दर मह़ब्बत थी कि आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم का ज़िक्र करते वक़्त "या रसूलल्लाह ! मेरे वालिद आप पर क़ुरबान" जैसे कलेमात इस्तेमाल करतीं।[(4)]

हदियए रसूल : एक बार आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم ने उन को सदक़े की बकरी अ़ता फ़रमाई, ह़ज़रते उम्मे अ़तिय्या ने उस को क़बूल किया और उस में से कुछ ह़िस्सा ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा की ख़िदमत में पेश कर दिया, जब आक़ा ए करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم घर में तशरीफ़ लाए और पूछा : क्या तुम्हारे पास कुछ है तो सैयदा आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने अ़र्ज़ की : घर में और तो कुछ नहीं लेकिन उम्मे अ़तिय्या को आप ने जो बकरी दी थी उस का गोश्त उन्हों ने भेजा है, आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : सदक़ा तो उस के ह़क़दार तक पहुंच चुका। (और हमारे पास येह हदिया (तोह़फ़ा) है)[(5)]

सआ़दते उ़ज़्मा : आप رضی اللہ تعالیٰ عنہا को येह अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल है कि आप ने आक़ा ए काइनात صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم की सब से बड़ी शेहज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رضی اللہ تعالیٰ عنہا को ग़ुस्ले मैयत दिया और इस का त़रीक़ा ख़ुद आक़ा ए करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم ने आप को सिखाया। अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उम्मे अ़तिय्या ने इस ग़ुस्ल के त़रीक़े को इस त़रह़ वाज़ेह़ त़ौर पर बयान फ़रमाया है कि आप की बयान कर्दा रिवायात औ़रतों के ग़ुस्ल में अस्ल की ह़ैसियत रखती हैं। बल्कि ह़ज़रते इब्ने मुनज़िर رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का क़ौल है कि ग़ुस्ले मैयत के ह़वाले से ह़ज़रते उम्मे अ़तिया की बयान कर्दा रिवायात से बेहतर कोई रिवायत नहीं और इसी को उ़लमा ए किराम ने इख़्तियार फ़रमाया है।[(6)]

आप के मामूलात : ह़ज़रते उम्मे अ़तिय्या رضی اللہ تعالیٰ عنہا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم की मईयत (साथ) में सात (7) ग़ज़्वात में शिर्कत की, मैं मुजाहिदीन के पीछे रेहती, उन का खाना पकाती, ज़ख़्मियों की दवा वग़ैरा का एहतेमाम करती नीज़ बीमारों के लिए इन्तेज़ाम करती थी।[(7)]

---

(1) سیر اعلام النبلاء، 3/545، رقم:155 (2) تہذیب الاسماء واللغات، 2/364 (3) طبقات ابن سعد، 8/333- الاستیعاب، 4/502 (4) نسائی، ص70، حدیث: 388 (5) مسلم، ص419، حدیث:2490 (6) عمدۃ القاری، 6/53، تحت الحدیث: 1253 (7) مسلم، ص778، حدیث:4690-

शरई अह्काम की मन्नत का हुक्म

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक इस्लामी बहन बे पर्दगी करती थी, अजनबी मर्दों के सामने बाल, गला, कलाइयां वग़ैरा खुली रेहती थीं, उस ने मन्नत मानी कि अगर मेरा फ़ुलां काम हो गया तो मैं **अल्लाह** की रिज़ा के लिए शरई पर्दा करूंगी । उस का वोह काम भी हो चुका है, पूछना येह है कि क्या येह मन्नत शरई मन्नत है या नहीं ?

بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

औ़रत का बाल, कलाइयां, पिंडलियां, गला वग़ैरा अजनबी मर्दों से छुपाना लाज़िम है । इन आज़ा की बे पर्दगी करना नाजाइज़ व गुनाह है शरई मन्नत की शराइत़ (शर्त़ें) में से एक शर्त़ येह भी है कि जिस चीज़ की मन्नत मानी जाए वोह पेहले से ही शरीअ़त की त़रफ़ से लाज़िम न हो । यहां चूंकि औ़रत पर पर्दा करना पेहले से ही शरीअ़त की त़रफ़ से लाज़िम है, इस लिए येह मन्नत शरई मन्नत नहीं केहलाएगी, मगर पर्दे की पाबन्दी औ़रत पर बदस्तूर लाज़िम रहेगी ।

पर्दे के बारे में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का इरशादे पाक है : ﴿وَقَرۡنَ فِیۡ بُیُوۡتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجۡنَ تَبَرُّجَ الۡجَاهِلِیَّةِ الۡاُوۡلٰی﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घरों में ठेहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बे पर्दगी ।

(پ22، الاحزاب:33)

इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरे क़ुरआन, सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सैयद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : "अगली जाहिलियत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व मह़ासिन (हुस्न) का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पेहनती थीं, जिन से जिस्म के आज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें ।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 780)

बहारे शरीअ़त में है : "आज़ाद औ़रतों और ख़ुन्सा मुश्किल के लिए सारा बदन औ़रत है, सिवा मुंह की टिकली और हथेलियों और पाउं के तलवों के, सर के लटकते हुवे बाल और गर्दन और कलाइयां भी औ़रत हैं, इन का छुपाना भी फ़र्ज़ है ।" (बहारे शरीअ़त, 1/481)

मन्नत की शराइत़ बयान करते हुवे मिराक़ी अल फ़लाह़ में फ़रमाया : والثالث ان یکون لیس واجبا قبل نذرہ بایجاب الله تعالیٰ، کالصلوات الخمس والوتر- **तर्जमा :** तीसरी शर्त़ येह है कि मन्नत से पेहले वोह चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से लाज़िम न हो, जैसे पांचों नमाज़ें और वित्र । (مراقی الفلاح متن الطحطاوی، ص692)

बहारे शरीअ़त में है : शरई मन्नत जिस के मानने से शरअ़न इस का पूरा करना वाजिब होता है, इस के लिए मुत़लक़न चन्द शर्त़ें हैं : (1) ऐसी चीज़ की मन्नत हो कि उस की जिन्स से कोई वाजिब हो, लेहाज़ा इ़यादते मरीज़ और मस्जिद में जाने और जनाज़े के साथ जाने की मन्नत नहीं हो सकती । (2) वोह इ़बादत ख़ुद बिज़्ज़ात मक़्सूद हो किसी दूसरी इ़बादत के लिए वसीला न हो, लेहाज़ा वुज़ू व ग़ुस्ल व नज़्रे मुस्ह़फ़ की मन्नत सह़ीह़ नहीं । (3) उस चीज़ की मन्नत न हो जो शर्अ़ ने ख़ुद उस पर वाजिब की हो, ख़्वाह फ़िल ह़ाल या आइन्दा मसलन आज की ज़ोहर या किसी फ़र्ज़ नमाज़ की मन्नत सह़ीह़ नहीं कि येह चीज़ें तो ख़ुद ही वाजिब हैं । (4) जिस चीज़ की मन्नत मानी वोह ख़ुद बि ज़ातिही कोई गुनाह की बात न हो और अगर किसी और वज्ह से गुनाह हो तो मन्नत सह़ीह़ हो जाएगी, मसलन ईद के दिन रोज़ा रखना मन्अ़ है, अगर इस की मन्नत मानी तो मन्नत हो जाएगी अगर्चे हुक्म येह है कि उस दिन न रखे, बल्कि किसी दूसरे दिन रखे कि येह मुमानअ़त आ़रज़ी है यानी ईद के दिन होने की वज्ह से, ख़ुद रोज़ा एक जाइज़ चीज़ है । (5) ऐसी चीज़ की मन्नत न हो जिस का होना मुह़ाल (ना मुमकिन) हो, मसलन येह मन्नत मानी कि कल गुज़श्ता (Yesterday) मैं रोज़ा रखूंगा येह मन्नत सह़ीह़ नहीं । (बहारे शरीअ़त, 1/1015)

मोहर्रमुल हराम के चन्द अहम वाक़ेआत

यकुम मोहर्रमुल हराम यौमे उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़ीद मालूमात के लिए (अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब "फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म")	**5 मोहर्रमुल हराम उर्से बाबा फ़रीद** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद मालूमात के लिए (अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब "फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर")
10 मोहर्रमुल हराम वाक़िअए करबला मज़ीद मालूमात के लिए (अमीरे एहले सुन्नत का रिसाला "करामाते इमामे हुसैन")	**18 मोहर्रमुल हराम विसाले मुफ़्ती ए दावते इस्लामी** मज़ीद मालूमात के लिए (अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब "मुफ़्ती ए दावते इस्लामी")

मोहर्रमुल हराम 14 या 15 हिजरी जंगे क़ादिसिय्या

हज़रते सैयदना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मोहर्रमुल हराम 14 या 15 हिजरी में जंगे क़ादिसिय्या रूनुमा हुई, जिस में कमो बेश 10 हज़ार से ज़ाइद मुसलमानों ने तक़रीबन एक लाख 20 हज़ार कुफ़्फ़ार से 4 दिन तक मुक़ाबला किया, **अल्लाह** पाक ने मुसलमानों को अज़ीमुश्शान फ़त्हो नुस्रत अ़ता फ़रमाई।

(मज़ीद मालूमात के लिए देखिए : फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, 2/668 ता 676)

अल्लाह पाक की इन पर रेहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़ेरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुआ ए अत्तार पर
मदनी रसाइल के मुतालए की धूम

शैख़े तरीक़त, अमीरे एहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने शाबानुल मोअ़ज़्ज़म 1442 हिजरी में दर्जे ज़ैल तीन मदनी रसाइल पढ़ने / सुनने की तरग़ीब दिलाई और पढ़ने / सुनने वालों को अपनी पुर ख़ुलूस दुआओं से भी नवाज़ा :

1 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 16 सफ़्हात का रिसाला "दुरूद शरीफ़ की बरकतें" पढ़ या सुन ले उस से हमेशा के लिए राज़ी हो जा और उस को मदीनए पाक में दुरूदो सलाम पढ़ते हुवे जल्वए मेहबूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में आफ़ियत के साथ शहादत अ़ता फ़रमा, आमीन

2 या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 36 सफ़्हात का रिसाला "क़ब्र की पेहली रात" पढ़ या सुन ले नूरे मुस्तफ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सदक़े उस की क़ब्र रौशन फ़रमा, आमीन

3 या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 16 सफ़्हात का रिसाला "रिश्तेदारों से भलाई" पढ़ या सुन ले उस के सारे ख़ानदान को हज, मदीनए पाक की बा अदब हाज़री, जल्वए मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में शहादत और जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला अ़ता फ़रमा, आमीन

4 जानशीने अमीरे एहले सुन्नत हज़रते मौलाना उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने रिसाला "माहे रमज़ान और अमीरे एहले सुन्नत" पढ़ने / सुनने वालों को येह दुआ दी : या **अल्लाह** करीम ! जो कोई 27 सफ़्हात का रिसाला "माहे रमज़ान और अमीरे एहले सुन्नत" पढ़ या सुन ले उसे आ़शिक़े रमज़ानुल मुबारक अमीरे एहले सुन्नत के सदक़े रमज़ानुल मुबारक का हक़ीक़ी क़द्रदान बना कर फ़ैज़ाने रमज़ान से मालामाल फ़रमा और रमज़ानुल मुबारक को इस की बे हिसाब बख़्शिश का ज़रीआ़ बना। आमीन

रिसाला	पढ़ने / सुनने वाले इस्लामी भाई	इस्लामी बहनें	कुल तादाद
दुरूद शरीफ़ की बरकतें	25 लाख 33 हज़ार 828	8 लाख 48 हज़ार 534	33 लाख 82 हज़ार 362
क़ब्र की पेहली रात	22 लाख 87 हज़ार 35	8 लाख 49 हज़ार 467	31 लाख 36 हज़ार 502
रिश्तेदारों से भलाई	23 लाख 25 हज़ार 571	8 लाख 11 हजार 90	31 लाख 36 हज़ार 661
माहे रमज़ान और अमीरे एहले सुन्नत	20 लाख 70 हज़ार 146	8 लाख 11 हज़ार 814	28 लाख 81 हज़ार 960

मेहंगाई का इलाज

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

मैं बचपन से सुनता आ रहा हूं कि बहुत मेहंगाई हो गई है। मुझे याद पड़ता है कि मैं लड़कपन में बड़े जानवर का गोश्त एक या दो रुपिया सेर के ह़िसाब से लाता था। जबकि मछली, सबज़ियां और फल भी इसी ह़िसाब से सस्ते थे। आज कल ग़रीब से ग़रीब आदमी की तनख़्वाह भी दस बारह हज़ार से कम नहीं होगी जबकि मैं ने अपने दौरे त़ालिबे इल्मी में कुछ अ़र्सा एक पथारे पर आधा दिन आलू प्याज़ साफ़ करने और सब्ज़ी बेचने का काम किया है, मुझे आधे दिन की मज़दूरी चार आने (25 पैसे) मिलते थे। मेरे बड़े भाई मर्ह़ूम अ़ब्दुल ग़नी ने जब मुलाज़मत शुरूअ़ की तो इब्तेदा में इन की माहाना तनख़्वाह 75 रुपिये थी। **अल ग़रज़ उस दौर में तनख़्वाहें कम थीं और चीज़ें भी सस्ती थीं, अब चीज़ें मेहंगी हैं लेकिन तनख़्वाहें और आमदनियां भी बढ़ गई हैं।**

मेहंगाई का रोना रोने से बेहतर है कि इस का अ़मली इलाज करने की कोशिश की जाए मसलन कम आमदनी वाले शख़्स को चाहिए कि सिर्फ़ ज़रूरी अश्या की ख़रीदारी पर इक्तेफ़ा करे, **रोज़ रोज़ गोश्त और मुरग़्ग़न खानों के इस्तेमाल के बजाए सबज़ियां और दालें वग़ैरा खाने का भी मामूल बनाए** कि उ़मूमन इन की क़ीमत गोश्त के मुक़ाबले में कम होती है और येह सेह़त के लिए मुफ़ीद भी होती हैं। अपने आप को और बाल बच्चों को सादा ग़िज़ा और सादगी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का आ़दी बनाए इस से दीगर फ़वाइद के साथ साथ अस्पतालों के चक्कर लगाने और डॉक्टरों की फ़ीसों और दवाओं पर आने वाले ख़र्च से भी बचत होगी। **मेहंगे मोबाइल फ़ोन, लेपटोप और टेबलेट पी सी वग़ैरा के बजाए ह़स्बे ज़रूरत सादा मोबाइल फ़ोन से काम चला लिया जाए।** अगर खाने पीने की चीज़ों में से कोई चीज़ मेहंगी हो जाए तो उसे तर्क कर के दूसरी निस्बतन सस्ती चीज़ ख़रीद ले। इस इलाज से मुतअ़ल्लिक़ **2 ह़िकायात** बयान करता हूं : **1** एक मरतबा मक्कए मुकर्रमा में किशमिश (सुकी द्राक्ष) की क़ीमत बढ़ गई। लोगों ने शेरे ख़ुदा ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस की शिकायत की तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : तुम लोग किशमिश के बदले खजूर इस्तेमाल करो (क्यूंकि जब ऐसा करोगे तो मांग की कमी की वज्ह से) किशमिश की क़ीमत गिर जाएगी। (تاریخ ابن معین، ص168) **2** ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने कहा : गोश्त मेहंगा हो चुका है (क्या करना चाहिए ?) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : इसे सस्ता कर दो यानी इसे ख़रीदना छोड़ ही दो।
(रिसाला क़ुशैरिया, स. 22)

घरेलू अख़राजात कम करने का एक त़रीक़ा येह भी हो सकता है कि **इस्तेमाल की चीज़ों की ख़रीदारी के लिए जाने से क़ब्ल** (पेहले) **ज़रूरी अश्या की फ़ेहरिस्त बनाइए और इस का बग़ौर जाइज़ा लीजिए कि क्या वाक़ेई इन सब चीज़ों की ज़रूरत है और इन के बग़ैर गुज़ारा मुश्किल है ?**

अल्लाह करीम हमें अपने दर के इलावा किसी का मोह़ताज न फ़रमाए और हमें ब क़दरे किफ़ायत आसान रिज़्क़े ह़लाल अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़ति़य्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है